किशोर भारती

कक्षा आठवीं

जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड आफ स्कूल ऐजूकेशन

आमुख

प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक 'किशोर भारती' कक्षा आठवीं संग्रहीत साहित्यिक सामग्री को राष्ट्रीय पाठ्यपद्धति 2005 के अनुसार विकसित किया गया है प्रस्तुत पाठ्य–पुस्तक की रुपरेखा बच्चों को स्कूली जीवन के अतिरिक्त सामाजिक जीवन से भी जोड़ने पर बल देती है ताकि बच्चे के व्यक्तित्व का सामूहिक विकास हो सके।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी सामग्री एवम् शैक्षिक क्रियाओं का समावेश है जिनके द्वारा छात्रों में राष्ट्रीयता, देशभक्ति, जनतांत्रिकता, मानवता, धर्मनिर्पेक्षता, समाजवाद तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति चेतना एवं आस्था उत्पन्न हो तथा तर्कयुक्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।

प्रस्तुत शिक्षा नीति सुझाती है कि पाठ्य–सामग्री में हृदय तथा बुद्धि का समन्बय हो, बच्चों के चरित्र निर्माण में सहायक हो अर्थात् कुल मिलाकर बच्चों में स्वस्थ मनोवृत्ति की दृष्टि से प्रेरणादायक हो। पाठ्य सामग्री का चयन नई शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए पाठ्य सामग्री के चयन में केंद्रित शिक्षाक्रम से सम्बन्धित विषय सामग्री एवं जीवन मूल्यों पर विशेष बल हो, इस प्रकार का प्रयास प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य है।

वास्तव में जम्मू–कश्मीर बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न परीक्षाओं को आयोजित करने के साथ–साथ उच्च एवम् माध्यमिक शिक्षा के स्तर में सुधार लाना भी उसका दायित्व है उपरिलिखित सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर सब कुछ किया गया है। राष्ट्रीय प्रशिक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा परिवेश के अनुसार ढालने का प्रयत्न किया गया है। हमने अपने राज्य के बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर पुस्तक की पाठ्य–सामग्री का विकास किया है।

प्रस्तुत पुस्तक ''किशोर भारती'' (आठवीं कक्षा) के बनाने में हिन्दी समिति के सदस्यों के सहयोग के लिये मैं विशेष आभारी हूँ। प्रस्तुत पुस्तक में जिन लेखकों की रचनाएँ सम्मिलित की गई उनके अतुलनीय, अकथनीय तथा अवर्णनीय योगदान के प्रति हम विशेष रुप से अनुग्रहीत हैं जो इस पुस्तक के आधार भूत स्तम्भ हैं।

प्रस्तुत पुस्तक छात्रों में भाषाई तथा साहित्यिक रुचि विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी। सम्भव है कि पुस्तक छात्रों के हृदय में पड़े हुए साहित्यिक बीजों को अंकुरित एवम् प्रस्फुटित करने की क्रिया को सक्रिय करने में सहायक हो जिससे बच्चों में स्वाध्याय की रुचि विकसित हो। पुस्तक में त्रुट्टियों एवम् दोषों के सुधार हेतु विद्वज्जनों तथा भाषा विदों के सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

मैं सैक्रेटरी बोर्ड श्रीमती वीणा पंडिता, डायरैक्टर अकेडमिक्स कनीज़ फ़ातिमा और सी.डी.आर. विंग. के डॉ. यासिर हमीद सिरवाल के इस प्रशंसनीय योगदान की सराहना करता हूँ जिन्होने आठवीं की पुस्तक को नव–निर्मित करवाया।

प्रो0 ज़हूर अहमद चाट
चैयरमैन
जम्मू–कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

आभार

प्रस्तुत पुस्तक ''किशोर भारती'' (कक्षा आठवीं) को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम पद्धति–2005 के अनुसार विकसित एवं निर्मित करने के लिये सी.डी.आर. विंग द्वारा आयोजित प्रयोगशाला को सफल एवम् सार्थक बनाने के लिये प्रयोगशाला में आमंत्रित विद्वानों एवम् विशेषज्ञों का अनुपम योगदान रहा जिन्होने प्रयोगशाला में अपने अनुभवों तथा अनथक बौद्धिक प्रयासों द्वारा छात्रों की कक्षा के स्तरानुसार यथोचित पाठ्य सामग्री को नव निर्मित पुस्तक में सम्मिलित करते हुए प्रस्तुत पाठ्य–पुस्तक निर्माण के पवित्र कार्य को समपन्न किया। पुस्तक निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला को अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाने के लिये निम्नलिखित विद्वानों तथा सी.डी.आर. विंग. के सदस्यों का योगदान रहा वे इस प्रकार है :–

1. डॉ. संजीवनी वरिष्ठ प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल रिहाड़ी।
2. श्रीमति रजनी अबरोल वरिष्ठ प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल गांधी नगर।
3. श्री केवल कृष्ण शर्मा वरिष्ठ प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल ढ़क्कर अखनूर।
4. कुमारी रीटा चाड़क वरिष्ठ प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल मुबारक मंडी।
5. श्रीमती कांता शर्मा प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल बक्शी नगर।
6. श्रीमती लवली मास्टर गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल रणबीर।
7. श्री मिल्खी राम मास्टर गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल अखनूर।

विषय के मर्मज्ञ उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त सी.डी.आर. विंग. के जिन अधिकारियों का पाठ्यक्रम पद्धति को विकसित एवं निर्मित करने का प्रमुख योगदान रहा व है :–

डॉ0 यासिर हामिद सिरवाल – शैक्षिक पदाधिकारी

प्रस्तुत पुस्तक की निर्माण एवम् विकास प्रक्रिया के अतिरिक्त
पब्लिकैशन विंग0 के प्रति भी अनथक परिश्रम द्वारा पुस्तक निर्माताओं, विशेषज्ञों तथा सी0 डी0 आर0 विंग के अधिकारियों के इस प्रयास को सफल एवं सार्थक बनाया।

आठवीं कक्षा की पुस्तक के निर्माण हेतु जो पाठ्य–सामग्री का प्रयोग किया हैं उसके लिये जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजुकेशन राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का आभार प्रकट करता हैं।

कनीज़ फ़ातिमा
डायरेक्टर अकैडमिक्स

विशय सूची

आमुख

आभार

1	ध्वनि – कविता	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	6–8
2	लाख की चूड़ियाँ – कहानी	कामतानाथ	9–14
3	अपराजिता – विकंलाग जीवन	शिवानी	15–19
4	दीवानों की हस्ती – कविता	भगवती चरण वर्मा	20–21
5	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया – निबंध	अरविंद कुमार सिँह	22–29
6	भगवान के डाकिए – कविता	सामधारी सिँह दिनकर	30–32
7	प्लास्टिक जनित प्रदूषण – लेख	विभागीय	33–40
8	क्या निराश हुआ जाए – निबन्ध	हजारी प्रसाद द्विवेदी	41–49
9	कामचोर –कहानी	इस्मत चुगताई	50–58
10	जीवन नहीं मरा करता – कविता	गोपाल दास 'नीरज'	59–61
11	जब सिनेमा ने बोलना सीखा	प्रदीप तिवारी	62–67
12	जहाँ पहिया है – रिपोर्ताज	पी॰ साईनाथ अनु	68–75
13	अकबरी लोटा – कहानी	अन्नपूर्णानंद शर्मा	76–85
14	ओ नभ के मंडराते बादल – कविता	रामेश्वर शुक्ल अचंल	86–88
15	प्रेमचन्द – जीवनी	नागार्जून	89–98
16	बाज और साँप – कहानी	निर्मल वर्मा	99–103
17	टोपी – कहानी	संजय	104–114
18	सूरदास के पद – कविता	सूरदास	115–116
19	जम्मू–कश्मीर में हिन्दी – निबन्ध	विभागीय	117–121
20	सुदामा चरित – कविता	नरोत्तमदास	122–125
21	शब्दकोश		126–134

उपर्युक्त पाठों का चयन छात्रों का सर्वस्व विकास करने में अहम भूमिका अदा करें गे। साहित्य की कहानी, उपन्यास, निबंध, रिपोर्ताज, संस्मरण, लेख, नाटक आदि विधाओं का संकलन किया गया है। इन सभी विधाओं से छात्रों को परिचित करवाना, बौद्धिक विकास, रोचकता, सामाजिक,

राजनैतिक, धार्मिक सांस्कृतिक मूल्यों का यर्थाथबोध कराना भी इन पाठों का मूल उद्देश्य है। कविता के प्रति रूचि, कविता का अध्ययन व सृजन भी बच्चों में उपर्युक्त कवितओं के माध्यम से होता है। छायावादी कवि निराला, प्रगतिवादी कवि दिनकर और प्रयोगवादी कवि अंचल की कविताओं में युगीन बोध की समस्याओं और आधुनिकीकरण का उल्लेख भी हुआ मिलता है। अन्ततः वर्तमान मूल्यों, सहनशीलता, उदार वादिता, न्यायप्रियता, धार्मिक भावनाओं, समाज के प्रति संवेदना अन्य इत्यादि संस्कारों की प्रेरणा पाठ्य–पुस्तक में विविध पाठों के माध्यम से पूरक हो जाता है।

इस कार्य प्रणाली में सभी शिक्षक विदों का सुझाव व चयन प्रक्रिया में सराहनीय योगदान रहा है।

शिक्षक से

चयन करते हुए विषयों के साथ विधाओं का स्तबक बनाने का प्रयास किया गया है। इस गुलदस्ते में यदि एक विषय निबंध की विधा करने वाली कविता के चयन का प्रयास भी किया गया है। विविध भाषा–परिवेशों से विद्यार्थी को परिचित कराना भाषा–शिक्षण की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। पुस्तक में इसकी पूर्ति का प्रयास किया गया है। पाठ – केंद्रित प्रश्नों के साथ आसपास के ज्ञान–क्षेत्रों और शब्दों को भी शामिल किया गया है।

पाठ्यपुस्तक के बीस पाठों में विधि विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। प्रथम पाठ निराला की कविता 'ध्वनि' का संपादित अंश है, इस कविता में प्रकृति के प्रति मानवीय संवेदना को व्यक्त किया है। कहानियों में कामतानाथ की कहानी लाख की चूड़ियाँ'' शहरीकरण और औद्योगिक विकास से ग्रामोद्योगिक के उजड़ने की पीड़ा को चित्रित करती है। यह कहानी नाते–नेह में रचे बसे गाँवों के सहज संबंधों में बिखराव और सांस्कृतिक ह्रास के आर्थिक कारणों को स्पष्ट करती है। अपराजिता'' विकलांग–जीवन से सम्बंधित एक लड़की की कहानी है जो बच्चों में प्रेरणा–स्त्रोत का सुदृढ़ स्तंभ का काम करेगी उनमें से नाकारात्मक सोच को समाप्त करेगी, के प्रति एक साकारात्मक दृष्टिकोण के प्रति प्रेरित कर उनमें उत्साह का संचार करेगी। दीवानों की हस्ती में उत्साह और अलमस्ती दी गई है 'चिट्ठियों की अनूठी' दुनिया में संवाद माध्यमों की विकास यात्रा का रोचक विवरण है। दिनकर की कविता 'भगवान के डाकिए' में कवि ने बादल और पक्षियों को डाकिए कहा है इसमें प्रतीकात्मकता प्लास्टिक जनित प्रदूषण का संदेश लेख में दिया है। प्लास्टिक के कारण हमारे वातावरण में बढ़ते

प्रदूषण से अवगत करवाया है। इसका प्रयोग अनेक बिमारियों का कारण है। इसकें दुष्प्रभाव से बचने के लिए प्रेरित किया है। 'क्या निराश हुआ जाए' – विभिन्न दुर्व्यवस्थाओं और चारित्रिक मूल्यों की गिरावट के बीच साकारात्मक तथ्यों को रेखांकित करता है। 'कामचोर' एक पारिवारिक समस्या को आधार बनाकर लिखी गई है जिसमें ऊधम मचानेवाले बच्चों से होने वाली परेशानी की रोचक प्रस्तुति है। यह कहानी एक सुव्यवस्थित परिवार की माँग पैदा करती है। ''जीवन नहीं मरा करता है' कविता में बच्चों को कभी न हारने की प्रेरणा दी गई है और हर परिस्थिति में उत्साहित रहने के लए प्रेरित किया है।

जब सिनेमा ने बोलना सीखा में भारतीय सिनेमा के इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव को उजागर किया गया है। यह निबंध मूक सिनेमा के सवाक् सिनेमा में विकसित होने की कहानी बयान करता है जो शिक्षा की नजर से भी अर्थवान है। प्रसिद्ध पत्रकार पी. साईनाथ की अंग्रेजी से अनूदित पर जहाँ पहिया है में स्त्री – सशक्तिकरण का एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। अन्नपूर्णानंद की कहानी अकबरी लोटा हास्य–व्यंग्य से भरी हुई अत्यंत रोचक कहानी है। ''ओ नभ के मंडराते बादल'' नामक कविता बच्चों में स्वाभाविक उल्लास का संचार करने में सक्षम है। यथा वर्षा में बच्चे खूब मस्ती करते हैं। इसिलए यह कविता उनके स्वभाव के अनुरूप होते हुए आकर्षण का केन्द्र रहेगी और वे बादलों के निर्माण और बरसने के ज्ञान से भी अवगत होंगें। प्रेमचन्द नागार्जुन द्वारा रचित जीवनी प्रेमचन्द के जीवन को उभारा गया है कि किस तरह मनुष्य अगर चाहे तो अपने जीवन में चारो तरफ से अभाव में ग्रस्त होने पर भी अपना धैर्य नहीं छोड़ता और अपने आत्मबल से सब कुछ पा लेता है। निर्मल वर्मा की कहानी बाज और साँप एक बोध कथा है।

सृंजय की कहानी टोपी लोक कथा का पुनर्सृजन है। इस कहानी में गहरा सामाजिक सरोकार है। यह सत्ता से जनता के संबंधों की समीक्षा करती है। सूरदास के पद में सूर के पदों में वात्सल्य, सुदामा चरित में मित्रता, आदि है। जम्मू–कश्मीर में हिंदी इस पाठ के अन्तर्गत हिंदी के क्रामिक विकास के इतिहास को उभारा गया है।

1

ध्वनि

अभी न होगा मेरा अंत
अभी–अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत–
अभी न होगा मेरा अंत।

हरे–हरे ये पात,
डालिया!, कलिया!, कोमल गात।
मैं ही अपना स्वप्न–मृदुल–कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर।

पुष्प–पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,

द्वार दिखा दूंगा फिर उनको।
हैं मेरे वे जहाँ अनंत–
अभी न होगा मेरा अंत।

–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा?
2. फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन–कौन–सा प्रयास करता है?
3. कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है?

कविता से आगे

1. वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है? आपस में चर्चा कीजिए।
2. वसंत ऋतु में आनेवाले त्योहारों के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए और किसी एक त्योहार पर निबंध लिखिए।
3. ऋतु परिवर्तन का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है" –इस कथन की पुष्टि आप किन–किन बातों से कर सकते हैं?लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़कर बताइए कि इनमें किस ऋतु का वर्णन है?
   फूटे हैं आमों में बौर
   भौंर वन–वन टूटे हैं।
   होली मची ठौर–ठौर
   सभी बंधन छूटे हैं।
2. स्वप्न भरे कोमल–कोमल हाथों को अलसाई कलियों पर फेरते हुए कवि कलियों को प्रभात के आने का संदेश देता है, उन्हें जगाना चाहता है और खुशी–खुशी अपने जीवन के अमृत से उन्हें सींचकर हरा–भरा करना चाहता है। फूलों–पौधों के लिए आप क्या–क्या करना चाहेंगे?
3. कवि अपनी कविता में एक कल्पनाशील कार्य की बात बता रहा है। अनुमान कीजिए और लिखिए कि उसके बताए कार्यो का अन्य किन–किन संदर्भो से संबंध जुड़ सकता है ? जैसे –नन्हे–मुन्ने बालक को माँ जगा रही हो...।

भाषा की बात

1. 'हरे–हरे', 'पुष्प–पुष्प' में एक शब्द की एक ही अर्थ में पुनरावृति हुई है। कविता के 'हरे–हरे ये पात' वाक्यांश में 'हरे–हरे' शब्द युग्म पत्तों के लिए विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यहाँ 'पात' शब्द बहुवचन में प्रयुक्त है। ऐसा प्रयोग भी होता है जब कर्ता या विशेष्य एक वचन में हो और कर्म या क्रिया या विशेषण बहुवचन में जैसे–वह लंबी–चौड़ी बातें करने लगा। कविता में एक ही शब्द का एक से अधिक अर्थो में भी प्रयोग होता "तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती है।" जो तीन बार खाती थी वह

तीन बेर खाने लगी है। एक शब्द 'बेर' का दो अर्थों में प्रयोग करने से वाक्य में चमत्कार आ गया। इसे यमक अलंकार कहा जाता है। कभी–कभी उच्चारण की समानता से शब्दों की पुनरावृति का आभास होता है जबकि दोनों दो प्रकार के शब्द होते हैं जैसे–मन का/मनका।
ऐसे वाक्यों को एकत्रा कीजिए जिनमें एक ही शब्द की पुनरावृनि हो। ऐसे प्रयोगों को मयान से देखिए और निम्नलिखित पुनरावृत शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–बातों–बातों में, रह–रहकर, लाल–लाल, सुबह–सुबह, रातों–रात, घड़ी–घड़ी।

2. 'कोमल गात, मृदुल वसंत, हरे–हरे ये पात'

विशेषण जिस संज्ञा (या सर्वनाम) की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। उपर दिए गए वाक्यांशों में गात, वसंत और पात शब्द विशेष्य हैं, क्योंकि इनकी विशेषता (विशेषण) क्रमशः कोमल, मृदुल और हरे–हरे शब्दों से ज्ञात हो रही है।
हिंदी विशेषणों के सामान्यतया चार प्रकार माने गए हैं–गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण और सार्वनामिक विशेषण।

कुछ करने को

1. वसंत पर अनेक सुंदर कविताए! हैं। कुछ कविताओं का संकलन तैयार कीजिए।
2. शब्दकोश में 'वसंत' शब्द का अर्थ देखिए। शब्दकोश में शब्दों के अर्थो के अतिरिक्त बहुत–सी अलग तरह की जानकारिया! भी मिल सकती हैं। उन्हें अपनी कॉपी में लिखिए।

शब्दार्थ

मृदुल	–	कोमल
पात	–	पत्ता
गात	–	शरीर
निद्रित	–	सोया हुआ
प्रत्यूष	–	प्रातःकाल
तंद्रालस	–	नींद से अलसाया हुआ
लालसा	–	कुछ पाने की चाह, अभिलाषा, ईच्छा
स्वप्न	–	सपना
मनोहर	–	मन को हरने वाला, सुंदर
सहर्ष	–	प्रसन्नता के साथ

लाख की चूड़ियाँ

सारे गाँव में बदलू मुझे सबसे अच्छा आदमी लगता था क्योंकि वह मुझे सुंदर–सुंदर लाख की गोलियाँ बनाकर देता था। मुझे अपने मामा के गाँव जाने का सबसे बड़ा चाव यही था कि जब मैं वहाँ से लौटता था तो मेरे पास ढेर सारी गोलियाँ होतीं, रंग–बिरंगी गोलिया! जो किसी भी बच्चे का मन मोह लें।

वैसे तो मेरे मामा के गाँव का होने के कारण मुझे बदलू को 'बदलू मामा' कहना चाहिए था परंतु मैं उसे 'बदलू मामा' न कहकर बदलू काका कहा करता था जैसा कि गाँव के सभी बच्चे उसे कहा करते थे। बदलू का मकान कुछ उँचे पर बना था। मकान के सामने बड़ा–सा सहन था जिसमें एक पुराना नीम का वृक्ष लगा था। उसी के नीचे बैठकर बदलू अपना काम किया करता था। बगल में भटटी दहकती रहती जिसमें वह लाख पिघलाया करता। सामने एक लकड़ी की चौखट पड़ी रहती जिस पर लाख के मुलायम होने पर वह उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता। पास में चार–छह विभिन्न आकार की बेलननुमा मुँगेरिया! रखी रहतीं जो आगे से कुछ पतली और पीछे से मोटी होतीं। लाख की चूड़ी का आकार देकर वह उन्हें मुँगेरियों पर चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता और तब एक–एक कर पूरे हाथ की चूड़ियाँ बना चुकने के पश्चात वह उन पर रंग करता।

पुरानी थी। बगल में ही उसका हुक्का रखा रहता जिसे वह बीच–बीच में पीता रहता। गाँव में मेरा दोपहर का समय अधिकतर बदलू के पास बीतता। वह मुझे 'लला' कहा करता और मेरे पहुँचते ही मेरे लिए तुरंत एक मचिया मँगा देता। मैं घंटों बैठे–बैठे उसे इस प्रकार चूड़िया! बनाते देखता रहता। लगभग रोज ही वह चार–छह जोड़े चूड़िया! बनाता। पूरा जोड़ा बना लेने पर वह उसे बेलन पर चढ़ाकर कुछ क्षण चुपचाप देखता रहता मानो वह बेलन न होकर किसी नव–वधु की कलाई हो।

बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था। उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत

थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस–पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था। उसका अभी तक वस्तु–विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। बदलू स्वभाव से बहुत सीधा

था। मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा। हा!, शादी–विवाह के अवसरों पर वह अवश्य ज़िद पकड़ जाता था। जीवन भर चाहे कोई उससे मुफत चूड़िया! ले जाए परंतु विवाह के अवसर पर वह सारी कसर निकाल लेता था। आखिर सुहाग के जोड़े का महन्व ही और होता है। मुझे याद है, मेरे मामा के यहाँ किसी लड़की के विवाह पर जरा–सी किसी बात पर बिगड़ गया था और फिर उसको मनाने में लोहे लग गए थे। विवाह में इसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को सारे वस्त्रा मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी मिलती और रुपये जो मिलते सो अलग।

यदि संसार में बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो वह थी काँच की चूड़ियों से। यदि किसी भी स्त्री के हाथों में उसे काँच की चूड़ियाँ दिख जातीं तो वह अंदर–ही–अंदर वुफढ़ उठता और कभी–कभी तो दो–चार बातें भी सुना देता।

मुझसे तो वह घंटों बातें किया करता। कभी मेरी पढ़ाई के बारे में पूछता, कभी मेरे घर के बारे में और कभी यों ही शहर के जीवन के बारे में। मैं उससे कहता कि शहर में सब काँच की चूड़ियाँ पहनते हैं तो वह उतर देता, शहर की बात और है, लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है। वहाँ तो औरतें अपने मरद का हाथ पकड़कर सड़कों पर घूमती भी हैं और फिर उनकी कलाइयाँ नाजुंक होती हैं न लाख की चूड़िया! पहनें तो मोच न आ जाए।

कभी–कभी बदलू मेरी अच्छी खासी खातिर भी करता। जिन दिनों उसकी गाय के दूमा होता वह सदा मेरे लिए मलाई बचाकर रखता और आम की फसल में तो मैं रोजं ही उसके यहाँ से दो–चार आम खा आता। परंतु इन सब बातों के अतिरिक्त जिस कारण वह मुझे अच्छा लगता वह यह था कि लगभग रोज ही वह मेरे लिए एक–दो गोलियाँ बना देता।

मैं बहुधा हर गर्मी की छुटी में अपने मामा के यहाँ चला जाता और एक–आधा महीने वहाँ रहकर स्कूल खुलने के समय तक वापस आ जाता। परंतु दो–तीन बार ही मैं अपने मामा के यहाँ गया होउँगा तभी मेरे पिता की एक दूर के शहर में बदली हो गई और एक लंबी अवधि तक मैं अपने मामा के गाँव न जा सका। तब लगभग आठ–दस वर्षो के बाद जब मैं वहाँ गया तो इतना बड़ा हो चुका था कि लाख की गोलियों में मेरी रुचि नहीं रह गई थी। अतः गाँव में होते हुए भी कई दिनों तक मुझे बदलू का मयान न आया। इस बीच मैंने देखा कि गाँव में लगभग सभी स्त्रीयाँ काँच की चूड़ियाँ पहने हैं। विरले ही हाथों में मैंने लाख की चूड़ियाँ देखीं। तब एक दिन सहसा मुझे बदलू का मयान हो आया। बात यह हुई कि बरसात में मेरे मामा की छोटी लड़की आँगन में फिसलकर गिर पड़ी और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई और उससे खून बहने लगा। मेरे मामा उस समय घर पर न थे। मुझे ही उसकी मरहम–पटी करनी पड़ी। तभी सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया और मैंने सोचा कि उससे मिल आउँ। अतः शाम को मैं घूमते–घूमते उसके घर चला गया। बदलू वहीं चबूतरे पर नीम के नीचे एक खाट पर लेटा था।

नमस्ते बदलू काका मैंने कहा।

नमस्ते भइयाँ उसने मेरी नमस्ते का उतर दिया और उठकर खाट पर बैठ गया। परंतु उसने मुझे पहचाना नहीं और देर तक मेरी ओर निहारता रहा।

मैं हूँ जनार्दन, काका आपके पास से गोलियाँ बनवाकर ले जाता था। मैंने अपना परिचय दिया।

बदलू फिर भी चुप रहा। मानो वह अपने स्मृति पटल पर अतीत के चित्र उतार रहा हो और तब वह एकदम बोल पड़ा, आओ–आओ, लला बैठो! बहुत दिन बाद गाँव आए।

हाँ, इमार आना नहीं हो सका, काका! मैंने चारपाई पर बैठते हुए उतर दिया।

कुछ देर फिर शांति रही। मैंने इधर–इधर दृष्टि दौड़ाई। न तो मुझे उसकी मचिया ही नज़र आई, न ही भट्ठी।

आजकल काम नहीं करते काका?मैंने पूछा।

नहीं लला, काम तो कई साल से बंद है। मेरी बनाई हुई चूड़ियाँ कोई पूछे तब तो। गाँव–गाँव में काँच का प्रचार हो गया है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, मशीन युग है न यह, लला! आजकल सब काम मशीन से होता है। खेत भी मशीन से जोते जाते हैं और फिर जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है, लाख में कहा! संभव है? लेकिन काँच बड़ा खतरनाक होता है। बड़ी जल्दी टूट जाता है।

मैंने कहा। नाजुंक तो फिर होता ही है लला! कहते–कहते उसे खाँसी आ गई और वह देर तक खाँसता रहा। मुझे लगा उसे दमा है। अवस्था के साथ–साथ उसका शरीर ढल चुका था। उसके हाथों पर और माथे पर नसें उभर आई थीं।

जाने कैसे उसने मेरी शंका भाँप ली और बोला, दमा नहीं है मुझे। फसली खाँसी है। यही महीने–दो–महीने से आ रही है। दस–पंद्रह दिन में ठीक हो जाएगी।

मैं चुप रहा। मुझे लगा उसके अंदर कोई बहुत बड़ी व्यथा छिपी है। मैं देर तक सोचता रहा कि इस मशीन युग ने कितने हाथ काट दिए हैं। कुछ देर फिर शांति रही जो मुझे अच्छी नहीं लगी।

आम की फसल अब कैसी है, काका ? कुछ देर पश्चात मैंने बात का विषय बदलते हुए पूछा।

अच्छी है लला, बहुत अच्छी है, उसने लहककर उतर दिया और अंदर अपनी बेटी को आवाजं दी, अरी रज्जो, लला के लिए आम तो ले आ। फिर मेरी ओर मुखातिब होकर बोला, माफ करना लला, तुम्हें आम खिलाना भूल गया था।

नहीं, नहीं काका आम तो इस साल बहुत खाए हैं।

वाह–वाह, बिना आम खिलाए कैसे जाने दुँगा तुमको?

मैं चुप हो गया। मुझे वे दिन याद हो आए जब वह मेरे लिए मलाई बचाकर रखता था।

गाय तो अच्छी है न काका?मैंने पूछा।

गाय कहा! है, लला! दो साल हुए बेच दी। कहाँ से खिलाता?

इतने में रज्जो, उसकी बेटी, अंदर से एक डलिया में ढेर से आम ले आई।

यह तो बहुत हैं काका! इतने कहाँ खा पाउँगा?मैंने कहा।

वाह–वाह! वह हँस पड़ा, शहरी ठहरे न! मैं तुम्हारी उमर का था तो इसके चौगुने आम एक बखत में खा जाता था।

आप लोगों की बात और है। मैंने उतर दिया।

अच्छा, बेटी, लला को चार–पाँच आम छाँटकर दो। सदूरी वाले देना। देखो लला वैसे हैं?इसी

साल यह पेड़ तैयार हुआ है।

रज्जो ने चार–पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा दिए। आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए उसके हाथों पर ठिठकगई। गोरी–गोरी कलाइयों पर लाख की चूड़िया! बहुत ही फब रही थीं।

बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली और बोल पड़ा, यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर। दस आने पैसे मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा, शहर से ले आओ।

मैंने आम ले लिए और खाकर थोड़ी देर पश्चात चला आया। मुझे प्रसन्नता हुई कि बदलू ने हारकर भी हार नहीं मानी थी। उसका व्यक्तित्व काँच की चूड़ियों जैसा न था कि आसानी से टूट जाए।

–कामतानाथ

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू काबदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?
2. वस्तु–विनिमय क्या है?विनिमय की प्रचलित पदधति क्या है?
3. 'मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं। –इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?
4. बदलू के मन में ऐसी कौन–सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी।
5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

क्हानी से आगे

1. आपने मेले–बाजांर आदि में हाथ से बनी चीजों को बिकते देखा होगा। आपके मन में किसी चीजं को बनाने की कला सीखने की इच्छा हुई हो और आपने कोई कारीगरी सीखने का प्रयास किया हो तो उसके विषय में लिखिए।
2. लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के किन–किन राज्यों में होता है?लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त क्या–क्या चीजें बनती हैं?ज्ञात कीजिए।

अनुमान और कल्पना

1. घर में मेहमान के आने पर आप उसका अतिथि–सत्कार कैसे करेंगे?
2. आपको छुट्टियों में किसके घर जाना सबसे अच्छा लगता है ? वहाँ की दिनचर्या अलग कैसे होती है ? लिखिए।
3. मशीनी युग में अनेक परिवर्तन आए दिन होते रहते हैं। आप अपने आस–पास से इस प्रकार के किसी परिवर्तन का उदाहरण चुनिए और उसके बारे में लिखिए।
4. बाज़ार में बिकने वाले सामानों की डिज़ाइनों में हमेशा परिवर्तन होता रहता है। आप इन परिवर्तनों को किस प्रकार देखते हैं?आपस में चर्चा कीजिए।
5. हमारे खान–पान, रहन–सहन और कपड़ों में भी बदलाव आ रहा है। इस बदलाव के पक्ष–विपक्ष में बातचीत कीजिए और बातचीत के आधार पर लेख तैयार कीजिए।

भाषा की बात

1. 'बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो काँच की चूड़ियों से' और बदलू स्वयं कहता है–"जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है लाख में कहाँ संभव है? " ये पंक्तियाँ बदलू की दो प्रकार की मनोदशाओं को सामने लाती हैं। दूसरी पंक्ति में उसके मन की पीड़ा है। उसमें व्यंग्य भी है। हारे हुए मन से, या दुखी मन से अथवा व्यंग्य में बोले गए वाक्यों के अर्थ सामान्य नहीं होते। कुछ व्यंग्य वाक्यों को ध्यानपूर्वक समझकर एकत्र कीजिए और उनके भीतरी अर्थ की व्याख्या करके लिखिए।

2. **'बदलू'** कहानी की दृष्टि से **पात्रा** है और भाषा की बात (व्याकरण) की दृष्टि से **संज्ञा** है। किसी भी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, विचार अथवा भाव को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा को तीन भेदों में बाँटा गया है **(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा**, जैसे–लला, रज्जो, आम, काँच, गाय इत्यादि **(ख) जातिवाचक संज्ञा**, जैसे–चरित्रा, स्वभाव, वजन, आकार आदि द्वारा जानी जाने वाली संज्ञा। **(ग) भाववाचक संज्ञा**, जैसे–सुंदरता, नाजुक, प्रसन्नता इत्यादि जिसमें कोई व्यक्ति नहीं है और न आकार या वजन। परंतु उसका अनुभव होता है। पाठ से तीना प्रकार की संज्ञाएँ चुनकर लिखिए।

शब्दार्थ

चव – चाह, रुचि, तीव्र इच्छा
स्लाख – सलाई, धातु की छड़
मुगरी – गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोकने –पीटने के काम आती है
पैतृक – पूर्वजों का, पिता से प्राप्त या पुश्तैनी
खपत – माल की विक्री
व्सतु – पैसों से न खरीदकर एक
ध्वनिमय – वस्तु के बदल दूसरी वस्तु लेना
कसर – घाटा पूरा करना, कमी
नाजुक – कोमल
मनिहार – चूड़ी बनाने वाला
सहन – आँगन
स्मृति–पटल – याददाश्त, याद की तख्ती,
पगड़ी – सिर पर लपेट कर बा़धा जाने वाला लंबा कपड़ा, पाग
मरहम–पट्टी– जख्म का इलाज, घाव पर दवा लगाकर पट्टी बांधना
मचिया – बैठने के उपयोग में आने वाली सुतली आदि से बुनी छोटी/चौकोर खाट
मुखातिब – देखकर बात करना
डलिया – बांस का बना एक छोटा पात्र
पुबना – सजना, शोभा देना

3 अपराजिता

कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नही किया। फिर भी हमसे कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता को कोसकर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बंगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वारा खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक ह्वील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती—ठीक जैसे कोई मशीन वटन खटखटाती अपना काम किए चल जा रही हो।

धीरे—धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते—भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल बड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ—साथ धीरे—धीरे मानसिक संतुलन भी खो बैठा। पहले दुःख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूरमंज़िल की शरण की है। केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्दिीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल—प्रतिक्षण भरपूर जीने की उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी—कैसी महत्तवकांक्षाएँ।

''मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्चूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलाजी से संबधित कुछ सामग्री मिल सकेगी?''

''मैडम आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फ़ैलोशिप मिल सकती है?''

यहाँ कभी सामान्य—सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाशं ही सिर पर टूट पड़ा है और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी—बोटी फड़क रही है। ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी प्रतिभा निरंतर डूबती जा रही है। आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन से नीचे का पूरा शरीर पोलियों ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डाक्टरेट ली होगी।

''मैडम, मै चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य–सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अव स्वंय निबटा लेती हूँ।''

उसने मुझे तस्वीरें दिखाई। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थीं कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही समाग्री मेज़ पर उतार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाने के ही विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाए तो यह डाक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए डॉ. चंद्रा और उनकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती टी. सुब्रहमम्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ–साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ। 1976 में, जब चंद्रा को डाक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में। अपंग स्त्री–पुरुषों में, इस विषय में डाक्टरेट पाने वाली डॉ. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं।

जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े–से–बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा, ''आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवन भर केवल गदरन ही हिला पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।'' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कंठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, ''मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस तजीवन से तो मौत भली है। मैं निरन्तर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर–उधर देख–भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।

एक वर्ष तक कश्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपर धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठे गई थी। बेंगलूर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कांवेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा, ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास रूम में घुमाता फिरेगा?''

''आप चिन्ता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा वे स्वयं कराती। वे पीरियड दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी–एस.सी. किया, प्राणिशास्त्र में, एम–एस.सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बेंगलूर के प्रख्यात इंस्ट्टियूट ऑफ साँइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफ़ेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता–पिता ने पेंसिलवानियां से व्हील चेयर मँगवा दी जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह–बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध–क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था। क्षत–विक्षत शरीर में घावों के असंख्य किन्तु आभामंडित भव्य मुद्रा।

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें?''

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने ही उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसने अपने कढ़ाई–बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता–पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपवने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुसकराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ. चंद्रा।

''मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज़ के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य–चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।'' किन्तु डॉ. चंद्रा के प्रोफसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान् योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान न पाया।''

चंदा के अलबम के अंतिम पृष्ठ में है उसकी जननी का बड़ा–सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बेंगलूर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं–'वीर जननी' का पुरस्कार। बहुत बड़ी–बड़ी उदास आँखें, जिनमें स्वंय माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया–लगी कुर्सी के पीछे चक्र–सी घूमती जननी की व्यथा, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगें, अधरों पर विज़य का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्‌भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्‌वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्‌वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्‌वार खोल भी देता है।''

–शिवानी

प्रश्न–अभ्यास

बोध और विचार

1. अपराजिता शब्द का निम्नांकित में से कौन–सा अर्थ है?
   क. जो विकलांग हो
   ख. जिसने हार न मानी हो
   ग. जो आपस का न हो
   घ. जो दूसरों से भिन्न हो
2. डॉ. चंद्रा को पहली बार देखकर लेखिका के मन में क्या–क्या भाव उठे?
3. लेखिका ने डॉ. चंद्रा को सामान्य जनों से किन बातों में भिन्न पाया?
4. अपंग चंद्रा को डॉ. चंद्रा बनाने में उसकी माता का क्या योगदान है?
5. लखनऊ के युवक को डॉ. चंद्रा से क्या प्रेरणाएँ लेनी चाहिए?
6. राणा साँगा कौन थे?लेखिका को बरबस उनका स्मरण क्यों हो आया?
7. चिकित्सा ने जो खोया, वह विज्ञान ने कैसे पाया?
8. वीर जननी का पुरस्कार किसको मिला?क्यों मिला?
9. पाठ के आधार पर निम्नांकित वाक्य का स्पष्टीकरण करें:–

''ईश्वर सब द्वार का साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है तो दूसरा द्वार खोल देता है।''

भाषा–अध्ययन

1. ''अपराजिता'' शब्द की निम्नांकित में से कौन–सी व्युत्पत्ति सही है?
   क. अपरा+जिता ग. अ+पराजित+आ
   ख. अ+पर+अ+जित+आ घ. अपर+अजिता
2. डॉ. चंद्रा के लिए प्रयुक्त विशेषणों का चयन करें।
3. चुने गए विशेषणों की सहायता से डॉ. चंद्रा का शब्दचित्र अंकित करें।

योग्यता–विस्तार

1. उद्यमी और पुरुषार्थी विकलांगों की जीवनियाँ पत्र–पत्रिकाओं में प्रायः छपती रहती हैं, उनका संकलन करके ''विकलांग विशेषांक'' निकालें।
2. विकलांगों के लिए आयोजित समाराहों को दूरदर्शन–कार्यक्रम में देखें।
3. विकलांगों की समस्याओं पर कक्षा में चर्चा करें।

4 दीवानों की हस्ती

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।
आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?
किस ओर चले? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,

दो बात कही, दो बात सुनी;
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छककर सुख–दुखके घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

हम भिखमंगों की दुनिया में,
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निसानी–सी उर पर,
ले असफलता का भार चले।
अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

– भगवतीचरण वर्मा

कविता से

1. कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?
2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हंदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है?क्या वह निराश है या प्रसन्न है?
3. कविता में ऐसी कौन–सी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?

कविता से आगे

– जीवन में मस्ती होनी चाहिए, लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है? सहपाठियों के बीच चर्चा कीजिए।

प्रश्न-अभ्यास

अनुमान और कल्पना

एक पंक्ति में कवि ने यह कहकर अपने अस्तित्व को नकारा है कि हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले। " दूसरी पंक्ति में उसने यह कहकर अपने अस्तित्व को महत्व दिया है कि मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहा! चले। " यह फाकामस्ती का उदाहरण है। अभाव में भी खुश रहना फाकामस्ती कही जाती है। कविता में इस प्रकार की अन्य पंक्तियाँ भी हैं उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कविता में परस्पर विरोधी बातें क्यों की गई हैं?

भाषा की बात

संतुष्टि के लिए कवि ने 'छककर' 'जी भरकर' और 'खुलकर' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव को व्यक्त करनेवाले कुछ और शब्द सोचकर लिखिए, जैस–हँसकर, गाकर।

शब्दार्थ

हस्ती	–	अस्तित्व
टालम	–	दुनिया, माहौल
स्वच्छंद	–	अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला

5

चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

पत्रों की दुनिया भी अजीबो–गरीब है और उसकी उपयोगिता हमेशा से बनी रही है। पत्र जो काम कर सकते हैं, वह संचार का आधुनिकतम सामान नहीं कर सकता है। पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश कहाँ दे सकता है। पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नयी घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। दुनिया का तमाम साहित्य पत्रों पर केंद्रित है और मानव सभ्यता के विकास में इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभाई है। पत्रों का भाव सब जगह एक–सा है, भले ही उसका नाम अलग–अलग हो। पत्र को उर्दू में खत, संस्कृत में पत्र, कन्नड़ में कागद, तेलुगु में उनरम्, जाबू और लेख तथा तमिल में कडिद कहा जाता है। पत्र यादों को सहेजकर रखते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। हर एक की अपनी पत्र लेखन कला है और हर एक के पत्रों का अपना दायरा। दुनिया भर में रोज़ करोड़ों पत्र एक दूसरे को तलाशते तमाम

ठिकानों तक पहुँचते हैं। भारत में ही रोज़ साढ़े चार करोड़ चिठियाँ डाक में डाली जाती हैं जो साबित करती हैं कि पत्र कितनी अहमियत रखते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1953 में सही ही कहा था कि हज़ारों सालों तक संचार का सामान केवल हरकारे रनर्स या फिर तेज़ घोड़े रहे हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया। तार ने रेलों से भी तेज़ गति से संवाद पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। अब टेलीफोन, वायरलैस और आगे रेडार–दुनिया बदल रहा है। पिछली शताब्दी में पत्र लेखन ने एक कला का रूप ले लिया। डाक व्यवस्था के सुधार के साथ पत्रों को सही दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए। पत्र

संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय भी शामिल किया गया। भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में ये प्रयास चले और विश्व डाक संघ ने अपनी ओर से भी काफी प्रयास किए। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्रा लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन् 1972 से शुरू किया गया। यह सही है कि खास तौर पर बड़े शहरों और महानगरों में संचार सामानों के तेज़ विकास तथा अन्य कारणों से पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है पर देहाती दुनिया आज भी चिट्ठियों से ही चल रही है। फैक्स, ई–मेल, टेलीफोन तथ मोबाईल ने चिट्ठियों की तेज़ी को रोका है पर व्यापारिक डाक की संख्या लगातार बढ़ रही है।

जहाँ तक पत्रों का सवाल है, अगर आप बारीकी से उसकी तह में जाए! तो आपको ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा या न लिखाया हो या पत्रों का बेसब्री से जिसने इंतजार न किया हो। हमारे सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतजार करते हैं, उसकी कोई मिसाल ही नहीं। एक दौर था जब लोग पत्रों का महीनों इंतजार करते थे पर अब वह बात नहीं। परिवहन सामानों के विकास ने दूरी बहुत घटा दी है। पहले लोगों के लिए संचार का इकलौता सामान चिट्ठी ही थी पर आज और भी सामान विकसित हो चुके हैं। आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हों या फिर बड़े–बड़े लेखक, पत्रकारों, उद्यमी, कवि, प्रशासक, संन्यासी या किसान, इनकी पत्रों रचनाएँ अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं। अगर आज जैसे संचार सामान होते तो पंडित नेहरू अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फोन करते, पर तब पिता के पत्र पुत्री के नाम नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ों लोगों को प्रेरणा देते हैं। पत्रों को तो आप सहेजकर रख लेते हैं पर एसएमएस संदेशों को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेजकर रख सकते हैं? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या मारोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी हैं। तमाम पत्र देश, काल और समाज को जानने–समझने का असली पैमाना हैं। भारत में आज़ादी के पहले महासंग्राम के दिनों में जो कुछ अंग्रेज़ अफसरों ने अपने परिवारजनों को पत्र में लिखे वे आगे चलकर बहुत महत्व की पुस्तक तक बन गए। इन पत्रों ने साबित किया कि यह संग्राम कितनी जमीनी मज़बूती लिए हुए था। महात्मा गांधी के पास दुनिया भर से तमाम पत्र केवल महात्मा गांधी–इंडिया लिखे आते थे और वे जहा़ि भी रहते थे वहाँ तक पहुँच जाते थे। आज़ादी के आंदोलन की कई अन्य दिग्गज हस्तियों के साथ भी ऐसा ही था। गांधीजी के पास देश–दुनिया से बड़ी संख्या में पत्र पहुँचते थे पर पत्रों का जवाब देने के मामले में उनका कोई जोड़ नहीं था। कहा जाता है कि जैसे ही उन्हें पत्र मिलता था, उसी समय वे उसका जवाब भी लिख देते थे। अपने हाथों से ही ज्यादातर पत्रों का जवाब देते थे। जब लिखते–लिखते उनका दाहिना हाथ दर्द करने लगता था तो वे बाए! हाथ से लिखने में जुट जाते थे। महात्मा गांधी ही नहीं आंदोलन के तमाम नायकों के पत्र गाँव–गाँव में मिल जाते हैं। पत्र भेजनेवाले लोग उन पत्रों को किसी प्रशस्तिपत्र से कम नहीं मानते हैं और

और कई लोगों ने तो उन पत्रों को फ्रेम कराकर रख लिया है। यह है पत्रों का जादू। यही नहीं, पत्रों के आभार पर ही कई भाषाओं में जाने कितनी किताबें लिखी जा चुकी हैं।

वास्तव में पत्र किसी दस्तावेज़ से कम नहीं हैं। अंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम और निराला के पत्र हमको लिख्यौ है कहा तथा पत्रों के आईने में दयानंद सरस्वती समेत कई पुस्तकें आपको मिल जाएगी। कहा जाता है कि प्रेमचंद खास तौर पर नए लेखकों को बहुत प्रेरक जवाब देते थे तथा पत्रों के जवाब में वे बहुत मुस्तैद रहते थे। इसी प्रकार नेहरू और गांधी के लिखे गए रवींद्रनाथ टैगोर के पत्र भी बहुत प्रेरक हैं। 'महात्मा और कवि' के नाम से महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच सन् 1915 से 1941 के बीच के पत्राचार का संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसमें बहुत से नए तथ्यों और उनकी मनोदशा का लेखा–जोखा मिलता है। पत्रा व्यवहार की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है। पर इसका असली विकास आज़ादी के बाद ही हुआ है। तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज्यादा गुडविल डाक विभाग की ही है। इसकी एक खास वजह यह भी है कि यह लोगों को जोड़ने का काम करता है। घर–घर तक इसकी पहुँच है। संचार के तमाम उन्नत सामानों के बाद भी चिट्ठी–पत्री की हैसियत बरकरार है। शहरी इलाकों में आलीशान हवेलियाँ हों या फिर झोपड़पटियों में रह रहे लोग, दुर्गम जंगलों से घिरे गाँव हों या फिर बर्फबारी के बीच जी रहे पहाड़ों के लोग, समुद्र तट पर रह रहे मछुआरे हों या फिर रेगिस्तान की ढाँणियों में रह रहे लोग, आज भी खतों का ही सबसे अमिाक बेसब्री से इंतजार होता है। एक दो नहीं, करोड़ों लोग खतों और अन्य सेवाओं के लिए रोज भारतीय डाकघरों के दरवाज़ों तक पहुँचते हैं और इसकी बहु आयामी भूमिका नज़र आ रही है। दूर देहात में लाखों गरीब घरों में चूल्हे मनीआर्डर अर्थव्यवस्था से ही जलते हैं। गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर

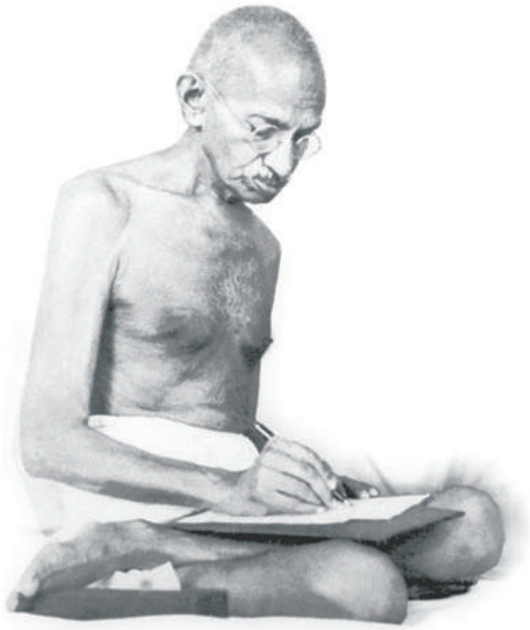

पहुँचनेवाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

—अरविंद कुमार सिंह

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश क्यों नहीं दे सकता?
2. पत्र को खत, कागद, उनरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बताइए।
3. पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या—क्या प्रयास हुए? लिखिए।
4. पत्र मारोहर हो सकते हैं लेकिन एसएमएस क्यों नहीं ? तर्क सहित अपना विचार लिखिए।
5. क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई—मेल, टेलीफोन तथा मोबाईल ले सकते हैं?

पाठ से आगे

1. किसी के लिए बिना टिकट सादे लिफाफे पर सही पता लिखकर पत्र बैरंग भेजने पर कौन—सी कठिनाई आ सकती है?पता कीजिए।
2. पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है, वैसे?
3. ऐसा क्यों होता था कि महात्मा गांधी को दुनिया भर से पत्र 'महात्मा गांधी इंडिया' पता लिखकर आते थे?

अनुमान और कल्पना

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'भगवान के डाकिए' आपकी पाठ्यपुस्तक में है। उसके आधार पर पक्षी और बादल को डाकिए की भांति मानकर अपनी कल्पना से लेख लिखिए।
2. संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास ने बादल को संदेशवाहक बनाकर 'मेघदूत' नाम का काव्य लिखा है। 'मेघदूत' के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

3. पक्षी को संदेशवाहक बनाकर अनेक कविताएँ एवं गीत लिखे गए हैं। एक गीत है 'जा–जा रे कागा विदेशवा, मेरे पिया से कहियो संदेशवा'। इस तरह के तीन गीतों का संग्रह कीजिए। प्रशिक्षित पक्षी के गले में पत्र बाँधकर निर्माारित स्थान तक पत्रा भेजने का उल्लेख मिलता है। मान लीजिए आपको एक पक्षी को संदेशवाहक बनाकर पत्रा भेजना हो तो आप वह पत्रा किसे भेजना चाहेंगे और उसमें क्या लिखना चाहेंगे।

4. केवल पढ़ने के लिए दी गई रामदरश मिश्र की कविता 'चिट्ठियाँ' को ध्यानपूर्वक पढ़िए और विचार कीजिए कि क्या यह कविता केवल लेटर बॉक्स में पड़ी निर्धारित पते पर जाने के लिए तैयार चिट्ठियों के बारे में है? या रेल के डिब्बे में बैठी सवारी भी उन्हीं चिट्ठियों की तरह हैं जिनके पास उनके गंतव्य तक का टिकट है। पत्र के पते की तरह और क्या विद्यालय भी एक लेटर बाक्स की भाँति नहीं है जहाँ से उत्तीर्ण होकर विद्यार्थी अनेक क्षेत्रों में चले जाते हैं? अपनी कल्पना को पंख लगाइए और मुक्त मन से इस विषय में विचार–विमर्श कीजिए।

भाषा की बात

1. किसी प्रयोजन विशेष से संबंधित शब्दों के साथ पत्र शब्द जोड़ने से कुछ नए शब्द बनते हैं, जैसे प्रशस्ति पत्र, समाचार पत्र। आप भी पत्र के योग से बननेवाले दस शब्द लिखिए।

2. 'व्यापारिक' शब्द व्यापार के साथ 'इक' प्रत्यय के योग से बना है। इक प्रत्यय के योग से बननेवाले शब्दों को अपनी पाठ्यपुस्तक से खोजकर लिखिए।

3. दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर सीमा कहते हैं जैसे रवीन्द्र रवि+इन्द्र। इस संधि में इ इ त्र ई हुई है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। दीर्घ स्वर संधि के और उदाहरण खोजकर लिखिए। मुख्य रूप से स्वर संमियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं दीर्घ, गुण, वृणि और यण। 'स्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद `स्व या दीर्घ अ, इ, उ, आ आए तो ये आपस में मिलकर क्रमशः दीर्घ आ, ई, उफ हो जाते हैं, इसी कारण इस सीमा को दीर्घ संमि कहते हैं जैसे संग्रह . आलय त्र संग्रहालय, महा . आत्मा महात्मा।

इस प्रकार के कम–से–कम दस उदाहरण खोजकर लिखिए और अपनी शिक्षिका/शिक्षक को दिखाइए।

शब्दार्थ

अजीबो–गरीब	–	अनोखा	प्रशस्ति पत्र	–	प्रशंसा पत्र
एस्एमएस	–	लघु संदेश सेवा	मुस्तैद	–	तत्पर
सिलसिला	–	आरंभ होना, रास्ता खुलना	दस्तावेज़	–	प्रमाण संबंमी कागजात, प्रमाण पत्रा
अहमियत	–	महत्व	गुडविल	–	सुनाम, अच्छी छवि
हरकारा	–	दूत, डाकिया, संदेश पहु!चाने वाला	हैसियत	–	दरजा
			आलीशान	–	शानदार
आवाजाही	–	आना–जाना	ढाँणी	–	अस्थाई निवास, क्च्चे मकानों की बस्ती जो गाँव से कुछ दूर बनी हो
तह	–	गहराई			

चिट्ठियाँ

(केवल पढ़ने के लिये)

लेटरबक्स में पड़ी हुई चिट्ठियाँ
अनंत सुख–दुख वाली अनंत चिट्ठियाँ
लेकिन कोई किसी से नहीं बोलती
सभी अकेले–अकेले
अपनी मंजिल पर पहुँचने का इंतजार करती हैं।
कैसा है यह एक साथ होना
दूसरे के साथ हँसना न रोना
क्या हम भी लेटरबक्स की
चिट्ठियाँ हो गए हैं।

– रामदरश मिश्र

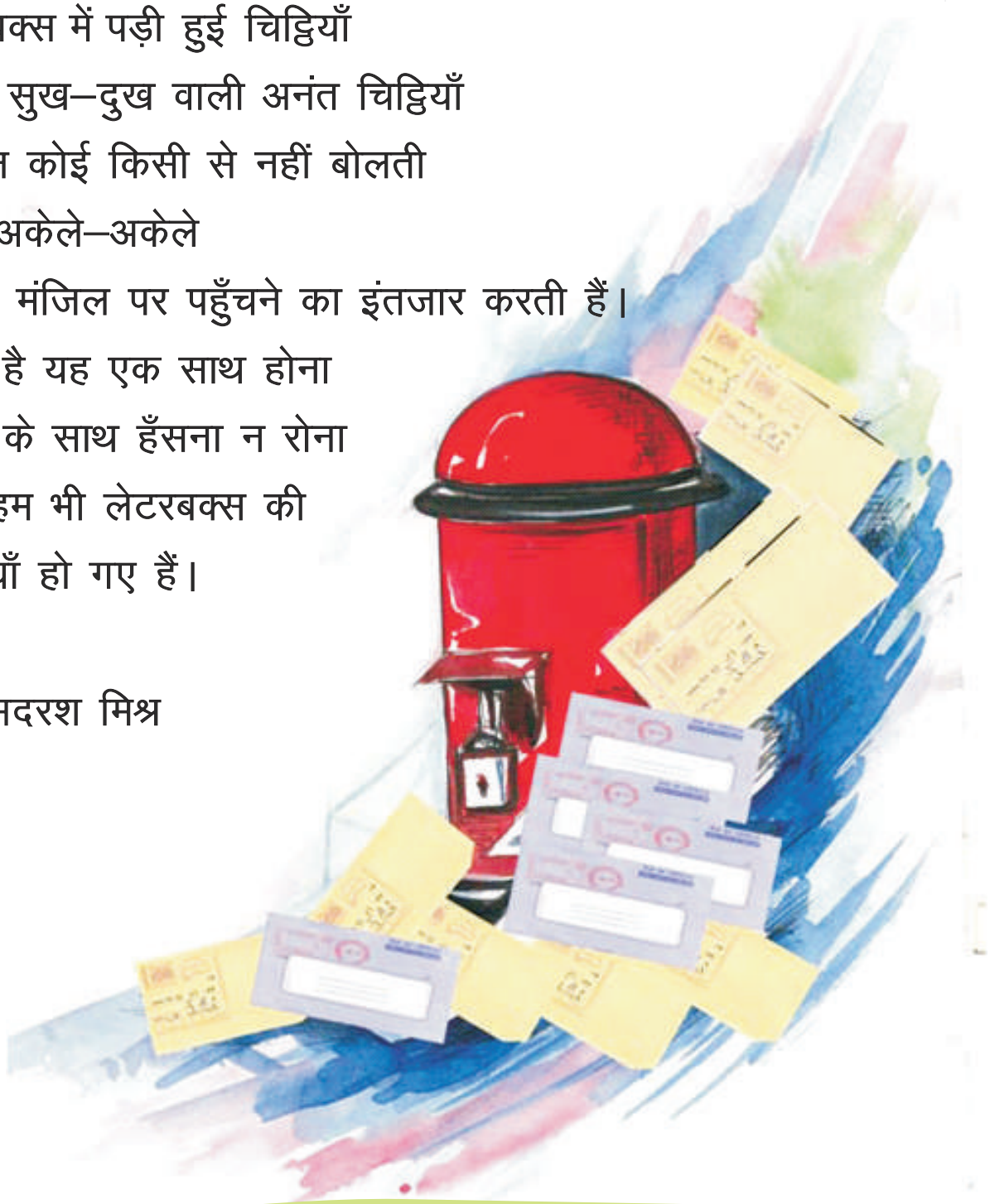

6

भगवान के डाकिए

पक्षी और बादल,

ये भगवान के डाकिए हैं,

जो एक महादेश से

दूसरे महादेश को जाते हैं।

हम तो समझ नहीं पाते हैं

मगर उनकी लाई चिठियाँ

पेड़, पौधे, पानी और पहाड़

बाँचते हैं।

हम तो केवल यह आँकते हैं

कि एक देश की धरती

दूसरे देश को सुगंध भेजती है।

और वह सौरभ हवा में तैरते हुए

पक्षियों की पाँखों पर तिरता है।

और एक देश का भाप

दूसरे देश में पानी

बनकर गिरता है।

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है?स्पष्ट कीजिए।
2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिठिठयों को कौन–कौन पढ़ पाते हैं?सोचकर लिखिए।
3. किन पंक्तियों का भाव है
   क – पक्षी और बादल प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं।
   ख – प्रकृति देश–देश में भेदभाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।
4. पक्षी और बादल की चिठिठयों में पेड़–पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?
5. एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान–प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं?
2. आज विश्व में कहीं भी संवाद भेजने और पाने का एक बड़ा साधन इंटरनेट है। पक्षी और बादल की चिट्ठियों की तुलना इंटरनेट से करते हुए दस पंक्तिया! लिखिए।
3. 'हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका' क्या है?इस विषय पर दस वाक्य लिखिए।

अनुमान और कल्पना

डाकिया, इंटरनेट के वर्ल्ड वाइड वेब ;डब्ल्यू. डब्ल्यू. डब्ल्यू. तथा पक्षी और बादल इन तीनों संवादवाहकों के विषय में अपनी कल्पना से

एक लेख तैयार कीजिए। लेख लिखने के लिए आप 'चिठिठयों की अनूठी दुनिया' पाठ का सहयोग ले सकते हैं।

शब्दार्थ

बाँचना	–	पढ़ना, सस्वर पढ़ना
आँकना	–	अनुमान करना
पाँख	–	पंख, पर
सौरभ	–	सुगंध, सुबास

प्लास्टिक जनित प्रदूषण
(लघु नाटिका)

दृश्य सरकारी विधालय का परिसर

पात्र–परिचय

प्रधानचार्य	:	डा0 भूषण
अध्यापिका	:	श्रीमति अर्चना
विधार्थी	:	संख्या एक
विधार्थी	:	संख्या दो
विधार्थी	:	संख्या तीन
विधार्थी	:	संख्या चार

विधालय में आज हलचल है सभी विधार्थी उत्सुक्त है, क्योंकि आज उनके विधालय में 'मंत्री महोदय' (शिक्षा) पधार रहे हैं। सभी विधार्थी अपनी–अपनी तैयारी में जुटे हुए हैं।

(गीत, संगीत, नृत्य, नाटिका, वाद–विवाद आदि) सभी की उत्सुक्ता का एक कारण सही भी है कि आज एक नवीन विषय गम्भीर है इसलिए विधार्थी जी जान से तैयारी में लगे है कि कही मंत्री महोदय के सामने उनका कार्यक्रम फीका न पड़ जाए। अध्यापक वर्ग तो विशेष रुप से तैयारी में थे।

डा0 भूषण :– (प्रधानाचार्य का आगमन–सारे कार्यक्रम की देखते हुए अर्चना जी (अध्यापिका) के सम्बोधिका करते हुए) आप का नाटक पूरी तरहा से तैयार है कि नहीं विषय बहुत कठिन चुना है आपने 'प्लास्टिक जनित प्रदूषण'।

अर्चना :– (अधियापिका) जी जनाब, आज के दौर में समाज को प्राप्त सुविधा को त्यागने के लिए कहना बहुत जटिल कार्य है 'प्लास्टिक' तो आज घर–घर में विधमान है और सरकार को उसके फायदा भी बहुत है। आम लोगों की जीवन भी सरल हो गया है

प्लास्टिक के आने से घर की रसोई से लेकर आफिस तक, शादियों में, घरों की सजावट में इसका बहुत योगदान है हम इस के उपयोग को कैसे नकार सकते है?

प्रधानाचार्य :– क्या आप का विषय समझ में आएगा सभी को?

अर्चना :– सर विषय तो गम्भीर है, कठिन भी है और लोगों को इस के दुष्परिणाम से अवगत कराना ही इस नाटिका का उद्देश्य है।

मंत्री महोदय जी के आते ही विधालय परिसर में हलचल शुरु हो जाती हैं फूलों से प्रधानाचार्य मंत्री जी का स्वागत करते है। कार्यक्रम का आरम्भ नाटिका से होता है।

नाटक की प्रस्तुती विधालय के आठवीं कक्षा के विधार्थी तथा अध्यापिका अर्चना जी के द्वारा होती है जिसमें विद्यार्थियों को प्लास्टिक जनित प्रदूषण के बारे में पढ़ा रही है।

दृश्य : कक्षा आठवी के विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए अध्यापिका

श्रीमति अर्चना (अध्यापिका) का मंच पर आगमन और बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहती है कि प्यारे बच्चों आज हम प्लास्टिक से उत्पन्न प्रदूषण को लेकर एक लघु नाटिका प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

बच्चों आप को पता है कि रोज मरा की जिन्दगी में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक का अर्थ क्या है और इसके इस्तेमाल से क्या–क्या बीमारियाँ हो सकती है इससे प्रदूषण कैसे फैलता है?

विधार्थी संख्या :– अध्यापिका जी इस प्लास्टिक ने तो हमारी बहुत सी विधायों को सुविधा में बदल दिया है फिर यह खराब कैसे ?श्रीमति अर्चना (अध्यापिका) आज मैं आप को इसी विषय में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी देना चाहती हूँ।

विधार्थी (संख्या 2) :– उत्सुक्ता से ! अध्यापिका जी कृपा यह बताएं कि यह प्लास्टिक क्या है?इसका अर्थ तथा उससे कौन–कौन से रोग उत्पन्न हो सकते है?

श्रीमति अर्चना (अध्यापिका) प्यारे बच्चो !

प्लास्टिक, (का अर्थ) एक ग्रीक शब्द 'प्लाटीकोस' से बना है जिसका

सीधा तात्पर्य है आसानी से नमनीम पदार्थ, जो किसी भी आकार में ढाला जा सकता है।

प्लास्टिक मुख्यतः पैट्रोलियम पदार्थों से निकलने वाले कृत्रिक रेजिन से बनाया जाता है रेजिन में अमोनिया एवं बेंजीन को मिलाकर प्लास्टिक के मोनामर बनाए जाते है। इसमें कलोरीन फुलुओरीन, कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन आक्सीजन एवं सल्फर के अणु होते है लम्बें समय तक अपघटित न होने के अलावा भी प्लास्टिक अनेक अन्य प्रभाव छोड़ता है जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

विधार्थी (संख्या 3) हाथ उठा कर अध्यापिका जी हमारे स्वास्थ्य के लिए यह (प्लास्टिक) कहां तक हानिकारक है क्या आप हमें उदाहरण देकर बना सकती है ?

अध्यापिका (अवश्य) उदाहरण स्वरुप पाइपों खिड़कियों और दरवाजों के निर्माण में प्रयुक्त पी0 वी0 सी0 प्लास्टिक विनाइल क्लोराइट से बनाया जाता है और इससे रसामन मस्तिष्क एवं यकृत में कैंसर पैदा कर सकता है मशीनों की पैकिंग बनाने के लिए अत्यन्त कठोर पॉलीकार्बोनेट प्लास्टिक फॉस्जीन बिसफीथल मौगिकों से प्राप्त किए जाते हैं। उनके एक अवभव फौस्जीन अत्यन्त विषैली व दमघोटू गैस है। फार्मेल्डीहाइड अनेक प्रकार के प्लास्टिक के निर्माण में प्रयुक्त होता है। यह रसायन त्वचा पर दाने उत्पन्न कर सकता है। कई दिनों तक उसे सम्पर्क में बने रहने से दमा तथा सांस सम्बन्धी बीमारियाँ हो सकती है।

फिर भी बच्चों क्यों आप जानते है कि इतनी बीमारियों के बाद भी विज्ञान की देन में प्लास्टिक का कम महत्व नहीं। 1970 के दशक से प्लास्टिक का प्रभाव इतना बढ़ा गया है कि उसका औधौगिक तथा घरेलु क्षेत्र में उपयोग अप्रत्याशित रूप से बढ़ा। इसका मुख्य कारण है यह बहुत सुविधाजनक हो गया है। पीतल और ताँबे जैसी महँगी और कठिनता से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की अपेक्षा प्लास्टिक अधिक सस्ता और सहज वस्तु दिखाई देता है। सस्ता, हल्का, ताप–विधुत कंपन–शोर–प्रतिरोधी तथा कम जगह घेरने वाला पदार्थ होने के कारण औद्योगिक कार्यो में धातुओं की जगह इसने ले ली है।

साथ ही, वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार कृषि उपकरण तथा अन्य आवश्यक

कार्यों में भी प्लास्टिक को प्रतिनिधित्व मिला। विश्व में औसतन प्लास्टिक की खपत 15 किलो प्रतिव्यक्ति की तुलना में भारत में यह खपत प्रति व्यक्ति लगभग 1 किलो है। इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट जिसमें ईपॉक्सी प्रिंटेड सर्किट बोर्ड, चप्पल, टी॰ वी॰ कैबिनेट, टेपरिकॉर्डर के गियरबॉक्य, प्रकाश करने वाले स्त्रोत बटन इत्यादि शामिल हैं।

(विधार्थी बहुत ही जिज्ञासा से अध्यापिका की बात सुन रहे हैं विधार्थी (संख्या 4) अध्यापिका जी फिर तो आप को यह भी पता होगा कि भारत और विश्व में 'प्लास्टिक' कितना निकलता होगा। कृपा हमें बताएं–

(विधार्थियों के अलावा विद्यालय में बैठे गुरूजन, मंत्री महोदय, तथा बच्चों के माता–पिता भी इस नाटिका का बहुत ध्यान से सुन और देख रहे थे।)

अर्चना (अध्यापिका) बच्चों क्या आप जानते है कि भारत में प्रतिवर्ष 700 टन प्लास्टिक निकलता है जबकि ऐसे प्लास्टिक अपशिष्ट की मात्रा विश्व में 7000 टन है। सन् 2001–2002 में भारत में प्लास्टिक की मांग 4.3 मिलटन थी जो प्रतिवर्ष बढ़ने की सम्भावना है वर्तमान में भारत में प्लास्टिक का बाजार 2500 करोड़ रुपए है। प्लास्टिक के उत्पादन की वृद्धि और इसकी विविध विशेषताओं के कारण आधुनिक युग में इसकी उपयोगिता बढ़ती जा रही है। टिकाऊपन, मनभावन रंगों में उपलब्धता और विविध आकार प्रकारों में मिलने के कारण इसका प्रयोग आज जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। बाजार में खरीददारी के लिए रंग–बिरंगे कैरी बैग से लेकर रसोईघर के बर्तन, कृषि के उपकरण, परिवहन वाहन, जल–वितरण, रक्षा उपकरण एवं इलेक्ट्रानिक्स, सहित अनेक क्षेत्रों में आज प्लास्टिक का बोल बाला है यही नहीं वैज्ञानिकों ने मनुष्य का जो कृत्रिम हृदय बनाया है, वह भी प्लास्टिक से ही बनाया है।

विद्यार्थी (से. 1) हैरानी है। अध्यापिका जी कि इस प्लास्टिक के उपयोग के बाद इसका क्या होता है हमें यह जानने की बहुत उत्सुक्ता है। कृपा बताएं–

अध्यापिका (श्रीमति उर्चना) क्यों नहीं?यह आपके साथ–साथ सभी को समझना चाहिए कि प्लास्टिक की तमाम खूबियों के बावजूद उपयोग के बाद इसे फेंक दिया जाता है तो अन्य कचरों की तरह आसानी से नष्ट नहीं होता। एक लम्बे समय तक

अपघटित न होने के कारण यह लगातार एकत्रित होता जाता है और अनेक समस्याओं को जन्म देता है। इसके उपभोग के विभिन्न तरीकों से लेकर उत्पादन की प्रतिक्रयाओं के समय जिन गैसों का रिसना शुरू होता है उससे श्रमिकों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता ही है। इसके साथ ही साथ पर्यावरण भी दुष्प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है।

इसके निर्माता यही भलीभाँति जानते हैं कि इन विषैले रसायनों से यहाँ वातावरण भी विषैला हुए बिना नहीं रहता है फिर भी इसका उपयोग कम नहीं है।

प्लास्टिक का कोई भी रूप चाहे वह थैलियों के रूप में क्यों न हो उपयोगोपरान्त इधर–उधर गड्ढ़ों और नालियों में फेंक दी जाती है। इनसे प्रदूषण फैलता है। ये नालियों और गड़ढों में फंसकर उन्हें बन्द कर देती है। इन्हें विनष्ट करना कठिन होता है। सीवर चोक की जितनी घटनाएं होती हैं उनमें 40 प्रतिशत पोलीथीन बैग की वजह से होती है।

विद्यार्थी (संख्या 2) अध्यापिका जी क्या इस प्लास्टिक कचरे को ठिकाने लगाने का कोई उपाय नहीं है।

अध्यापिकाः शाबाश, तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है उपाय एक नहीं तीन–तीन हैं।

पहला उपाय– आमतौर पर प्लास्टिक के न सड़ने की प्रवृति को देखते हुए इसे गड़ढो में भर दिया जाता है।

दूसरा उपायः प्लास्टिक को जलाया जाता है, लेकिन यह तरीका बहुत प्रदूषणकारी है।

(प्लास्टिक जलने से कार्बन डाईऑक्साइड गैस निकलती है जो वायुमंडल की 'ओजोन' परत के लिए नुकसानदायक है)

तीसरा और सर्वाधिक चर्चित उपायः प्लास्टिक का पुनः चक्रण है। पुनः चक्रण का मतलब प्लास्टिक अपशिष्ट से पुनः प्लास्टिक प्राप्त करके प्लास्टिक की नई चीजे बनाना। (प्लास्टिक पुन, चक्रण की शुरूआत सर्वप्रथम सन् 1970 में कैलीफोर्निया की एक फर्म ने की)

विद्यार्थी (संख्या 3) अध्यापिका जी क्या इससे पर्यावरण पर भी प्रभावित होता है?

अध्यापिकाः (अर्चना जी) पर्यावरण और मानव दोनों ही एक दूसरे पर आधारित है और

दोनों को एक दूसरे के नुक्सान और फायदा भी होता है। (बच्चों विस्तार से सुनो) जर्मनी के पर्यावरण वैज्ञानिक के अनुसार यदि 5000 पोलीथीन बैग्स तैयार किए जाते हैं तो 17 किलो सल्फर डाईऑक्साइड गैस वायुमंडल में घुल जाता है। इसके अतिरिक्त मोनो ऑक्साईड नाअइट्रोजन और हाइड्रोकार्बनस का वायु में रिसाव होता है और पानी में कुछ जहरीले पदार्थ भी आकर मिलते हैं। इसी प्रकार जब फाइबर बनाये जाते हैं तो कम से कम 13 किलो नाइट्रोजन आक्साइड और 12 किलो सल्फर डाईआक्साइड निकलकर वायुमंडल में मिलती है। गैसों से पेड़–पौधों एवं फसलों को नुकसान पहुँचता है। उनकी बाढ़ प्राकृतिक तरीके से नहीं हो पाती है। इस प्रकार प्लास्टिक के द्वारा पर्यावरण भी प्रभावित होता है।

पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुँचाने के साथ–साथ पशु धन को भी बहुत नुकसान पहुँचा है। सन् 2000 में लखनऊ शहर में गायों के पेट का आपरेशन कर आठ से दस किलो तक प्लास्टिक कचरा निकाला गया। कस्बों, शहरों एवं महानगरों में यहाँ प्रदूषण फैल रहा है वहाँ नदियाँ, तालाब व झीलें भी प्रदेषित हो रही है। जलीय पक्षियों और पछलियों पर भी इनका प्रभाव अछूता नही है।

विद्यार्थी (संख्या) अध्यापिका जी क्या भारत सरकार ने प्लास्टिक के दुष्प्रभावों पर कोई रोक या कानून नहीं बनाया है?

अध्यापिकाः बच्चों आप को जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि देश के विभिन्न भागों में प्लास्टिक के दृष्प्रभावों के प्रति नागरिक जागृत होकर इसके इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने हेतु आन्दोलनरत है। भारत में केन्द्रीय सरकार ने प्लास्टिक मैन्यूफैक्चर एण्ड यूसेज रूल्स के अन्तर्गता 1999 में प्रतिबंध लगाया है जिसमें पालन न करने पर राज्यों द्वारा छः माह की कड़ी सजा के प्रावधान किए जाने, उद्योगों की बिजली काट दिए जाने और पालन न किए जाने की स्थिति में प्रतिष्ठान बन्द किये जाने जैसे प्रावधान है। (2 अक्टूबर, 2001) इन नियमों का उल्लंघ्न करने पर 3 महीने से एक वर्ष की कैद अथवा 25,000 रूपए का जुर्माना अथवा दोंनो एक दण्ड स्वरूप दिए जा सकते हैं। हमारे देश में कानूनों की तो कमी नहीं है, कमी है तो बस उन्हें सख्ती से लागू करने की। बच्चों आशा है कि मेरी दी हुई

जानकारी से आप का ज्ञान बढ़ा होगा। अब मैं आप से भी यह उम्मीद रखती हूँ कि आप भी प्लास्टिक का इस्तेमाल सोच समझ कर करेंगे। और अपने आस–पास के क्षेत्र में अन्य लोगों को भी जानकारी देंगे (प्लास्टिक जनित प्रदूषण की)

विद्यार्थीः (काफी उत्साहित हो कर)

धन्यवाद अध्यापिका जी आज आप ने जो हमें ज्ञान दिया है हम आपके आभारी हैं। हम आप को विश्वास दिलाते हैं कि इस कार्य में हम सरकार को पूरा साथ देंगें।

लघु नाटिका की समाप्ति पर सभी श्रोतागण प्रसन्न होते हैं तालियों की गूंज से पात्रों का हौंसला बढाते हैं।

मंत्री महोदय भी प्रसन्न हो कर सभी पात्रों को पुरस्कार देकर उनकी हौंसला बढ़ाते हैं।

समाप्ति

प्रश्न अभ्यास

प्र01 प्रस्तुत लघु नाटिका का नाम क्या है?

प्र02 'प्लास्टिक' किस ग्रीक शब्द से निकला है?

प्र03 'प्लास्टिक से कौन से रसायन निकलते हैं किन्हीं दो का नाम लिखें।'

प्र04 'प्लास्टिक' के दृष्परिणाम क्या है?

प्र05 प्लास्टिक जनित प्रदूषण को ठिकाने लगाने के कौन–कौन से उपाय है।

प्र06 इस प्रदूषण से कौन–कौन सी बीमारियाँ जन्म लेती हैं?

प्र07 प्लास्टिक पुनः चक्रण की शुरूआत किस देश ने की थी और कब?

प्र08 केन्द्र सरकार ने किस सन् में प्लास्टिक जनित प्रदूषण को रोकने के नियम बनाए थे।

2 रिक्त स्थान भरोः

1 विद्यालय में ..... के आने से हलचल मची हुई थी।

2 अध्यापिका ..... ने लघु नाटिका प्रचार करवाई थी।

3 नाटक में ..... पात्र थे।

4 प्लास्टिक एक ग्रीक शब्द ..... से बना है।

5 प्लास्टिक पुनः चक्रण की शुरूआत सर्वप्रथम सन् ..... में ..... की एक फर्म ने की।

भाषा, अध्ययन

3 शब्द – अर्थ

1 नमनीय – आर्द्र, गीला

2 कृत्रिम – बनावटी

3 प्रवृत्ति – स्वभाव

4 प्रतिबंध – रोक

5 चक्रण – पुनर्निमाण

भाषा–अध्ययन में अध्यापिका शब्दों के अर्थ समझा कर विद्यार्थियों को उसे वाक्य में परिवर्तित करना सिखाएगी।

योग्यता – बिस्तार

1 इस पाठ को देख कर और सुन कर विद्यार्थी अपने–अपने मोहल्ले में प्लास्टिक के दुष्परिणामों से सबको अवगत कराएंगे।

8

क्या निराश हुआ जाए

मेरा मन कभी–कभी बैठ जाता है। समाचार–पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप–प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही उँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा–चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते?यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिंता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था?रवींद्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति–सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गंहर में डूब गया?आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शो की मिलन–भूमि 'मानव महा–समुद्र' क्या सूख ही गया?मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले–भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा प़ फरेब का रोज़गार करनेवाले फल–फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सचाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ–मोह, काम–क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुदि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि–कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे–कानून बनाए गए हैं जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यो में लगना है, उनका मन सब समय पवित्रा नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख–सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के उपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर–भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज़ है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सचाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीज़ों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं

है कि हम ऐसी चीज़ों का गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से मान या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाए! ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक–चित्र में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी–जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेक्ड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा। उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया से सचाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाए! भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है। एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में

कुछ खराबी थी, रुक–रुककर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह–तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था। परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी–पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। उपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने–पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने

देखने लगा और बोला, हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे। डर तो मेरे मन में था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परंतु यात्री इतने घबरा गए कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।

मैं भी बहुत भयभीत था पर ड्राइवर को किसी तरह मार–पीट से बचाया। डेढ़–दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्रांइवर को मारा तो नहीं पर उसे बस से उतारकर एक जगह घेरकर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राईवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा,

कहा, अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस बस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है। फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, पंडित जी, बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया। यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्रांइवर से माफी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया–माया रह ही नहीं गई! जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाँढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे पर संदेह न करू! ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

–हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न-अभ्यास

आपके विचार से

1. लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं है। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?
2. समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविज़न पर आपने ऐसी अनेक घटनाएँ देखी–सुनी होंगी जिनमें लोगों ने बिना किसी लालच के दूसरों की सहायता की हो या ईमानदारी से काम किया हो। ऐसे समाचार तथा लेख एकत्रित करें और कम–से–कम दो घटनाओं पर अपनी टिप्पणी लिखें।
3. लेखक ने अपने जीवन की दो घटनाओं में रेलवे के टिकट बाबू और बस कंडक्टर की अच्छाई और ईमानदारी की बात बताई है। आप भी अपने या अपने किसी परिचित के साथ हुई किसी घटना के बारे में बताइए जिसमें किसी ने बिना किसी स्वार्थ के भलाई, ईमानदारी और अच्छाई के कार्य किए हों।

पर्दाफाश

1. दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?
2. आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं। इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए?

कारण बताइए

निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या–क्या हो सकते हैं?आपस में चर्चा कीजिए, जैसे–ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है। परिणाम – भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

1. सचाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। .....
2. झूठ और फरेब का रोज़गार करने वाले फल–फूल रहे हैं। .....
3. हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम। .....

दो लेखक और बस यात्राा

आपने इस लेख में एक बस की यात्रा के बारे में पढ़ा। इससे पहले भी आप एक बस यात्रा के बारे में पढ़ चुके हैं। यदि दोनों बस–यात्राओं के लेखक आपस में मिलते तो एक–दूसरे को कौन–कौन सी बातें बताते ? अपनी कल्पना से उनकी बातचीत लिखिए।

सार्थक शीर्षक

1. लेखक ने लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' क्यों रखा होगा?क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं?
2. यदि 'क्या निराश हुआ जाए' के बाद कोई विराम चिन्ह लगाने के लिए कहा जाए तो आप दिए गए चिन्नहो में से कौन–सा चिन्ह लगाएँगे? अपने चुनाव का कारण भी बताइए। – , । . ! ?. – , ... ।

आदर्श की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? तर्क सहित उतार दीजिए।

सपनों का भारत

हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

1. आपके विचार से हमारे महान विद्वानों ने किस तरह के भारत के सपने देखे थे? लिखिए।
2. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए?लिखिए।

भाषा की बात

1. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है द्वंद्व समास। इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक–दूसरे में द्वंद्व; स्पर्ध, होड़ की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता, जैसे –चरम और परम, चरम–परम, भीरु और बेबस, भीरु–बेबस। दिन और रात, दिन–रात। 'और' के साथ आए शब्दों के जोड़े को 'और' हटाकर ;–योजक चिन्ह भी लगाया जाता है। कभी–कभी एक साथ भी लिखा जाता है। द्वंद्वसमास के बारह उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

2. पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।

शब्दार्थ

धर्मभीरु	–	जिसे धर्म छूटने का भय हो, अधर्म से डरनेवाला
पर्दाफाश	–	भेद खोलना, दोष प्रकट करना
उजागर	–	प्रकट करना
गंतव्य	–	स्थान जहाँ किसी को जाना हो
ढाँढ़स	–	दिलासा, धीरज
श्रमजीवी	–	श्रम से जीविका
आचरण	–	चरित्र, चालचलन
गंतव्य	–	मंजिल, लक्ष्य
दोषोदघाटन	–	दोष बताना
चरम	–	अंतिम, आखिरी

9

कामचोर

बड़ी देर के वाद–विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे–मोटे किस काम के हैं! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचोर कहीं के !

''तुम लोग कुछ नहीं। इतने सारे हो और सारा दिन उधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।''

और सचमुच हमें खयाल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च होता है? इसलिए हमने तुरंत हिल–हिलाकर पानी पीना शुरू किया।

हिलने में धक्के भी लग जाते हैं और हम किसी के दबैल तो थे नहीं कि कोई धक्का दे, तो सह जाएँ। लीजिए, पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध हो गया। सुराहियाँ उधर लुढ़कीं। मटके इधर गए। कपड़े भीगे, सो अलग।

'यह भला काम करेंगे।' अम्मा ने निश्चय किया।

''करेंगे कैसे नहीं! देखो जी! जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज नहीं मिलेगा। समझे।''

यह लीजिए बिलकुल शाही फरमान जारी हो रहे हैं।

''हम काम करने को तैयार हैं। काम बताए जाए!,'' हमने दुहाई दी।

''बहुत–से काम हैं जो तुम कर सकते हो। मिसाल के लिए, यह दरी कितनी मैली हो रही है। आँगन में कितना कूड़ा पड़ा है। पेड़ों में पानी देना है और भाई मुफत तो यह काम करवाए नहीं जाएँगे। तुम सबको तनख्वाह भी मिलेगी।''

अब्बा मियाँ ने कुछ काम बताए और दूसरे कामों का हवाला भी दिया, माली को तनख्वाह मिलती है। अगर सब बच्चे मिलकर पानी डालें, तो...

'ऐ हे! खुदा के लिए नहीं। घर में बाढ़ आ जाएगी।' अम्मा ने याचना की। फिर भी तनख्वाह के सपने देखते हुए हम लोग काम पर तुल गए।

एक दिन फर्शी दरी पर बहुत–से बच्चे जुट गए और चारों ओर से कोने पकड़कर झटकना शुरू किया। दो–चार ने लकड़ियाँ लेकर धुआँधार पिटाई शुरू कर दी।

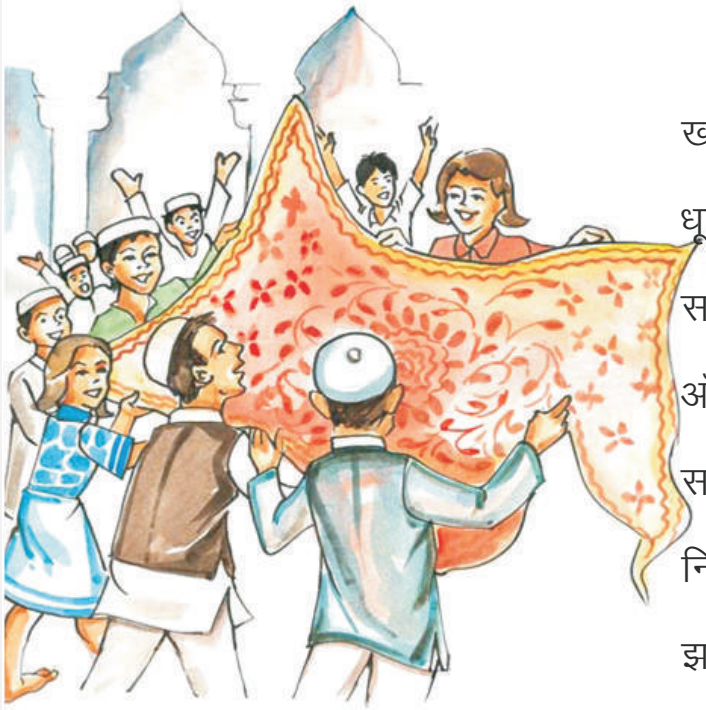

सारा घर धूल से अट गया। खाँसते–खाँसते सब बेदम हो गए। सारी धूल जो दरी पर थी, जो फर्श पर थी, सबके सिरों पर जम गई। नाकों और आँखों में घुस गई। बुरा हाल हो गया सबका। हम लोगों को तुरंत आँगन में निकाला गया। वहाँ हम लोगों ने फौरन झाड़ू देने का फैसला किया।

झाड़ू क्योंकि एक थी और तनख्वाह लेनेवाले उम्मीदवार बहुत, इसलिए क्षण–भर में झाड़ू के पुर्जे उड़ गए। जितनी सींके जिसके हाथ पड़ीं, वह उनसे ही उलटे–सीधे हाथ मारने लगा। अम्मा ने सिर पीट लिया। भई, ये बुजुर्ग काम करने दें तो इंसान काम करे। जब ज़रा–ज़रा सी बात पर टोकने लगे तो बस, हो चुका काम!

असल में झाड़ू देने से पहले ज़रा–सा पानी छिड़क लेना चाहिए। बस, यह खयाल आते ही तुरंत दरी पर पानी छिड़का गया। एक तो वैसे ही धूल से अटी हुई थी। पानी पड़ते ही सारी धूल कीचड़ बन गई।

अब सब आँगन से भी निकाले गए। तय हुआ कि पेड़ों को पानी दिया जाए। बस, सारे घर की बालटियाँ, लोटे, तसले, भगोने, पतीलियाँ लूट ली गई। जिन्हें ये चीजें भी न मिलीं, वे डोंगे–कटोरे और गिलास ही ले भागे। अब सब लोग नल पर टूट पड़े। यहाँ भी वह घमासान मची कि क्या मजाल जो एक बूँद पानी भी किसी के बर्तन में आ सके। ठूसम–ठास! किसी बालटी पर पतीला और पतीले पर लोटा और भगोने और डोंगे। पहले तो धक्के चले। फिर कहानियाँ और उसके बाद बरतन। फौरन बड़े भाइयों, बहनों, मामुओं और दमदार मौसियों, फूफियों की वुफमक भेजी गई, फौज मैदान में हथियार फेंककर पीठ दिखा गई।

इस धींगामुश्ती में कुछ बच्चे कीचड़ में लथपथ हो गए जिन्हें नहलाकर कपड़े बदलवाने के लिए नौकरों की वर्तमान संख्या काफी नहीं थी। पास के बंगलों से नौकर आए और चार आना प्रति बच्चा के हिसाब से नहलवाए गए।

हम लोग कायल हो गए कि सचमुच यह सफाई का काम अपने बस की बात नहीं और न पेड़ों की देखभाल हमसे हो सकती है। कम–से–कम मुर्गियाँ ही बंद कर दें।

बस, शाम ही से जो बाँस, छड़ी हाथ पड़ी, लेकर मुर्गियाँ हाँकने लगे। 'चल दड़बे, दड़बे।'

पर साहब, मुर्गियों को भी किसी ने हमारे विरुद भड़का रखा था। उट–पटाँग ईधर–उधर कूदने लगीं। दो मुर्गियाँ खीर के प्यालों से जिन पर आया चाँदी के वर्क लगा रही थी, दौड़ती–फड़फड़ाती हुई निकल गई ।

तूफ़ान गुजरने के बाद पता चला कि प्याले खाली हैं और सारी खीर दीदी के कामदानी के दुपट्टे और ताजे धुले सिर पर लगी हुई है। एक बड़ा–सा मुर्गा अम्मा के खुले हुए पानदान में कूद पड़ा और कत्थे–चूने में लुथड़े हुए पंजे लेकर नानी अम्मा की सफेद दूमा जैसी चादर पर छापे मारता हुआ निकल गया।

एक मुर्गी दाल की पतीली में छपाक मारकर भागी और सीधी जाकर मोरी में इस तेज़ी से फिसली कि सारी कीचड़ मौसी जी के मुँह पर पड़ी जो बैठी हुई हाथ–मुँह धो रही थीं। इधर सारी मुर्गियाँ बेनवेफल का उँफट बनी चारों तरफ दौड़ रही थीं।

एक भी दड़बे में जाने को राजी न थी।

इधर, किसी को सूझी कि जो भेड़ें आई हुई हैं, लगे हाथों उन्हें भी दाना खिला दिया जाए।

दिन–भर की भूखी भेड़ें दाने का सूप देखकर जो सबकी सब झपटीं तो भागकर जाना कठिन हो गया। लश्टम–पश्टम तख्तों पर चढ़ गई। पर भेड़–चाल मशहूर है। उनकी नज़र तो बस दाने के सूप पर जमी हुई थी। पलंगों को फलाँगती, बरतन लुढ़काती साथ–साथ चढ़ गई।

तख्त पर बनी दीदी का दुपट्टा फैला हुआ था जिस पर गोखरी, चंपा और सलमा–सितारे रखकर बड़ी दीदी मुगलानी बुआ को कुछ बता रही थीं। भेड़ें बहुत निःसंकोच सबको रौंदती, मेंगनों का छिड़काव करती हुई दौड़ गई ।

जब तूफ़ान गुजर चुका तो ऐसा लगा जैसे जर्मनी की सेना टैंकों और बमबारों सहित उमार से छापा मारकर गुजर गई हो। जहाँ–जहाँ से सूप गुजरा, भेड़ें शिकारी वुफनों की तरह गंमा सूँघती हुई हमला करती गई ।

हज्जन माँ एक पलंग पर दुपटे से मुँह ढाँक सो रही थीं। उन पर से जो भेड़ें दौड़ीं तो न जाने वह सपने में किन महलों की सैर कर रही थीं, दुपटे में उलझी हुई 'मारो–मारो' चीखने लगीं।

इतने में भेड़ें सूप को भूलकर तरकारीवाली की टोकरी पर टूट पड़ीं। वह दालान में बैठी मटर की फलियाँ तोल–तोल कर रसोइए को दे रही थी। वह अपनी तरकारी का बचाव करने के लिए सीना तान कर उठ गई। आपने कभी भेड़ों को मारा होगा, तो अच्छी तरह देखा होगा कि बस, ऐसा लगता है जैसे रुई के तकिए को कूट रहे हों। भेड़ को चोट ही नहीं लगती। बिलकुल यह समझकर कि आप उससे मज़ाक कर रहे हैं। वह आप ही पर चढ़ बैठेगी। ज़रा–सी देर में भेड़ों ने तरकारी छिलकों समेत अपने पेट की कड़ाही में झौंक दी।

इधर यह प्रलय मची थी, उधर दूसरे बच्चे भी लापरवाह नहीं थे। इतनी बड़ी फौज थी–जिसे रात का खाना न मिलने की धमकी मिल चुकी थी। वे चार भैंसों का दूध दुहने पर जुट गए। धुली–बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। भैंस एकदम जैसे चारों पैर जोड़कर उठी और बालटी को लात मारकर दूर जा खड़ी हुई।

तय हुआ कि भैंस की अगाड़ी–पिछाड़ी बाँध दी जाए और फिर काबू में लाकर दूमा दुह लिया जाए। बस, झूले की रस्सी उतारकर भैंस के पैर बाँध दिए गए। पिछल दो पैर

दो पैर चाचा जी की चारपाई के पायों से बाँधा, अगले दो पैरों को बाँधने की कोशिश जारी थी कि भैंस चौकन्नी को गई। छूटकर जो भागी तो पहले चाचा जी समझे कि शायद कोई सपना देख रहे हैं। फिर जब चारपाई पानी के ड्रम से टकराई आरै पानी छलककर गिरा तो समझे कि अभी–तूफ़ान में फँसे हैं। साथ में भूचाल भी आया हुआ है। फिर जल्दी ही उन्हें असली बात का पता चल गया और वह पलंग की दोनों पटियाँ पकड़े, बच्चों को छोड़ देनेवालों को बुरा–भला सुनाने लगे।

यहाँ बड़ा मज़ा आ रहा था। भैंस भागी जा रही थी और पीछे–पीछे चारपाई और उस पर बैठे हुए थे चाचा जी।

ओहो! एक भूल ही हो गई यानी बछड़ा तो खोला ही नहीं, इसलिए तत्काल बछड़ा भी खोल दिया गया।

तीर निशाने पर बैठा और बछड़े की ममता में व्याकुल होकर भैंस ने अपने खुरों को ब्रेक लगा दिए। बछड़ा तत्काल जुट गया। दुहने वाले गिलास–कटोरे लेकर लपके क्योंकि बालटी तो छपाक से गोबर में जा गिरी थी। बछड़ा फिर बागी हो गया।

कुछ दूध जमीन पर और कपड़ों पर गिरा। दो–चार धारें गिलास–कटोरों पर भी पड़ गई । बाकी बछड़ा पी गया। यह सब कुछ, कुछ मिनट के तीन–चौथाई में हो गया।

घर में तूफ़ान उठ खड़ा हुआ। ऐसा लगता था जैसे सारे घर में मुर्गियाँ, भेडें, टूटे हुए तसले, बालटियाँ, लोटे, कटोरे और बच्चे थे। बच्चे बाहर किए गए। मुर्गियाँ बाग में हँकाई गई । मातम–सा मनाती तरकारी वाली के आँसू पोंछे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बाँधने लगीं।

''या तो बच्चा–राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। नहीं तो मैं चली मायके,'' अम्मा ने चुनौती दे दी।

टौर अब्बा ने सबको कतार में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया। ''अगर किसी बच्चे ने घर की किसी चीज़ को हाथ लगाया तो बस, रात का खाना बंद हो जाएगा।''

ये लीजिए! इन्हें किसी करवट शांति नहीं। हम लोगों ने भी निश्चय कर लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे।

– इस्मत चुगताई

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. कहानी में 'मोटे–मोटे किस काम के हैं?' किन के बारे में और क्यों कहा गया?
2. बच्चों के उधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई?
3. या तो बच्चाराज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। अम्मा ने कब कहा?और इसका परिणाम क्या हुआ?
4. 'कामचोर' कहानी क्या संदेश देती है?
5. क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे।

कहानी से आगे

1. घर के सामान्य काम हों या अपना निजी काम, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप उन्हें करना आवश्यक क्यों है?
2. भरा–पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद?कामचोर कहानी के आधर पर निर्णय कीजिए।
3. बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता–पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार?कामचोर कहानी के आधर पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. 'कामचोर' कहानी एकल परिवार की कहानी है या संयुक्त परिवार की? इन दोनों तरह के परिवारों में क्या–क्या अंतर होते हैं?

अनुमान और कल्पना

1. घरेलू नौकरों को हटाने की बात किन–किन परिस्थितियों में उठ सकती है? विचार कीजिए।

2. कहानी में एक समृद्ध परिवार के उधमी बच्चों का चित्रण है। आपके अनुमान से उनकी आदत क्यों बिगड़ी होगी?उन्हें ठीक ढंग से रहने के लिए आप क्या–क्या सुझाव देना चाहेंगे?

3. किसी सफल व्यक्ति की जीवनी से उसके विद्यार्थी जीवन की दिनचर्या के बारे में पढ़ें और सुव्यवस्थित कार्यशैली पर एक लेख लिखें।

भाषा की बात

धुली–बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। धुली शब्द से पहले 'बे' लगाकर बेधुली बना है। जिसका अर्थ है 'बिना धुली' 'बे' एक उपसर्ग है। 'बे' उपसर्ग से बननेवाले कुछ और शब्द हैं बेतुका, बेईमान, बेघर, बेचैन, बेहोश आदि। आप भी नीचे लिखे उपसगो से बनने वाले शब्द खोजिए।

1. प्र .....
2. आ .....
3. भर .....
4. बद .....

शब्दार्थ

छबैल	–	दब्बू
घमासान	–	घोर, भयानक
फरमान	–	राजाज्ञा
तनख्वाह	–	वेतन, पगार
फर्शी	–	फर्श पर बिछी हुई
हवाला	–	उल्लेख करना, उण्रण
धुंआधार	–	ताबड़तोड़
वुफमक	–	फौजी टुकड़ी
धंगा–मुश्ती	–	धक्का–मुक्की, लड़ना–भिड़ना, शरारत
लथपथ	–	सना हुआ, तर
दड़बा	–	मुर्गियों के रहने की जगह
मोरी	–	नाली, गंदे पानी की नाली
बेनकेल	–	बिना नकेल; पशुओं की नाक में पहनाई जाने वाली, रस्सी के बिना
दालान	–	बरामदा
तरकारी	–	सब्जी
मातम	–	शोक मनाना
बटालियन	–	पलटन
कोर्ट मार्शल	–	फौजी अदालत में सजा सुनाने की तरह

10

जीवन नहीं मरा करता है

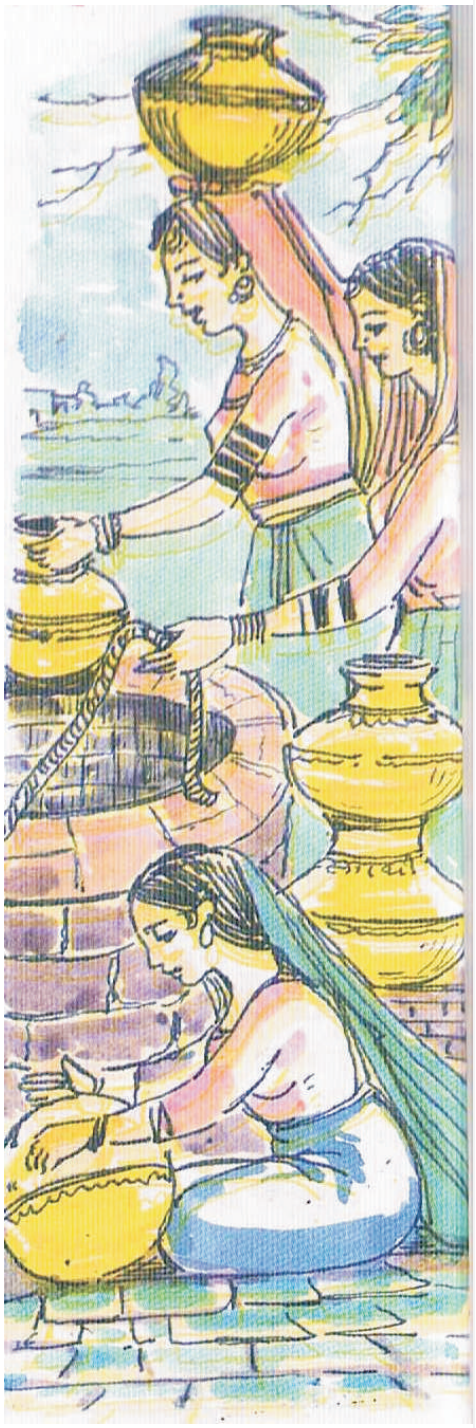

छिप–छिप अश्रु बहाने वालो!
मोती व्यर्थ लुटाने वालो!
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

सपना क्या है?नयन–सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी।

गीली उमर बनाने वालो!
डूबे बिना नहाने वालो!
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।

माला बिखर गई तो क्या है?
खुद ही हल हो गई समस्या।
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई समस्या।

रूठे दिवस मनाने वालो!
फटी कमीज़ सिलाने वालो!
कुछ दीयों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।

खाता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती।

वस्त्र बदलकर आने वालो!
चाल बदलकर जाने वालो।
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

कितनी बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आई पनघट पर।
कितनी बार किश्तियाँ डूबीं
चहल–पहल वैसी है तट पर।

तम की उमर बढ़ाने वालो!
लौ की आयु घटाने वालो!
लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन
लुट न लेकिन गंध फूल की।
तूफ़ानों तक ने छेड़ा
पर खिड़की बंद न हुई धूल की।

नफ़ गले लगाने वालो!
सब पर धूल उड़ाने वालो!
कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से दर्पण नहीं मरा करता है।

–गोपाल दास 'नीरज'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1. इस कविता के माध्यम से कवि ने क्या कहना चाहा है?
2. कवि ने कैसे लोगों को ललकारा है?

नीचे हम एक के बारे में बता रहे हैं। शेष के बारे में आप बताएँ:–

क. .....
ख. .....
ग. .....
घ. .....
ङ. .....

3. कवि ने क्या–क्या उदाहरण देकर हमारा हौंसला बढ़ाया है?
4. कविता के आधार पर सपने को परिभाषित करें।
5. किन स्थितियों में समस्या के समाधान मिल जाने की बात कही गई है?आप उससे कहाँ तक सहमत हैं?
6. 'गीता' के निम्नांकित श्लोक का भाव इस कविता की किन पंक्तियों से मिलता है?
   वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरो पराणि।
   तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। (2–22)
7. पनघट पर घड़े फूटने से और जलधारा में नावों के डूबने पर भी तट पर चहल–पहल क्यों बनी रहती है?कवि ने इन उदाहरणों के आधार पर क्या बताना चाहा है?
8. फूल की गंध की विशेषता क्या है?
9. निम्नांकित पदबंधों का भाव–सौन्दर्य स्पष्ट करें:–
   क. आँसू नीलाम होना
   ख. गीली उमर
   ग. रूठा दिवस
   घ. तम की उम्र बढ़ाना
   ङ. लौ की आयु घटाना

योग्यता–विसतार

1. हाव–भाव के साथ इस कविता का वाचन करें।
2. इस कविता के भाव से मिलते–जुलते भाव की कविताएँ कई कवियों ने रची है। उनका संकलन करें।
3. ''हमें दु:ख या विपत्ति से नहीं घबराना चाहिए'' विषय पर कक्षा में चर्चा करें।

11

जब सिनेमा ने बोलना सीखा

'वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत–प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहतर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।' देश की पहली सवाव् ;बोलती फिल्म 'आलम आरा' के पोस्टरों पर विज्ञापन की ये पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। 14 मार्च 1931 की वह ऐतिहासिक तारीख भारतीय सिनेमा में बड़े बदलाव का दिन था। इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा ने बोलना सीखा था। हालाँकि वह दौर ऐसा था जब मूक सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर था। 'पहली बोलती फिल्म जिस साल प्रदर्शित हुई, उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनीं। मगर बोलती फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया था।

पहली बोलती फिल्म आलम आरा बनानेवाले फिल्मकार थे अर्देशिर एम. ईरानी। अर्देशिर ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर उन्होंने अपनी फिल्म की पटकथा बनाई। इस नाटक के कई गाने ज्यों के त्यों फिल्म में ले लिए गए। एक इंटरव्यू में अर्देशिर ने उस वक्त कहा था–'हमारे पास कोई संवाद लेखक नहीं था, गीतकार नहीं था,

संगीतकार नहीं था।' इन सबकी शुरुआत होनी थी। अर्देशिर ने फिल्म के गानों के लिए स्वयं की धुनें चुनीं। फिल्म के संगीत में महज तीन वाद्य–तबला, हारमोनियम और वायलिन का इस्तेमाल किया गया। आलम आरा में संगीतकार या गीतकार में स्वतंत्र रूप से किसी का नाम नहीं डाला गया। इस फिल्म में पहले पार्श्वगायक बने डब्लू. एम. खान। पहला गाना था –'दे दे खुदा के नाम पर प्यारे, अगर देने की ताकत है।'

आलम आरा का संगीत उस समय डिस्क फॉर्म में रिकार्ड नहीं किया जा सका, फिल्म की शूटिंग शुरू हुई तो साउंड के कारण ही इसकी शूटिंग रात में करनी पड़ती थी। मूक युग की अधिकतर फिल्मों को दिन के प्रकाश में शूट कर लिया जाता था, मगर आलम आरा की शूटिंग रात में होने के कारण इसमें छत्रिम प्रकाश व्यवस्था करनी पड़ी। यहीं से प्रकाश प्रणाली बनी जो आगे पिफल्म निर्माण का जरूरी हिस्सा बनी। 'आलम आरा' ने भविष्य के कई स्टार और तकनीशियन तो दिए ही, अर्देशिर की कंपनी तक ने भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अमिाक मूक और लगभग सौ सवाव्फ फिल्में बनाई। आलम आरा फिल्म 'अरेबियन नाइट्स' जैसी फैंटेसी थी। फिल्म ने हिंदी–उर्दू के मेलवाली 'हिंदुस्तानी' भाषा को लोकप्रिय बनाया। इसमें गीत, संगीत तथा नृत्य के अनोखे संयोजन थे। फिल्म की नायिका जुबैदा थीं। नायक थे वित्रृल। वे उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पानेवाले स्टार थे। उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है। विठ्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले उनका बतौर

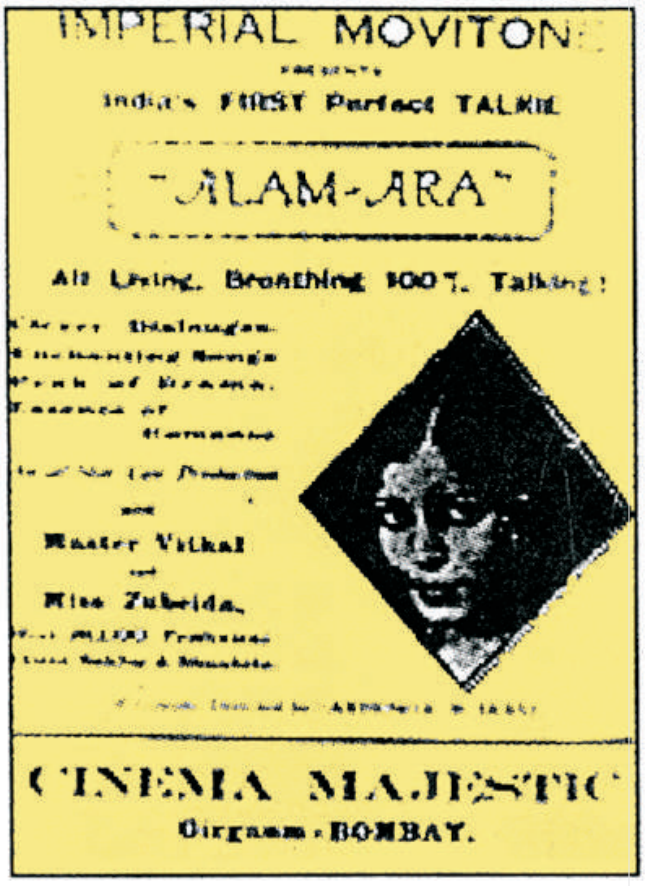

नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया। विठठल नाराज हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया।

उस दौर में उनका मुकदमा मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा जो तब के मशहूर वकील हुआ करते थे। विठठल मुकदमा जीते और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बने। उनकी कामयाबी आगे भी जारी रही। मराठी और हिंदी फिल्मों में वे लंबे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे। इसके अलावा 'आलम आरा' में सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, याकूब और जगदीश सेठी जैसे अभिनेता भी मौजूद रहे आगे चलकर जो फिल्मोद्योग के प्रमुख स्तंभ बने।

यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुंबई के 'मैजेस्टिक' सिनेमा में प्रदर्शित हुई। फिल्म 8 सप्ताह तक 'हाउसफुल' चली और भीड़ इतनी उमड़ती थी कि पुलिस के लिए नियंत्रण करना मुश्किल हो जाया करता था। समीक्षकों ने इसे 'भड़कीली ंफैंटेसी' फिल्म करार दिया था मगर दर्शकों के लिए यह पिफल्म एक अनोखा अनुभव थी। यह फिल्म 10 हशार फुट लंबी थी और इसे चार महीनों की कड़ी मेहनत से तैयार किया गया था।

सवाक फिल्मों लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों, अरबी प्रेम–कथाओं को विषय के रूप में चुना गया। इनके अलावा कई सामाजिक विषयों वाली फिल्में भी बनीं। ऐसी ही एक फिल्म थी –'खुदा की शान।' इसमें एक किरदार महात्मा गांधी जैसा था। इसके कारण सवाव्फ सिनेमा को ब्रिटिश प्रशासकों की तीखी नशर का सामना करना पड़ा।

सवाक् सिनेमा के नए दौर की शुरुआत करानेवाले निर्माता–निर्देशक अर्देशिर इतने विनम्र थे कि जब 1956 में 'आलम आरा' के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।

जब पहली बार सिनेमा ने बोलना सीख लिया, सिनेमा में काम करने के लिए पढ़े–लिखे अभिनेता–अभिनेत्रियों की जरूरत भी शुरू हुई क्योंकि अब संवाद भी बोलने थे, सिर्फ अभिनय से काम नहीं चलनेवाला था। मूक फिल्मों के दौर में तो पहलवान जैसे शरीरवाले, स्टंट करनेवाले और उछल–कूद करनेवाले अभिनेताओं से काम चल जाया करता था। अब उन्हें संवाद बोलना था और गायन की प्रतिभा की कद्र भी होने लगी थी। इसलिए 'आलम आरा' के बाद आरंभिक 'सवाव्फ' दौर की फिल्मों में कई 'गायक–अभिनेता' बड़े पर्दे पर नशर आने लगे। हिंदी–उर्दू भाषाओं का महत्व बढ़ा। सिनेमा में देह और तकनीक की भाषा की जगह जन प्रचलित बोलचाल की भाषाओं का दाखिला हुआ। सिनेमा ज्यादा देसी हुआ। एक तरह की नयी आज़ादी थी जिससे आगे चलकर हमारे दैनिक और सार्वजनिक जीवन का प्रतिबिंब फिल्मों में बेहतर होकर उभरने लगा।

अभिनेताओं–अभिनेत्रियों की लोकप्रियता का असर उस दौर के दर्शकों पर भी खूब पड़ रहा था। 'धधुरी' नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी। औरतें अपनी केशसज्जा उसी तरह कर रही थीं। अर्देशिर ईरानी की फिल्मों में भारतीय के अलावा ईरानी कलाकारों ने भी अभिनय किया था। स्वयं 'आलम आरा' भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया में पसंद की गई।

भारतीय सिनेमा के जनक पफाल्वेफ को 'सवाक्' सिनेमा के जनक अर्देशिर ईरानी की उपलब्धि को अपनाना ही था, क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

–प्रदीप तिवारी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन–से वाक्य छापे गए?उस फिल्म में कितने चेहरे थे?स्पष्ट कीजिए।
2. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली?उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधर कहाँ से लिया?विचार व्यक्त कीजिए।
3. विठठल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक वेफ रूप हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया?विठठल ने पुनः नायक होने के लिए क्या किया?विचार प्रकट कीजिए।
4. पहली सवाक् फिल्म के निर्माता–निदेशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था?अर्देशिर ने क्या कहा? और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है? लिखिए।

पाठ से आगे

1. मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर, जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें अनेक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों को अभिनेता, दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें।
2. डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी–कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है ?

अनुमान और कल्पना

1. किसी मूक सिनेमा में बिना आवाज़ के ठहाकेदार हँसी कैसी दिखेगी?अभिनय करके अनुभव कीजिए।
2. मूक फिल्म देखने का एक उपाय यह है कि आप टेलीविजन की आवाज़ बंद करके फिल्म देखें। उसकी कहानी को समझने का प्रयास करें और अनुमान लगाएँ कि फिल्म में संवाद और दृश्य की हिस्सेदारी कितनी है?

भाषा की बात

1. सवाक् शब्द वाक् के पहले 'स' लगाने से बना है। स उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग की भाँति प्रयोग करके शब्द बनाए! और शब्दार्थ में होनेवाले परिवर्तन को बताए!। हित, परिवार, विनय, चित्रा, बल, सम्मान।
2. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इनका अकेला प्रयोग नहीं होता। इन दोनों में अंतर केवल इतना होता है कि उपसर्ग किसी भी शब्द में पहले लगता है और प्रत्यय बाद में। हिदी के सामान्य उपसर्ग इस प्रकार है –अ/अन, नि, दु, क/वुफ, स/सु, अध्, बिन, औ आदि। पाठ में आए उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	शब्द
वाक	स	–	सवाक्
लोचन	सु	आ	सुलोचना
फिल्म	–	कार	फिल्मकार
कामयाब	–	ई	कामयाबी

इस प्रकार के 15–15 उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने सहपाठियों को दिखाइए।

वेफवल पढ़ने वेफ लिए

शब्दार्थ

सवाक् फिल्म – मूक फिल्म के बाद बनी बोलती फिल्म

पटकथा – फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी

संवाद – फिल्म में की जाने वाली बातचीत

पर्श्वगायक – पर्दे के पीछे से गाने वाला

डिस्क पफॉर्म – रिकॉडिंग का एक रूप

किरदार – अभिनेता की भूमिका, चरित्र

खिताब – उपाधि, सम्मान

12

जहाँ पहिया है

पुडुकोई ; तमिलनाडु मेः साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है? कुछ अजीब–सी बात है, है न! लेकिन चौंकने की बात नहीं है। पुडुकोई ज़िले की हज़ारों नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए यह अब आम बात है। अपने पिछड़ेपन पर लात मारने, अपना विरोध व्यक्त करने और उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई–न–कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं। कभी–कभी ये तरीके अजीबो–गरीब होते हैं।

भारत के सर्वाधिक गरीब जिलों में से एक है पुडुको'ई। पिछले दिनों यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता, आज़ादी और गतिशीलता को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीक के रूप में साइकिल को चुना है। उनमें से अधिकांश नवसाक्षर थीं। अगर हम दस वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को अलग कर दें तो इसका अर्थ यह होगा कि यहाँ ग्रामीण महिलाओं के एक–चौथाई हिस्से ने साइकिल चलाना सीख

लिया है और इन महिलाओं में से सत्तर हज़ार से भी अधिक महिलाओं ने 'प्रदर्शन एवं प्रतियोगिता' जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में बड़े गर्व के साथ अपने नए कौशल का प्रदर्शन किया और अभी भी उनमें साइकिल चलाने की इच्छा जारी है। वहाँ इसके लिए कई 'प्रशिक्षण शिविर' चल रहे हैं।

ग्रामीण पुडुको'ई के मुख्य इलाकों में अत्यंत रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आई युवा मुस्लिम लड़कियाँ सड़कों से अपनी साइकिलों पर जाती हुई दिखाई देती हैं। जमीला बीवी नामक एक युवती ने जिसने साइकिल चलाना शुरू किया है, मुझसे कहा –यह मेरा अधिकार है, अब हम कहीं भी जा सकते हैं। अब हमें बस का इंतज़ार नहीं करना पड़ता। मुझे पता है कि जब मैंने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग ाफब्तियाँ कसते थे। लेकिन मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

फातिमा एक माध्यमिक स्कूल में पढ़ाती हैं और उन्हें साइकिल चलाने का ऐसा चाव लगा है कि हर शाम आधा घंटे के लिए किराए पर साइकिल लेती हैं। एक नयी साइकिल खरीदने की उनकी हैसियत नहीं है। फातिमा ने बताया कि साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। हमें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। मैं कभी इसे नहीं छोड़ूँगी। जमीला, फातिमा और उनकी मित्र अवकन्नी इन सबकी उम्र 20 वर्ष के आसपास है और इन्होंने अपने समुदाय की अनेक युवतियों को साइकिल चलाना सिखाया है।

इस जिले में साइकिल की धूम मची हुई है। इसकी प्रशंसकों में हैं महिला खेतिहर मज़दूर, पत्थर खदानों में मज़दूरी करने वाली औरतें और गाँवों में काम करने वाली नर्सें। बालवाड़ी और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, बेशकीमती पत्थरों को तराशने में लगी औरतें और स्कूल की अध्यापिकाएँ भी साइकिल का जमकर इस्तेमाल कर रही हैं। ग्राम सेविकाएँ

और दोपहर का भोजन पहुँचाने वाली औरतें भी पीछे नहीं हैं। सबसे बड़ी संख्या उन लोगों की है जो अभी नवसाक्षर हुई हैं। जिस किसी नवसाक्षर अथवा नयी–नयी साइकिल चलानेवाली महिला से मैंने बातचीत की, उसने साइकिल चलाने और अपनी व्यक्तिगत आज़ादी के बीच एक सीमा संबंध बताया।

साइकिल आंदोलन की एक अगुआ का कहना है, मुख्य बात यह है कि इस आंदोलन ने महिलाओं को बहुत आत्मविश्वास प्रदान किया। महत्वपूर्ण यह है कि इसने पुरुषों पर उनकी निर्भरता कम कर दी है। अब हम प्रायः देखते हैं कि कोई औरत अपनी साइकिल पर चार किलोमीटर तक की दूरी आसानी से तय कर पानी लाने जाती है। कभी–कभी साथ में उसके बच्चे भी होते हैं। यहाँ तक कि साइकिल से दूसरे स्थानों से सामान ढोने की व्यवस्था भी खुद ही की जा सकती है। लेकिन यकीन मानिए, जब इन्होंने

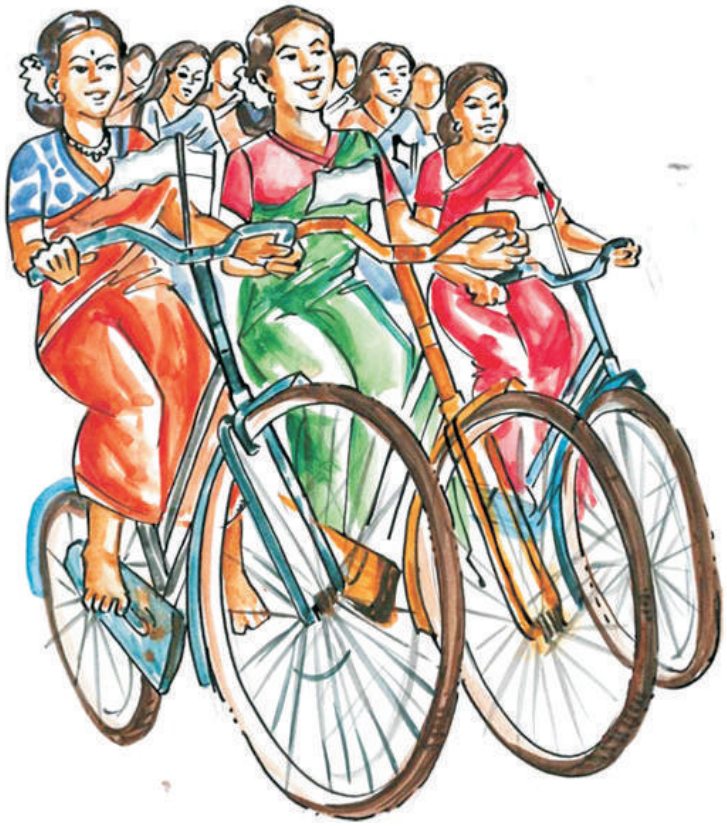

साइकिल चलाना शुरू किया तो इन पर लोगों ने जमकर प्रहार किया जिसे इन्हें झेलना पड़ा। गंदी–गंदी टिप्पणियाँ की गई लेकिन धीरे–धीरे साईकिल चलाने को सामाजिक स्वीकृति मिली। इसलिए महिलाओं ने इसे अपना लिया। साइकिल प्रशिक्षण शिविर देखना एक असाधारण अनुभव है। किलाकुरुचि गाँव में सभी साइकिल सीखनेवाली महिलाएँ

रविवार को इकट्ठी हुई थीं। साइकिल चलाने के आंदोलन के समर्थन में ऐसे आवेग देखकर कोई भी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता। उन्हें इसे सीखना ही है। साइकिल ने उन्हें पुरुषों द्वारा थोपे गए दायरे के अंदर रोजमर्रा की घिसी–पिटी चर्चा से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया। ये नव–साइकिल चालक गाने भी गाती हैं। उन गानों में साइकिल चलाने को प्रोत्साहन दिया गया है। इनमें से एक गाने की पंक्ति का भाव है –'ओ बहिना, आ सीखें साइकिल, घूमें समय के पहिए संग...' जिन्हें साइकिल चलाने का प्रशिक्षण मिल चुका है उनमें से बहुत बड़ी संख्या में साइकिल सीख चुकी महिलाएँ अभी नयी–नयी साइकिल सीखनेवाली महिलाओं को भरपूर सहयोग देती हैं। उनमें यहाँ न केवल सीखने–सिखाने की इच्छा दिखाई देती है बल्कि उनके बीच यह उत्साह भी दिखाई देता है कि सभी महिलाओं को साइकिल चलाना सीखना चाहिए।

1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह जिला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता। हैंडल पर झंडियाँ लगाए, घंटियाँ बजाते हुए साइकिल पर सवार 1500 महिलाओ ने पडुकोई में तूफान ला दिया। महिलाओं की साइकिल चलाने की इस तैयारी ने यहाँ रहनेवालों को हक्का–बक्का कर दिया।

इस सारे मामले पर पुरुषों की क्या राय थी?इसके पक्ष में 'आर. साइकिल्स' के मालिक को तो रहना ही था। इस अकेले डीलर के यहाँ लेडीज़ साइकिल की बिक्री में साल भर के अंदर काफी वृद्धि हुई। माना जा सकता है कि इस आँकड़े को दो कारणों से कम करके आँका गया। पहली बात तो यह है कि ढेर सारी महिलाओं ने जो लेडीज़ साईकिल का इंतज़ार नहीं कर सकती थीं, जेंट्स साइकिलें खरीदने लगीं। दूसरे, उस डीलर ने बड़ी सतर्कता के साथ यह जानकारी मुझे दी थी –उसे लगा कि मैं बिक्री कर विभाग का कोई आदमी हूँ।

कुदिमि अन्नामलाई की चिलचिलाती धूप में एक अद्भुत दृश्य की तरह पत्थर के खदानों में दौड़ती–भागती बाईस वर्षीय मनोरमनी को लोगों ने साइकिल सिखलाते देखा। उसने मुझे बताया –हमारा इलाका मुख्य शहर से कटा हुआ है। यहाँ जो

साइकिल चलाना जानते हैं उनकी गतिशीलता बढ़ जाती है।

साइकिल चलाने के बहुत निश्चित आर्थिक निहितार्थ थे। इससे आयु में वृदि हुई है। यहाँ की कुछ महिलाएँ अगल–बगल के गाँवों में कृषि संबंधी अथवा अन्य उत्पाद बेच आती हैं। साईकिल की वजह से बसों के इंतज़ार में व्यय होने वाला उनका समय बच जाता है। खराब परिवहन व्यवस्था वाले स्थानों के लिए तो यह बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरे, इससे इन्हें इतना समय मिल जाता है कि ये अपने सामान बेचने पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर पाती हैं। तीसरे, इससे ये और अधिक इलाकों में जा पाती हैं। अंतिम बात यह है किअगर आप चाहें तो इससे आराम करने का काफी समय मिल सकता है।

जिन छोटे उत्पादकों को बसों का इंतज़ार करना पड़ता था, बस स्टॉप तक पहुँचने के लिए भी पिता, भाई, पति या बेटों पर निर्भर रहना पड़ता था। वे अपना सामान बेचने के लिए कुछ गिने–चुने गाँवों तक ही जा पाती थीं। कुछ को पैदल ही चलना पड़ता था। जिनके पास साईकिल नहीं है वे अब भी पैदल ही जाती हैं। फिर उन्हें बच्चों की देखभाल के लिए या पीने का पानी लाने जैसे घरेलू कामों केलिए भी जल्दी ही भागकर घर पहुँचना पड़ता था। अब जिनके पास साइकिलें हैं वे सारा काम बिना किसी दिक्कत के कर लेती

हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अब आप किसी सुनसान रास्ते पर भी देख सकते हैं कि कोई युवा – माँ साइकिल पर आगे अपने बच्चे को बैठाए, पीछे कैरियर पर सामान लादे चली जा रही है। वह अपने साथ पानी से भरे दो या तीन बर्तन लिए अपने घर या काम पर जाती देखी जा सकती है।

अन्य पहलुओं से ज़्यादा आर्थिक पहलू पर ही बल देना गलत होगा। साइकिल प्रशिक्षण से महिलाओं के अंदर आत्मसम्मान की भावना पैदा हुई है यह बहुत महत्वपूर्ण है। फातिमा का कहना है – बेशक, यह मामला केवल आर्थिक नहीं है। फातिमा ने यह बात इस तरह कही जिससे मुझे लगा कि मैं कितनी मूर्खतापूर्ण ढंग से सोच रहा था। उसने आगे कहा –साइकिल चलाने से मेरी कौन सी कमाई होती है। मैं तो पैसे ही गँवाती हूँ। मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं साइकिल खरीद सकूँ। लेकिन हर शाम मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आज़ादी और खुशहाली का अनुभव कर सकूँ। पुडुकोई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी के बारे में कभी इस तरह सोचा ही नहीं था। मैंने कभी साइकिल को आज़ादी का प्रतीक नहीं समझता था।

एक महिला ने बताया –लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण महिलाओं के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई जहाज़ उड़ाने जैसी बड़ी उपलब्धि है। लोग इस पर हँस सकते हैं लेकिन केवल यहाँ की औरतें ही समझ सकती हैं कि उनके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है। जो पुरुष इसका विरोध करते हैं, वे जाएँ और टहलें क्योंकि जब साइकिल चलाने की बात आती है, वे महिलाओं की बराबरी कर ही नहीं सकते।

–पी. साईनाथ

प्रश्न-अभ्यास

जंजीरें

1. "..उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई–न–कोई तरीका

आपके विचार से लेखक 'जंजीरों' द्वारा किन समस्याओं की ओर इशारा कर रहा है?

2. क्या आप लेखक की इस बात से सहमत हैं? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

पहिया

1. 'साइकिल आंदोलन' से पुडुकोई की महिलाओं के जीवन में कौन–कौन से बदलाव आए हैं?
2. शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर. साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्यों?
3. प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन–कौन सी बाधा आई?

शीर्षक की बात

1. आपके विचार से लेखक ने इस पाठ का नाम 'जहाँ पहिया है' क्यों रखा होगा?
2. अपने मन से इस पाठ का कोई दूसरा शीर्षक सुझाइए। अपने दिए हुए शीर्षक के पक्ष में तर्क दीजिए।

समझने की बात

1. लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण औरतों के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई ज़हाज उड़ाने जैसी बड़ी उपलब्धियाँ हैं।
   साइकिल चलाना ग्रामीण महिलाओं के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? समूह बनाकर चर्चा कीजिए।
2. पुडुकोई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी केबारे में इस तरह सोचा ही नहीं था।
   साइकिल को विनम्र सवारी क्यों कहा गया है?

साइकिल

1. फातिमा ने कहा, "...मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आज़ादी और

साइकिल चलाने से फातिमा और पुडुकोई की महिलाओं को 'आज़ादी' का अनुभव क्यों होता होगा?

कल्पना से

1. पुडुकोई में कोई महिला अगर चुनाव लड़ती तो अपना पार्टी–चिन्ह क्या बनाती और क्यों?
2. अगर दुनिया के सभी पहिए हड़ताल कर दें तो क्या होगा?
3. 1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह ज़िला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता।
   इस कथन का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
4. मान लीजिए आप एक संवाददाता हैं। आपको 8 मार्च 1992 के दिन पुडुकोई में हुई घटना का समाचार तैयार करना है। पाठ में दी गई सूचनाओं और अपनी कल्पना के आधार पर एक समाचार तैयार कीजिए।

भाषा की बात

उपसर्ग और प्रत्ययों के बारे में आप जान चुके हैं। इस पाठ में आए उपसर्गयुक्त शब्दों को छाँटिए। उनके मूल शब्द भी लिखिए। आपकी सहायता के लिए इस पाठ में प्रयुक्त कुछ 'उपसर्ग' और 'प्रत्यय' इस प्रकार हैं –अभि,
प्र, अनु, परि, वि;उपसर्गद्ध, इक, वाला, ता, ना।

शब्दार्थ

फब्ती	–	चोट करने वाली या चुभती बात
यकीन	–	विश्वास
घिसीपिटी	–	जो बहुत दिनों से चली आ रही, पुरानी

13

अकबरी लोटा

लाला झाऊलाल को खाने–पीने की कमी नहीं थी। काशी के ठठेरी बाज़ार में मकान था। नीचे की दुकानों से एक सौ रुपये मासिक के करीब किराया उतर आता था। अच्छा खाते थे, अच्छा पहनते थे, पर ढाई सौ रुपये तो एक साथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते थे।

इसलिए जब उनकी पत्नी ने एक दिन एकाएक ढाई सौ रुपये की माँग पेश की, तब उनका जी एक बार ज़ोर से सनसनाया और फिर बैठ गया। उनकी यह दशा देखकर पत्नी ने कहा – "डरिए मत, आप देने में असमर्थ हों तो मैं अपने भाई से माँग लूँ ?"

लाला झाउलाल तिलमिला उठे। उन्होंने रोब के साथ कहा –अजी हटो, ढाई सौ रुपये के लिए भाई से भीख माँगोगी, मुझसे ले लेना।

"लेकिन मुझे इसी ज़िंदगी में चाहिए।

" अजी इसी सप्ताह में ले लेना।

"सप्ताह से आपका तात्पर्य सात दिन से है या सात वर्ष से? " लाला झाउलाल ने रोब के साथ खड़े होते हुए कहा–"आज से सातवें दिन मुझसे ढाई सौ रुपये ले लेना।"

लेकिन जब चार दिन ज्यों–त्यों में यों ही बीत गए और रुपयों का कोई प्रबंध न हो सका तब उन्हें चिंता होने लगी। प्रश्न अपनी प्रतिष्ठा का था, अपने ही घर में अपनी साख का था। देने का पक्का वादा करके अगर अब दे न सके तो अपने मन में वह क्या सोचेगी? उसकी नज़रों में उसका क्या मूल्य रह जाएगा?अपनी वाहवाही की सैकड़ों गाथाएँ सुना चुके थे। अब जो एक काम पड़ा तो चारों खाने चित हो रहे। यह पहली बार उसने मुँह खोलकर कुछ रुपयों का सवाल किया था। इस समय अगर दुम दबाकर निकल भागते हैं तो फिर उसे क्या मुँह दिखलाएँगे?

खैर, एक दिन और बीता। पाँचवें दिन घबराकर उन्होंने पं. बिलवासी मिश्र को अपनी विपदा सुनाई। संयोग कुछ ऐसा बिगड़ा था कि बिलवासी जी भी उस समय बिलकुल खुक्ख थे। उन्होंने कहा – मेरे पास हैं तो नहीं पर मैं कहीं से माँग–जाँचकर लाने की कोशिश करूँगा और अगर मिल गया तो कल शाम को तुमसे मकान पर मिलूँगा।

वही शाम आज थी। हफ्ते का अंतिम दिन। कल ढाई सौ रुपये या तो गिन देना है या सारी हेंकड़ी से हाथ धोना है। यह सच है कि कल रुपया न आने पर उनकी स्त्री उन्हें डामलपफासी न कर देगी केवल ज़रा–सा हँस देगी। पर वह कैसी हँसी होगी, कल्पना मात्रा से झाउलाल में मरोड़ पैदा हो जाती थी।

आज शाम को पं. बिलवासी मिश्र को आना था। यदि न आए तो?या कहीं रुपये का

हुई। उन्होंने नौकर को आवाज़ दी। नौकर नहीं था, खुद उनकी पत्नी पानी लेकर आई।

वह पानी तो ज़रूर लाई पर गिलास लाना भूल गई थीं। केवल लोटे में पानी लिए वह प्रकट हुई। फिर लोटा भी संयोग से वह जो अपनी बेढंगी सूरत के कारण लाला झाउलाल को सदा से नापसंद था। था तो नया, साल दो साल का ही बना पर कुछ ऐसी गढ़न उस लोटे की थी कि उसका बाप डमरू, माँ चिलम रही हो।

लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे। मानना ही चाहिए। इसी को सभ्यता कहते हैं। जो पति अपनी पत्नी का न हुआ, वह पति कैसा? फिर उन्होंने यह भी सोचा कि लोटे में पानी दे, तब भी गनीमत है, अभी अगर चूँ कर देता हूँ तो बालटी में भोजन मिलेगा। तब क्या करना बाकी रह जाएगा?

लाला अपना गुस्सा पीकर पानी पीने लगे। उस समय वे छत की मुँडेर के पास ही खड़े थे। जिन बुजुर्गो ने पानी पीने के संबंध में यह नियम बनाए थे कि खड़े–खड़े पानी न पियो, सोते समय पानी न पियो, दौड़ने के बाद पानी न पियो, उन्होंने पता नहीं कभी यह भी नियम बनाया या नहीं कि छत की मुँडेर के पास खड़े होकर पानी न पियो। जान पड़ता है कि इस महत्वपूर्ण विषय पर उन लोगों ने कुछ नहीं कहा है।

लाला झाउलाल मुश्किल से दो–एक घूँट पी पाए होंगे कि न जाने कैसे उनका हाथ हिल उठा और लोटा छूट गया।

लोटे ने दाएँ देखा न बाएँ, वह नीचे गली की ओर चल पड़ा। अपने वेग में उल्का को लजाता हुआ वह आँखों से ओझल हो गया। किसी ज़माने में न्यूटन नाम के किसी खुराफाती ने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति नाम की एक चीश ईजाद की थी। कहना न होगा कि यह सारी शक्ति इस समय लोटे के पक्ष में थी।

लाला को काटो तो बदन में खून नहीं। ऐसी चलती हुई गली में ।!चे तिमंजले से भरे हुए लोटे का गिरना हँसी–खेल नहीं। यह लोटा न जाने किस अनामिकारी के झोंपड़े पर काशीवास का संदेश लेकर पहुँचेगा। कुछ हुआ भी ऐसा ही। गली में ज़ोर का हल्ला उठा। लाला झाउलाल जब तब दौड़कर नीचे उतरे तब तक एक भारी भीड़ उनके आँगन में घुस आई।

लाला झाउलाल ने देखा कि इस भीड़ में प्रधान पात्र एक अंग्रेज़ है जो नखशिख से भीगा हुआ है और जो अपने एक पैर को हाथ से सहलाता हुआ दूसरे पैर पर नाच रहा है। उसी के पास अपराधी लोटे को भी देखकर लाला झाउलाल जी ने ाफौरन दो और दो

जोड़कर स्थिति को समझ लिया।

गिरने के पूर्व लोटा एक दुकान के सायबान से टकराया। वहाँ टकराकर उस दुकान पर खड़े उस अंग्रेज़ को उसने सांगोपांग स्नान कराया और फिर उसी के बूट पर आ गिरा। उस अंग्रेज़ को जब मालूम हुआ कि लाला झाउलाल ही उस लोटे के मालिक हैं तब उसने केवल एक काम किया। अपने मुँह को खोलकर खुला छोड़ दिया। लाला झाउलाल को आज ही यह मालूम हुआ कि अंग्रेज़ी भाषा में गालियों का ऐसा प्रकांड कोष है। इसी समय पं. बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने आते ही पहला काम यह किया कि उस अंग्रेज़ को छोड़कर और जितने आदमी आँगन में घुस आए थे, सबको बाहर निकाल दिया। फिर आँगन में कुर्सी रखकर उन्होंने साहब से कहा आपके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है। अब आप आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए। साहब बिलवासी जी को धन्यवाद देते हुए बैठ गए और लाला झाउलाल की और इशारा करके बोले –आप इस शख्स को जानते हैं? बिलकुल नहीं। और मैं ऐसे आदमी को जानना भी नहीं चाहता जो निरीह राह चलतों पर लोटे के वार करे।

"मेरी समझ में 'ही इज ए डेंजरस ल्यूनाटिक' ;यानी, यह खतरनाक पागल है नहीं, मेरी समझ में 'ही इज ए डेंजरस क्रिमिनल' ;नहीं, यह खतरनाक मुजरिम है परमात्मा ने लाला झाउलाल की आँखों को इस समय कहीं देखने के साथ खाने की भी शक्ति दे दी होती तो यह निश्चय है कि अब तक बिलवासी जी को वे अपनी आँखों से खा चुके होते। वे कुछ समझ नहीं पाते थे कि बिलवासी जी को इस समय क्या हो गया है।
साहब ने बिलवासी जी से पूछा तो क्या करना चाहिए?

"पुलिस में इस मामले की रिपोर्ट कर दीजिए जिससे यह आदमी ाफौरन हिरासत में ले लिया जाए।

" पुलिस स्टेशन है कहा!?"

" पास ही है, चलिए मैं बताउ"

"चलिए।"

"अभी चला। आपकी इजाज़त हो तो पहले मैं इस लोटे को इस आदमी से खरीद लूँ। क्यों जी बेचोगे?मैं पचास रुपये तक इसके दाम दे सकता हूँ।

लाला झाउलाल तो चुप रहे पर साहब ने पूछा इस लोटे के आप पचास रुपये क्यों दे रहे हैं?"

"आप इस लोटे को रपी बताते हैं?आश्चर्य! मैं तो आपको एक विज्ञ और सुशिक्षित आदमी समझता था।"

"आखिर बात क्या है, कुछ बताइए भी।"

"जनाब यह एक ऐतिहासिक लोटा जान पड़ता है। जान क्या पड़ता है, मुझे पूरा विश्वास है। यह वह प्रसिद अकबरी लोटा है जिसकी तलाश में संसार–भर के म्यूज़ियम परेशान हैं।"

"यह बात ? "

इस विवरण को सुनते–सुनते साहब की आँखों पर लोभ और आश्चर्य का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे कौड़ी के आकार से बढ़कर कौड़ी के आकार की हो गई। उसने बिलवासी जी से पूछा– "तो आप इस लोटे का क्या करिएगा ?

"मुझे पुरानी और ऐतिहासिक चीज़ों के संग्रह का शौक है।"

"मुझे भी पुरानी और ऐतिहासिक चीज़ों के संग्रह करने का शौक है। जिस समय यह लोटा मेरे पर गिरा था, उस समय मैं यही कर रहा था। उस दुकान से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियाँ खरीद रहा था।"

"जो कुछ हो, लोटा मैं ही खरीदूँगा।"

"वाह, आप कैसे खरीदेंगे, मैं खरीदूँगा, यह मेरा हक है।"

"हक है?"

"ज़रूर हक है। यह बताइए कि उस लोटे के पानी से आपने स्नान किया या मैंने?"

"आपने।"

"वह आपके पैरों पर गिरा या मेरे?"

"आपके।"

"अगूठा उसने आपका भुरता किया या मेरा?

"आपका।

बिलवासी जी अ़फसोस के साथ अपने रुपये उठाने लगे, मानो अपनी आशाओं की लाश उठा रहे हों। साहब की ओर देखकर उन्होंने कहा – "लोटा आपका हुआ, ले जाइए, मेरे पास ढाई सौ से अधिक नहीं हैं।"

यह सुनना था कि साहब के चेहरे पर प्रसन्नता की वूँफची गिर गई। उसने झपटकर लोटा लिया और बोला– "अब मैं हँसता हुआ अपने देश लौटूँगा। मेजर डगलस की डींग सुनते–सुनते मेरे कान पक गए थे।

"मेजर डगलस कौन हैं?

"मेजर डगलस मेरे पड़ोसी हैं। पुरानी चीज़ों के संग्रह करने में मेरी उनकी होड़ रहती है। गत वर्ष वे ह़िदुस्तान आए थे और यहाँ से जहाँगीरी अंडा ले गए थे।

"जहागीरी अंडा?

"हा!, जहाँगीरी अंडा। मेजर डगलस ने समझ रखा था कि ह़िदुस्तान से वे ही अच्छी चीज़ें ले सकते हैं।

"पर जहाँगीरी अंडा है क्या?

"आप जानते होंगे कि एक कबूतर ने नूरजहाँ से जहाँगीर का प्रेम कराया था। जहाँगीर के पूछने पर कि, मेरा एक कबूतर तुमने कैसे उड़ जाने दिया, नूरजहाँ ने उसके दूसरे कबूतर को उड़ाकर बताया था, कि ऐसे। उसके इस भोलेपन पर जहाँगीर दिलोजान से निछावर हो गया। उसी क्षण से उसने अपने को नूरजहाँ के हाथ कर दिया। कबूतर का यह अहसान वह नहीं भूला। उसके एक अंडे को बड़े जतन से रख छोड़ा। एक बिल्लोर की हाँडी में वह उसके सामने टँगा रहता था। बाद में वही अंडा जहाँगीरी अंडा के नाम से प्रसिद हुआ। उसी को मेजर डगलस ने पारसाल दिल्ली में एक मुसलमान सज्जन से तीन सौ रुपये में खरीदा।

"यह बात?

"हा!, पर अब मेरे आगे दून की नहीं ले सकते। मेरा अकबरी लोटा उनके जहाँगीरी अंडे से भी एक पुश्त पुराना है।

"दो घंटे तक?

"हाँ, और क्या, अभी मैं आपकी पीठ ठोककर शाबाशी दूँगा, एक घंटा इसमें लगेगा। फिर गले लगाकर धन्यवाद दूँगा, एक घंटा इसमें भी लग जाएगा।

"अच्छा पहले पाँच सौ रुपये गिनकर सहेज लीजिए।

"रुपया अगर अपना हो, तो उसे सहेजना एक ऐसा सुखद मनमोहक कार्य है कि मनुष्य उस समय सहज में ही तन्मयता प्राप्त कर लेता है। लाला झाउलाल ने अपना कार्य समाप्त करके पर देखा। पर बिलवासी जी इस बीच अंतर्मान हो गए।

उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई। वे चादर लपेटे चारपाई पर पड़े रहे। एक बजे वे उठे। धीरे, बहुत धीरे से अपनी सोई हुई पत्नी के गले से उन्होंने सोने की वह सिकड़ी निकाली जिसमें एक ताली बँधी हुई थी। फिर उसके कमरे में जाकर उन्होंने उस ताली से संदूक खोला। उसमें ढाई सौ वेफ नोट ज्यों–के–त्यों रखकर उन्होंने उसे बंद कर दिया। फिर दबे पाँव लौटकर ताली को उन्होंने पूर्ववत अपनी पत्नी के गले में डाल दिया। इसके बाद उन्होंने हँसकर अँगड़ाई ली। दूसरे दिन सुबह आठ बजे तक चैन की नींद सोए।

–अन्नपूर्णानंद वर्मा

प्रश्न-अभ्यास

कहानी की बात

1. "लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे।

   लाला झाउलाल को बेढंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया। आपके विचार से वे चुप क्यों रहे?अपने विचार लिखिए।

2. "लाला झाउलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।

   आपके विचार से लाला झाउलाल ने कौन–कौन सी बातें समझ ली होंगी?

3. अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाउलाल को पहचानने तक से क्यों इनकार कर दिया था?आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे?स्पष्ट कीजिए।

4. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था?लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. "इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए। मैं नहीं बताउँगा।
   बिलवासी जी ने यह बात किससे और क्यों कही?लिखिए।
2. "उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई।
   समस्या झाउलाल की थी और नींद बिलवासी की उड़ी तो क्यों?लिखिए।
3. "लेकिन मुझे इसी जिंदगी में चाहिए।

   "अजी इसी सप्ताह में ले लेना।

   "सप्ताह से आपका तात्पर्य सात दिन से है या सात वर्ष से?
   झाउलाल और उनकी पत्नी के बीच की इस बातचीत से क्या पता चलता है? लिखिए।

क्या होता यदि

1. अंग्रेज़ लोटा न खरीदता?
2. यदि अंग्रेज़ पुलिस को बुला लेता?
3. जब बिलवासी अपनी पत्नी के गले से चाबी निकाल रहे थे, तभी उनकी पत्नी जाग जाती?

पता कीजिए

1. "अपने वेग में उल्का को लजाता हुआ वह आँखों से ओझल हो गया।
   उल्का क्या होती है?उल्का और ग्रहों में कौन–कौन सी समानताएँ और अंतर होते हैं?
2. इस कहानी में आपने दो चीज़ों के बारे में मजेदार कहानियाँ पढ़ी –अकबरी लोटे की कहानी और जहाँगीरी अंडे की कहानी।
   आपके विचार से ये कहानियाँ सच्ची हैं या काल्पनिक?
3. अपने घर या कक्षा की किसी पुरानी चीज़ के बारे में ऐसी ही कोई मजेदार

भाषा की बात

1. इस कहानी में लेखक ने जगह–जगह पर सीधी–सी बात कहने के बदले रोचक मुहावरों, उदाहरणों आदि के द्वारा कहकर अपनी बात को और अधिक मजेदार/रोचक बना दिया है। कहानी से वे वाक्य चुनकर लिखिए जो आपको सबसे अधिक मजेदार लगे।

2. इस कहानी में लेखक ने अनेक मुहावरों का प्रयोग किया है। कहानी में से पाच मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग करते हुए वाक्य लिखिए।

शब्दार्थ

अदब – शिष्टाचार, लिहाज
डामलफासी – आजीवन कारावास का दंड, देश निकाला
मुंडेर – छत के आस–पास बनाई जाने वाली दीवार
सायबान – वह छप्पर या कपड़ा आदि का पर्दा जो धूप और वर्षा से बचाव के लिए मकान या दुकान के आगे लगाया जाता है
खुराफाती – शरारती
गढ़न – बनावट
सांगोपांग – पूरी तरह, उपर से नीचे तक
ईशाद – खोज, अन्वेषण

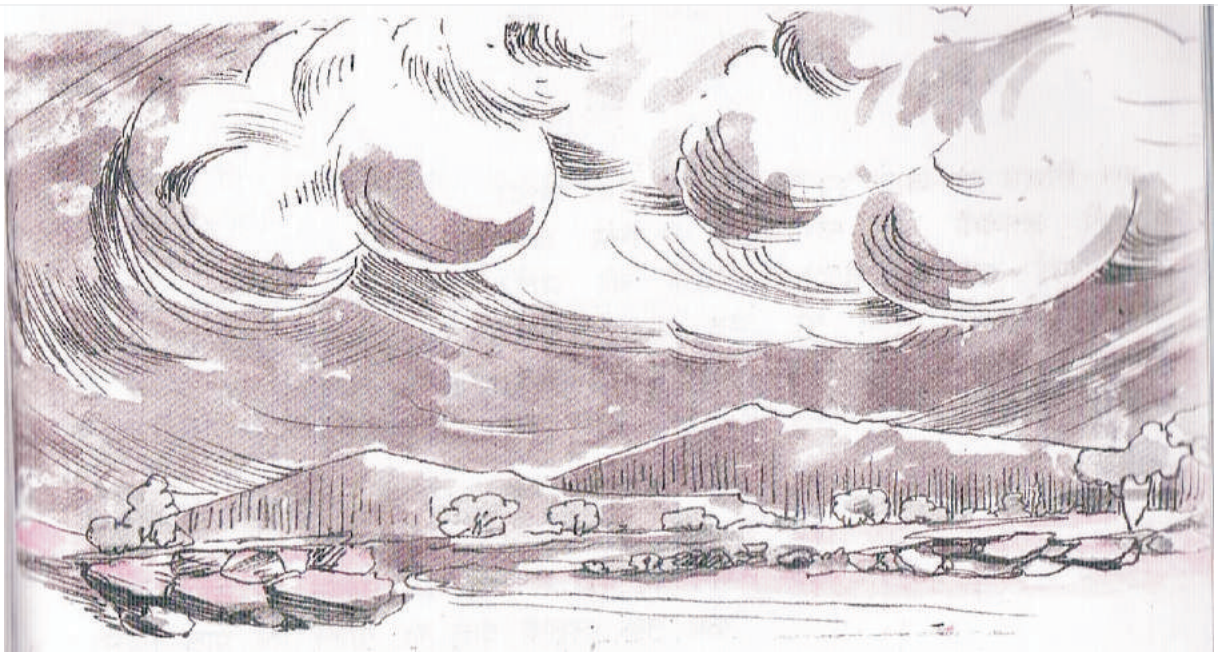

14 ओ नभ में मँडराते बादल

ओ नभ में मँडराते बादल बे–बरसे मत जा।
मन के होठों पर रस की बिसरी पहचान जगा।
पुरवा की लहरों में सुख की आतुरता उमगा।
सूखे सुमनों को हरियाली का आभास दिखा।
खींच क्षितिज पर शीतलता की कज्जल धूमशिखा।
आज वर्ष की पहली वर्षा का पहला झोंका
इतने दिन धरती ने प्रखर पिपासा को रोका।
ओ नभ में मँडराते बादल बे–बरसे मत जा।

कब से जल–बूँदों को विहूवल शैल निहार रहे,
कब से आतप–दग्ध वनों के प्राण पुकार रहे
मन जलता है, जैसे तृष्णा का क्षण जलता है,
सूखे मूल कगारों का वीरान मचलता है।
आज मधुर स्वप्नों में पावस का आकाश भरा।

गीतों की गूँजों से मर्मर का उल्लास हरा।
ओ मादक उन्मादक बादल बे–बरसे मत जा।

जाग उठी मरु–मरु में सुख की वाष्पाकुल आशा।
इस निदाघ से जला प्रकृति का रोम–रोम प्यासा।
थकी अनमनी धूप माँगती है जलमय बाँहें।
डूब गई तम में नीड़ाकुल विहगों की छाँहें।
खेतों–खलिहानों, मुँड़ेरों पर, छत पर, घर–घर।
हेर रहे अगणित हम तुमको जल वाले जलधर।
उमड़ बरसने वाले बादल बे–बरसे मत जा।

है अनदेखी बान तुम्हारी, तरसाते जग को।
पुरवा की थपकी दे–देकर भरमाते जग को।
मन की बूँदों से कब तक जीवन को तृप्ति मिले।
कब तक जलती बालू पर यौवन का फूल खिले।
तुम बरसो फिर से धरती का तन शीतल हो ले।
तुम बरसो मन की थकान का मन मिसरी घोले।
ओ नभ के मँडराते बादल बे–बरसे मत जा।

–रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1. इस गीत में कवि बादल से क्या–क्या आग्रह कर रहा है?
2. वर्षा के बिना जड़–चेतन सभी किस प्रकार व्याकुल हो उठे हैं?
3. तपती धरती और जलने मन–प्राणों में वर्षा की संभावना–मात्र से क्या–क्या परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं?
4. गीत से उन पंक्तियों का चयन करें जिनमें जहाँ–तहाँ मेघ की ओर टकटकी लगाए लोगों का वर्णन किया गया है।
5. इस गीत में बादल को अनेक संबोधनों से पुकारा गया है। उन्हें चुनें और बताएँ कि आपको कौन–सा संबोधन सर्वाधिक सुंदर लगा और क्यों?

6. इस कविता में 'मन के होठ', 'मन की बूँद', 'मन की थकान' जैसे कुछ प्रयोग किए गए हैं। 'कल्पना' शब्द को लेकर इसी प्रकार के तीन प्रयोग करें।
7. भाव स्पश्ट करें:–
   क. थकी अनमनी धूप माँगती है जलमय बाँहें।
   ख. मन की बूँदों से कब तक जीवन को तृप्ति मिले।
8. इस गीत में कई जगह प्रकृति और निर्जीव वस्तुओं में मनुष्य की–सी चेष्टाएँ और क्रियाकलाप दिखाए गए हैं। जैसे–''कब से जल–बूँदों को विह्वल शैल निहार रहें। इसी प्रकार के तीन अन्य उदाहरण इस गीत से छाँटें।

योग्यता–विस्तार

1. इस कविता का हाव–भाव के साथ सस्वर वाचन करें।
2. वर्षा से संबंधित कुछ गीतों और उन्हीं से संबंधित चित्रों का चार्ट तैयार करके अपनी कक्षा में लगाएँ।
3. वर्षा पर प्रायः सभी कवियों ने कविताएँ रची हैं। उनकी कविताओं का संकलन करके 'पावन–अंक' नाम से हस्तलिखित पत्रिका निकालें।

15

प्रेमचंद

गोरी सूरत, घनी काली भौहें, छोटी–छोटी आँखें, नुकीली नाक, बड़ी–बड़ी और गुछी हुई विरल मूँछों वाला यह मुसकराता चेहरा किसका है?यह चेहरा प्रेमचंद का है। लगता है, अभी हँसने वाले हैं। लगता है, अभी ज़ोरों के कहकहे लगाएँगे।

वाराणसी से छः किलोमीटर दूर लमही में शनिवार, 31 जुलाई, सन् 1880 को धनपत राय का जन्म हुआ। माँ–बाप ने नाम रखा था धनपत। चाचा लाड़–प्यार में कहा करते थे–नवाब।

पिता का नाम था अजायब राय। डाकखाने में किरानी थे, इसी से लोग उन्हें मुंशी अजायब लाल कहा करते। माता का नाम था–आनंदी। अक्सर बीमार रहतीं। पिता को दवा–दारू से फुरसत नहीं मिलती थी।

धनपत सात वर्ष का ही था कि माँ चल बसीं। माँ के बिछोह ने धनपत के बचपन का सारा रस सोख लिया। कुछ वर्ष बाद मुंशी अजायब लाल ने दूसरी शादी की। अभाव और अभियोग तो पहले से थे ही, विमाता का निष्ठुर व्यवहार भी उनमें आ मिला। नई माँ बात–बात पर डाँटती। उसे धनपत में बुराइयाँ–ही–बुराइयाँ दीखतीं।

कदाचित् प्रेमचंद अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' के पात्र चंद्रकांत के द्वारा खुद अपनी ही व्यथा सुना रहे हैं.....''बचपन वह उम्र है जब इंसान को मुहब्बत की सबसे ज़्यादा ज़रूरत पड़ती है। उस वक़्त पौधे को तरी मिल जाए तो ज़िंदगी–भर के लिए उसकी जड़ें मज़बूत हो जाती हैं। मेरी माँ के देहांत के बाद मेरी रूह को खुराक नहीं मिली। वही भूख मेरी ज़िंदगी है।''

और, यही कारण था कि बालक धनपत घर–आँगन से भागकर बाहर खुले मैदान में, अमराई में, खेतों की तरफ़ निकल जाता था। साथियों के साथ गुल्ली–डंडा खेलता था। पेड़ों पर चढ़ता था। आम की कैरियाँ चुनता था। मटर की फलियाँ तोड़ता था ..... हवाई क़िले बनाता था।

ग़रीबी, घुटन और रूखेपन से त्राण पाने के लिए बालक धनपत ने इस तरह एक सहज रास्ता निकाल लिया था। रोने–खीझने वाली परिस्थितियों पर कहकहे हावी होने लगे। प्रेमचन्द ने बचपन से ही मुसीबतों पर हँसना सीखा था।

धनपत के छात्र जीवन की आपबीती प्रेमचंद की कहानियों, उपन्यासों और आत्मकथाओं में बिखरी पड़ी है–''मेरी उम्र आठ साल की थी। अपने चचेरे भाई हलधर के साथ मैं पास के गाँव में एक मौलवी साहब के यहाँ पढ़ने जाया करता था। हम दोनों सवेरे बासी रोटियाँ खा लेते, दोपहर के लिए मटर और जौ का चबेना लेकर चल देते फिर तो सारा दिन अपना था। मौलवी साहब के यहाँ कोई हाज़िरी का रजिस्टर तो था नहीं और गैर–हाज़िरी का जुर्माना ही देना पड़ता था। फिर डर किस बात का?कभी–कभी हम हफ्तों गैरहाज़िर रहते, पर मौलवी साहब से ऐसा बहाना कर देते कि उनकी चढ़ी त्योरियाँ उतर जातीं ..... ।''

पिता का तबादला गोरखपुर हुआ। बच्चे भी साथ गए। गाँव के मदरसे से शहर का स्कूल अच्छा था। धनपत की तबीयत पढ़ने में लग गई। गुल्ली–डंडे का खेल पीछे छूट गया। शहरी नज़ारे आगे सरक आए, किताबें चाटने का चस्का इसी उम्र में लगा। हज़ारों कहानियाँ और सैकड़ों छोटे–मोटे उपन्यास धनपत ने इसी उम्र में पढ़ डाले। यह साहित्य उर्दू का था।

हमारा कहानीकार शायद पैदा हो चुका था। रात को अकेले में ढिबरी की मद्धिम रोशनी में उसने गल्प रचना शुरू कर दी थी। बीसियों पन्ने यों ही लिख जाना और उन्हें फाड़ डालना ..... यह सब कितना अच्छा लगता होगा तब धनपत को!

उन्हीं दिनों पिता ने शादी करवा दी। निश्चय ही उसमें सौतेली माँ की भी राय रही होगी। जो लड़की धनपत के लिए चुनी गई थी, वह धनपत को कभी पसंद नहीं आई। पुत्र के पाँवों में 'अष्टधातु' की बेड़ियाँ डालकर मुंशी अजायब लाल ने हमेशा के लिए आँखें मूँद लीं। परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा।

अपनी इन दिनों की दशा का वर्णन प्रेमचंद ने 'जीवन सागर' में किया है, ''पाँव में जूते न थे, देह पर साबुत कपड़े न थे। महँगाई अलग थी। रुपये में बीस सेर के जौ थे। स्कूल में साढ़े तीन बजे छुट्टी मिलती थी। काशी के क्वीन्स कालेज में पढ़ताथा। हेडमास्टर ने फ़ीस माफ़ कर दी थी। इम्तहान सिर पर था और मैं बाँस फाटक, एक लड़के को पढ़ाने जाता था। जाड़ों के दिन थे। चार बजे पहुँचता था, पढ़ाकर छः बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में आठ मिलोमीटर पर था। तेज़ चलने पर भी आठ बजे से

पहले घर न पहुँच पाता। प्रातः काल आठ बजे फिर घर से चलना पड़ता था। कभी वक्त पर स्कूल न पहुँचता। रात को खाना खाकर कुप्पी के सामने पढ़ने बैठता और न जाने कब सो जाता। फिर भी हिम्मत बाँधे रहता।''

ग़रीबी..... पिता की मृत्यु..... खर्च में बढ़ती ..... असामान्य परिश्रम ..... कुप्पी के सामने बैठकर रात की पढ़ाई .....।

जैसे–तैसे द्वितीय श्रेणी में मैट्रिक पास किया। गणित से बेहद घबराते थे। इंटरमीडिएट में दो बार फ़ेल हुए। निराश होकर परीक्षा का विचार ही छोड़ दिया। आगे चलकर दस–बारह वर्ष बाद, जब गणित के विकल्प में दूसरा विषय लेना संभव हो गया तभी धनपत राय ने यह परीक्षा पास ही।

हमारे भावी उपन्यास–सम्राट के पास एक फूटी कौड़ी न थी। दो दिन एक–एक पैसे का खाकर काटे थे। महाजन ने उधार देने से इनकार कर दिया था। बड़ी विवशता से पुरानी पुस्तकों को लेकर एक पुस्तक–विक्रेता के पास पहुँचे। वहीं एक सौम्य पुरुष से, जो एक छोटे–से स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, उनका परिचय हुआ। उन्होंने इनकी ग़रीबी और विवशता के साथ ही कुशाग्रता और लगन से प्रभावित होकर अपने यहाँ सहायक अध्यापक के रूप में नियुक्त करने का आश्वासन दिया और दूसरे दिन इन्हें दस रुपये मासिक वेतन पर नियुक्त किया।

1919 में बी.ए. भी कर लिया विषय लिए थे ..... अंग्रेजी, फ़ारसी, इतिहास। वे एम.ए. भी करना चाहते थे, क़ानून भी पढ़ना चाहते थे। लेकिन, परीक्षाओं की तरफ़ से उदास हो गए थे। जब उमंग थी तब गणित ने बाधा पहुँचाई, अब जब वह बाधा दूर हुई, तो जीवन का लक्ष्य ही बदल चुका था।

स्कूल मास्टर का उनका जीवन भारी घुटन और बेबसी का जीवन रहा तो क्या मचंद की कहानियों में इसी का उल्लेख है?पंडित चंद्रधर के रूप में स्वयं प्रेमचंद कहते हैं ..... ''मुदर्रिसी तो कर ली थी, किंतु सदा पछताया करते थे कि कहाँ से जंगल में आ फँसे?यदि किसी अन्य विभाग में नौकरी की होती तो अब तक हाथ में चार पैसे होते, आराम से जीवन व्यतीत होता। यहाँ तो महीने–भर प्रतीक्षा करने के बाद कहीं पंद्रह रुपये देखने को मिलते हैं। वह भी इधर आए, उधर गए। न खाने का सुख न पहनने का आराम। हमसे तो मज़दूर ही भले।''

इनकी पहली शादी चाची (विमाता) और चाची के पिता की राय से रचाई गई थी। लड़की न केवल बदसूरत थी, बल्कि प्रेमचंद से उम्र में बड़ी थी, ढीठ और नासमझ भी थी। पति से भी लड़ती थी और पति की सौतेली माँ से भी।

दस–बारह वर्ष तक, यानी 1905 तक तो धनपतराय ने पहली बीबी का साथ जैसे–तैसे निभाया, किंतु जब उसके साथ एक दिन भी निभाना मुश्किल हो गया तो शिवरानी देवी नाम की एक बालविधवा से शादी करके धनपतराय ने समाज के सामने भारी साहस और आत्मबल का परिचय दिया।

धनपतराय पढ़ाकू तो थे ही, कलम भी चलने लगी। मैट्रिक पास करने से पहले ही उनको लिखने का चस्का लग गया था। पढ़ाई और ट्यूशन आदि से जो वक़्त बचता, वह सारा–का–सारा किस्से–कहानियाँ पढ़ने में लगाते। किस्से–कहानियों का जो भी असर दिमाग पर पड़ता, उसे अपनी सहज कल्पनाओं में घोल–घोल कर मुंशी जी नई कथावस्तु तैयार करने लगे और वह काग़ज़ पर उतरने भी लगी।

1901–2 में उनके एक–दो उपन्यास निकले। कहानियाँ 1907 में लिखनी शुरू कीं। अंग्रेज़ी में रवीन्द्रनाथ की नई गल्पें पढ़ी थीं, मुंशी जी ने उन गल्पों के उर्दू रूपांतर पत्रिकाओं में छपवाए। पहली कहानी थी 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' जो 1907 में कानुपर के उर्दू मासिक 'ज़माना' में प्रकाशित हुई। 'ज़माना' में धनपतराय की अन्य रचनाओं का प्रकाशन 1903–4 से ही शुरू हो गया था। 1904 के अंत तक 'नवाब राय' ज़माना के स्थायी और विशिष्ट लेखक हो चुके थे।

1905 तक आते–आते प्रेमचंद तिलिस्मी, ऐय्यारी ओर काल्पनिक कहानियों के चंगुल से छूटकर राष्ट्रीय और क्रांतिकारी भावनाओं की दुनिया में प्रवेश कर चुके थे। 'ज़माना' उस समय की राष्ट्रीय पत्रिका थी। सभी को देश की गुलामी खटकती थी, विदेशी शासन की सुनहरी ज़ंजीरों के गुण गाने वाले गद्दार देश–द्रोहियों के खिलाफ़ सभी के अंदर नफ़रत खैलती थी। शाम को 'ज़माना' के दफ़्तर में घंटों देशभक्तों का अड्डा जमता। प्रेमचंद को राष्ट्रीयता की दीक्षा इसी अड्डे पर मिली थी। एक साधारण कथाकार वहीं 'युगद्रष्टा साहित्यकार' के रूप में ढलने लगा। बड़ी–से–बड़ी बातों को सीधे और संक्षेप में कहना या लिखना प्रेमचंद ने यहीं सीखा।

चाचा का प्यार का नाम नवाब राय शुरू की रचनाओं के साथ वर्षों तक चलता रहा, किंतु 1910–11 में 'सोज़े वतन' की ज़ब्ती के साथ 'नवाब राय' की नवाबी खत्म हो गई, बाद में 'ज़माना' के पाठकों का प्रेमचंद से परिचय हुआ और 'नवाब राय' न जाने किस पर्दे की ओट में सदा के लिए छिप गए। बात यह थी कि 'सोज़े वतन' की ज़ब्ती के बाद अंग्रेज़ी सरकार और उसके पिट्ठुओं की नज़र में 'नवाब राय' काँटे की तरह खटकने लगे थे। कई तरह की पाबंदियाँ लग गईं नवाब राय पर .....।

नई पत्नी के साथ रहने लगे तब से लिखाई का सिलसिला जम गया। 1905 से 1920 के दरम्यान प्रेमचंद ने बहुत कुछ लिखा ..... दसियों छोटे–बड़े उपन्यास, सैकड़ों कहानियाँ, पत्र–पत्रिकाओं में निबंध और आलोचनाएँ भी कम नहीं लिखीं। मास्टरी के दिनों में भी लिखते रहे। स्कूलों के सब–डिप्टी इंस्पेक्टर थे, अक्सर दौरे पर रहना होता था, फिर भी रोज़ कुछ–न–कुछ लिख लेते थे।

1920 ई. के बाद ज़्यादातर वे हिंदी में ही लिखने लगे। 'माधुरी' (लखनऊ) के संपादक होने पर उनकी प्रतिभा और योग्यता की बूँद–बूँद हिंदी संसार को मिलने लगी। फिर भी 'ज़माना' को प्रेमचंद की मौलिक उर्दू–रचनाएँ लगातार मिलती रहीं।

1930 में प्रेमचंद की कहानियों का एक और संकलन ज़ब्त हुआ–'समर यात्रा'।

प्रकाशित होते ही अंग्रेज़ी सरकार ने इस पुस्तक को आपत्तिजनक घोषित कर दिया। सरस्वती प्रेस से पुस्तक की सारी प्रतियाँ उठा ली गईं।

अब वे अपना निजी पत्र निकालना चाहते थे। पत्र–पत्रिकाएँ संपादित करने की दीक्षा दरअसल प्रेमचंद को कानपुर में ही मिल चुकी थी। सन् 1905 से ही 'ज़माना' और 'आज़ाद' के कालम उनकी कलम के लिए 'खेल का मैदान' बन चुके थे। सन् 1921–22 में काशी से निकलने वाली मासिक पत्रिका 'मर्यादा' का संपादन बड़ी कुशलता से किया था। अब वे मँजे हुए पत्रकार थे। फलतः सन् 1930 में 'हंस' निकला और 1932 में 'जागरण'।

हद दर्जे की ईमानदारी और अपनी ड्यूटी अच्छी तरह निभाने की मुस्तैदी, खुद तकलीफ़ झेलकर दूसरों को सुख पहुँचाने की लगन, सौ–सौ बंधनों में जकड़ी हुई भारत माता की स्वाधीन के लिए आतुरता, बाहरी और भीतरी बुराइयों की तरफ़ से लोगों को आगाह रखने का संकल्प, हर तरह के शोषण का विरोध ..... अपनी इन खूबियों से प्रेमचंद खूब लोकप्रिय हो उठे।

प्रमेचंद का स्वभाव बहुत विनम्र था, किंतु उनमें स्वाभिमान कूट–कूटकर भरा था। दिखावा उन्हें बिलकुल पसंद नहीं था..... कुरता और धोती, 1920 के बाद गांधी टोपी अपना ली थी।

सरकारी नौकरी और स्वाभिमान में संघर्ष चलता ही रहता था। आखिर में जीत हुई स्वाभिमान की। 1920 में सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया और गाँव जाकर जम गए। कलम चलाकर 40–50 रूपये की फुटकर मासिक आमदनी होने लगी। बड़े संतोष और धीरज से वे दिन प्रेमचंद ने गुज़ारे।

1921 में काशी के नामी देशभक्त बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने 150 रुपये मासिक पर प्रेमचंद को 'मर्यादा' का संपादक बना लिया। पहले संपादक बाबू संपूर्णनंद असहयोग आंदोलन में गिरफ़्तार होकर जेल पहुँच गए थे। 'मर्यादा' को सँभालने के लिए किसी सुयोग्य संपादक की आवश्यकता थी।

1922 में संपूर्णानदं जी जेल से छूटे तो उन्हे 'मर्यादा' वाला काम वापस मिला। लेकिन बाबू शिवप्रसाद गुप्त प्रेमचंद को छोड़ना नहीं चाहते थे। काशी विद्यापीठ में उन्हें स्कूल विभाग का हेडमास्टर नियुक्त कर दिया।

डेढ़–दो वर्ष प्रेमचंद काशी विद्यापीठ में रहे होंगे। आगे चलकर उन्हें महसूस हुआ कि विद्यापीठ को पैसे की तंगी है। ऐसी स्थिति में वहाँ लदे रहना उन्हें ठीक नहीं जँचा। दूसरी बात यह भी थी कि प्रेमचंद स्वाधीनता–संग्राम में कभी जेल नही गए थे। विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय शिक्षण–संस्थाओं में जेल–यात्रा किसी शिक्षक के लिए साधारण योग्यता नहीं, विशेष योग्यता समझी जाती थी।

1930 में प्रेमचंद स्वयं राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़ना चाहते थे। सत्याग्रहियों की क़तार में शामिल होकर, पुलिस की लाठियों के मुकाबले डटना चाहते थे। किंतु जेल जाने का उनका मनोरथ अधूरा ही रह गया।

पत्नी ने सोचा ..... कमज़ोर हैं, अक्सर बीमार रहते हैं। इनको जेल नहीं जाने दूँगी। सो वे आगे बढ़ीं। सत्याग्रही महिलाओं की क़तार में शामिल हुईं। गिरफ़्तार होकर अपने जत्थे के साथ जेल पहुँच गईं।

प्रेमचंद मन मसोस कर रह गए। मजबूरी थी, पर तसल्ली थी। ''हर परिवार से एक आदमी को जेल जाना ही चाहिए.....'' उन दिनों यह भावना ज़ोर पकड़ चुकी थी।

यह दूसरी बात है कि वे कभी गिरफ़्तार नहीं हुए, कभी जेल न गए, मगर प्रेमचंद स्वाधीनता–संग्राम के ऐसे सेनापति थे जिनकी वाणी ने लाखों सैनिकों के हृदय में जोश भर दिया था। स्वाधीनता के लिए जनता की लड़ाई का समर्थन करते समय प्रेमचंद यह कभी नहीं भूले कि आज़ादी केवल एक व्यक्ति के जीवन को सुखमय नहीं बनाएगी, मुट्ठीभर आदमियों के लिए ही ऐशो–आराम नहीं लाएगी..... वह 'बहुजन–सुखाय, बहुजन हिताय' होगी।

1923 में 'सरस्वती प्रेस' चालू हुआ। प्रेमचंद की आज़ाद तबीयत को नौकरी भाती नहीं थी। स्वाधीन रहकर लिखने–पढ़ने का धंधा करना चाहते थे। प्रेस खोलते वक़्त उनके दिमाग़ में यही एक बात थी कि अपनी किताबें आप ही छापते रहेंगे। मगर प्रेमचंद अपने प्रेस को वर्षों तक नही चला सके, किताबों का प्रकाशन करके काग़ज़ और छपाई–बँधाई का खर्चा निकालना मुश्किल था।

1930 तक प्रेस की हालत ख़राब रही। फिर भी वह प्रेमचंद का लहू पी–पीकर किसी तरह चलता रहा। इसमें जो कुछ कसर थी, उसके 'हंस' और 'जागरण' ने पूरा कर दिया। घाटा, घाटा, घाटा और घाटा! कर्ज़, कर्ज़ और कर्ज़!

बार–बार निश्चय करते थे कि अब दुबारा नौकरी नहीं करेंगे, अपनी किताबों में गुज़ारे लायक रक़म निकल ही आएगी.....बार–बार जमकर प्रेस में बैठते थे, बार–बार पुराना कर्ज़ पटाकर नये सिरे से मशीन के पुर्ज़ों में तेल डालते थे.....काम बढ़ता था, परेशानियाँ बढ़ती थीं, बुढ़ापा भी उसी रफ़्तार से आगे बढ़ता जाता था।

पेट की बीमारियाँ हमेशा प्रेमचंद के पीछे पड़ी रहीं। लेकिन चिंता का रोग उनका सबसे बड़ा रोग था। परिवार बड़ा था, आमदनी कम। थोड़ी–बहुत कटौती करके शिवरानी जब भी कुछ बचातीं, उसे आप प्रेस के पेट में डाल देते।

पढ़ने–लिखने का सारा काम रात को करते थे। तंदुरुस्ती बीच–बीच में टूट जाती थी, दवा–दारू के लिए शिवरानी रुपये देतीं, तो वे रकम को भी प्रेस में खर्च कर डालते, फिर वैद्यों और हकीमों से सस्ती दवाएँ लेते रहते। आराम बिल्कुल नहीं करते थे। पूरी नींद सोते नहीं थे। खाना भी मामूली किस्म का खाते।

1936 के बाद दशा कुछ बदली ज़रूर, मगर प्रेमचंद का परिश्रम और भी बढ़ गया। उनका जीवन ऐसा दीप था जिसकी लौ मदधिम नही, तेज प्रकाश देने को मदबूर थी पर उस दीप में कभी पूरा–पूरा तेल नहीं डाला गया। लौ हमेशा बत्ती के रेशे को ही जलाती रही।

उनकी बेचैनी इसीलिए थी कि वे चाहते थे कि जीवन–दीप का प्रकाश दूर–दूर तक फैले, वक़्त पर फैले, अच्छी तरह फैले। अपनी सारी किताबें, अपना सारा साहित्य, अपने प्रेस में ही छपवाकर समूचे देश में फैला देना चाहते थे। किसानों, मज़दूरों, युवकों, विद्यार्थियों, स्त्रियों और अछूतों की दर्दनाक ज़िंदगी को आधार बनाकर जो कोई भी लिखे, सभी कुछ छापकर जनता को सजग–सचेत बना देने का संकल्प प्रेमचंद के अंदर हिलोरे ले रहा था। अधिक–से–अधिक लिखते जाना, अधिक–से–अधिक छापते जाना, अधिक–से–अधिक लोगों को जागरूक बनाते जाना..... शोषण, गुलामी, ढोंग, दंभ, स्वार्थ, रूढ़ि, अन्याय, अत्याचार इन सबकी जड़े खोद डालना और धरती को नई मानवता के लायक बनाना.....यही प्रेमचंद का उद्देश्य था।

1934 के बाद प्रेमचंद को लगने लगा कि अब वह दो–चार वर्ष से ज़्यादा नहीं जिएँगे, इससे उनके अंदर दिन–रात लिखने की, दिन–रात काम करने की भावना ज़ोर पकड़ती गई।

आजीवन संघर्षरत और अभावग्रस्त लेखक ने अपना स्वास्थ्य चौपट कर लिया। अंतिम दिनों में वे संतरे लेने लगे थे। पथ्य–परहेज़ पर भी थोड़ा–बहुत ध्यान दिया था, लेकिन अब तक तंदुरुस्ती बिल्कुल रूठ चुकी थी।

वे अच्छी तरह जानते थे कि दुबला–पतला, लक्कड़–सरीखा यह बीमार आदमी धनपतराय हो सकता है, प्रेमचंद कोई और होगा। प्रेमचंद कभी बीमार नहीं पड़ेगा। प्रेमचंद हमेशा स्वस्थ रहेगा। प्रेमचंद हमेंश ज़िंदा रहेगा। कहकहे लगाता रहेगा।

तभी तो हानि–लाभ की भावनाओं से निर्लिप्त रहकर प्रेमचंद अंत तक लिखते रहे।

नींद नहीं आती थी। बीमारी बढ़ गई थी। प्रेस जाना बंद था। फिर भी, आप घर वालों की नज़रें बचाकर उठ जाते और क़लम तेज़ी से चल पड़ती.....इतनी तेज़ी से कि जीवन समाप्त होने से पहले ही सब कुछ लिख देना चाहते थे।

'मंगलसूत्र' के बीसियों सफ़े प्रेमचंद ने अपनी मृत्युशय्या पर लिखे। 'महाजनी सभ्यता' और 'कफ़न' और प्रगतिशील लेखको की पहली कांफ्रेंस के लिए अध्यक्ष का भाषण..... काफ़ी कुछ उन्होंने हमें अपनी अंतिम क्षणों तक दिया।

''मैं मज़दूर हूँ, जिस दिन न लिखूँ, उस दिन मुझे रोटी खाने का अधिकार नहीं है''.... ... ये शब्द उनके होठों के केवल आभूषण ही न थे बल्कि सच थे।

फ़िल्मों के द्वारा जनता तक अपने संदेशों को प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने और साथ ही अभावों से मुक्ति पाने के लिए वे बंबई गए। किंतु धनपत को धनपतियों का सहवास और बंबई का प्रवास रास नहीं आया, वह उनकी अभिलाषाओं की पूर्ति नहीं कर पाया।

फिर वही प्रेस। फिर वही प्रकाशन, फिर वही घिसाई। रातों–रात जागकर प्रेमचंद ने 'गोदान' पूरा किया।

'गोदान' छपकर निकल आया था कि उनकी लेखनी 'मंगलसूत्र' पर तेज़ी से चल

रही थी।

मरते–मरते प्रेमचंद इस उपन्यास का पूरा करना चाहते थे। चार ही अध्याय लिख पाए थे..... खाना नहीं हज़म होता था। खून की कै करने लगे थे। पेट में पानी भर गया था। दूध, बार्ली, फलों का रस तक नही पचा पाते थे। पर इतने पर भी काम करने की ललक पीछा नही छोड़ती थी, लिखने की अभिलाषा शांत नहीं हो पाती थी, देश को अपने जीवन, अनुभव और अपने विचारों की अंतिम बूँद तक दे जाने की इच्छा चैन नहीं लेने देती थी।

8 अक्तूबर, 1936, रात का पिछला पहर। प्रेमचंद ने हमेशा के लिए अपनी आँखें मूँद लीं। अभी साठ के भी नहीं हुए थे। 56 वर्ष की आयु क्या कोई लंबी आयु थी?

संयोग तो देखिए, विश्व के तीन महान् उपन्यासकारों.....प्रेमचंद, मैंक्सिम गोर्की और शरत्चंद्र.....का देहावसान उसी वर्ष हुआ।

—नागार्जुन

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1. बचपन में प्रेमचंद घर से भागकर खेंतों, बगीचों और मैदानों में क्यों चले जाते थे?
   - क. वे घर की चारदिवारी में बँधकर बैठता नहीं चाहते थे?
   - ख. वे स्वभाव से चंचल और खिलाड़ी थे।
   - ग. वहाँ जाकर अपनी कहानियों और उपन्यासों के लिए कथानक सोचते थे।
   - घ. वे घर पर सौतेली माँ से परेशान हो जाते थे।
   - ङ. खुली हवा में घूमना उन्हें बेहद पसंद था।

2. प्रेमचंद को महान् लेखक बनाने में निम्नांकित में से सबसे अधिक योगदान किसका था?
   - क. तीव्र लगन
   - ख. उनका युग
   - ग. घोर ग़रीबी
   - घ. हिंदी में अच्छे कथाकारों की कमी

3. "लगन है..... हैं।" "लगता है, ...लगाएँगे।"
   —इन पंक्तियों से प्रेमचंद के स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है?
4. प्रेमचंद के बचपन की कठिनाइयों का वर्णन करें।
5. "उनकी दूसरी पत्नी शिवरानी उनके लिए वरदान जैसी साबित हुई।" कैसे?
6. स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेमचंद के योगदान जैसी साबित हुई।" कैसे?
7. प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कोई तीन विशेषताएँ उनके जीवन की उपयुक्त घटनाएँ उद्घृत करके बताइए।

8. प्रेमचंद के साहित्य का संक्षिप्त परिचय दें।
9. प्रेमचंद की असामयिक मृत्यु के निम्नांकित कारण हो सकते हैं। तुम्हारी दृष्टि से सबसे प्रमुख कारण क्या था, तर्कपूर्ण उत्तर दें।
   - क. बिना विश्राम किए वे दिन–रात लिखते रहते थे।
   - ख. उनका बचपन घोर ग़रीबी और उपेक्षा में बीता।
   - ग. उन्हें कभी पौष्टिक आहार नहीं मिला।
   - घ. वे आजीवन आर्थिक संकट से जूझते रहे।
   - ङ. उनका इलाज सही ढंग से नहीं हुआ।

भाषा–अध्ययन

1. जिस प्रकार लेखक ने नपे–तुले शब्दों में प्रेमचंद का शब्दचित्र अंकित किया है वैसे ही किसी कवि या लेखक का शब्दचित्र अंकित करें।
   जैसे–प्रसाद, पंत, निराला, दिनकर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल आदि।
2. निम्नांकित वाक्य–युग्मों से जो वाक्य प्रभावशाली लगे वैसा ही एक–एक वाक्य लिखें:–
   - क. पिता का नाम था अजायब राय।
     पिता का नाम अजायव राय था।
   - ख. फिर डर किस बात का?
     मुझे किसी बात का डर न था।
   - ग. वहीं एक सौम्य पुरुष से, जो एक छोटे–से स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, उनका परिचय हुआ।
     –वहीं एक सौम्य पुरुष से उनका परिचय हुआ, जो एक छोटे–से स्कूल म प्रधानाध्यापक थे।

योग्यता–विस्तार

1. प्रेमचंद का कोई उपन्यास पढ़ें और उसका सारांश तीन पृष्ठों में लिखें तथा अपने साथियों को सुनाएँ।
2. प्रेमचंद के उपन्यासों और उनकी बहुर्चित कहानियों की सूची बनाएँ।
3. प्रेमचंद पर अधिक जानकारी के लिए निम्नांकित पुस्तकें पठनीय हैं:
   - क. प्रेमचंद घर में
   - ख. क़लम का सिपाही
   - ग. प्रेमचंद (एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन)
   - घ. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित नागार्जुन द्वारा लिखित प्रेमचंद की जीवनी।

16

बाज और साँप

समुद्र के किनारे उंचे पर्वत की अंघेरी गुफा में एक साँप रहता था। समुद्र की तूफानी लहरें धूप में चमकतीं, झिलमिलातीं और दिन भर पर्वत की चटानों से टकराती रहती थीं।

पर्वत की अँमोरी घाटियों में एक नदी भी बहती थी। अपने रास्ते पर बिखरे पत्थरों को तोड़ती, शोर मचाती हुई यह नदी बड़े शोर से समुद्र की ओर लपकती जाती थी। जिस जगह पर नदी और समुद्र का मिलाप होता था, वहाँ लहरें दूध के झाग–सी सफेद दिखाई देती थीं।

अपनी गुफा में बैठा हुआ साँप सब कुछ देखा करता लहरों का गर्जन, आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, टेढ़ी–मेढ़ी बल खाती हुई नदी की गुस्से से भरी आवाज़ें। वह मन ही मन खुश होता था कि इस गर्जन–तर्जन के होते हुए भी वह सुखी और सुरक्षित है। कोई उसे दुख नहीं दे सकता। सबसे अलग, सबसे दूर, वह अपनी गुफा का स्वामी है। न किसी से लेना, न किसी से देना। दुनिया की भाग–दौड़, छीना–झपटी से वह दूर है। साँप के लिए यही सबसे बड़ा सुख था।

एक दिन एकाएक आकाश में उड़ता हुआ खून से लथपथ एक बाज साँप की उस गुफा में आ गिरा। उसकी छाती पर कितने ही शख्मों वेफ निशान थे, पंख खून से सने थे और वह अधमरा–सा ज़ोर–ज़ोर से हाँफ रहा था। ज़मीन पर गिरते ही उसने एक दर्द भरी चीख मारी और पंखों को फड़फड़ाता हुआ धरती पर लोटने लगा। डर से साँप अपने कोने में सिकुड़ गया। किंतु दूसरे ही क्षण उसने भाँप लिया कि बाज जीवन की अंतिम साँसें गिन रहा है और उससे डरना बेकार है।

यह सोचकर उसकी हिम्मत बँधी और वह रेंगता हुआ उस घायल पक्षी के पास जा पहुँचा। उसकी तरफ कुछ देर तक देखता रहा, फिर मन ही मन खुश होता हुआ बोला–

"क्यों भाई, इतनी जल्दी मरने की तैयारी कर ली?

शरीर में ताकत रही, कोई सुख ऐसा नहीं बचा जिसे न भोगा हो। दूर–दूर तक उड़ानें भरी हैं, आकाश की असीम उँचाइयों को अपने पंखों से नाप आया हू!। तुम्हारा बड़ा दुर्भाग्य है कि तुम ज़िंदगी भर आकाश में उड़ने का आनंद कभी नहीं उठा पाओगे।

सांप बोला– आकाश! आकाश को लेकर क्या मैं चाटूँगा! आकाश में आखिर रखा क्या है?क्या मैं तुम्हारे आकाश में रेंग सकता हू!। ना भाई, तुम्हारा आकाश तुम्हें ही मुबारक, मेरे लिए तो यह गुफा भली। इतनी आरामदेह और सुरक्षित जगह और कहाँ होगी?

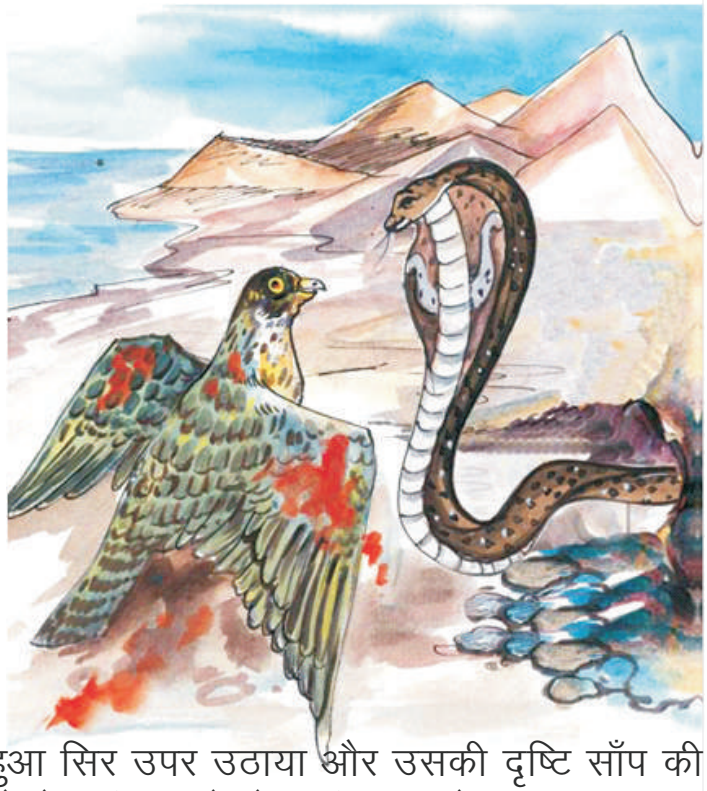

सांप मन ही मन बाश की मूर्खता पर हँस रहा था। वह सोचने लगा कि आखिर उड़ने और रेंगने के बीच कौन–सा भारी अंतर है। अंत में तो सबके भाग्य में मरना ही लिखा है शरीर मिट्टी का है, मिट्टी में ही मिल जाएगा।

अचानक बाज ने अपना झुका हुआ सिर उपर उठाया और उसकी दृष्टि साँप की गुफा के चारों ओर घूमने लगी। चटानों में पड़ी दरारों से पानी गुफा में टपक रहा था। सीलन और अँमोरे में डूबी गुफा में एक भयानक दुर्गंध फैली हुई थी, मानो कोई चीज़ वर्षो से पड़ी–पड़ी सड़ गई हो।

बाज के मुँह से एक बड़ी शोर की करुण चीख फूट पड़ी आह! काश, मैं सिंफ एक बार आकाश में उड़ पाता।

बाज की ऐसी करुण चीख सुनकर साँप कुछ सिटपिटा–सा गया। एक क्षण के लिए उसके मन में उस आकाश के प्रति इच्छा पैदा हो गई जिसके वियोग में बाज तना व्याकुफल होकर छटपटा रहा था। उसने बाज से कहा यदि तुम्हें स्वतंत्रता इतनी प्यारी है तो इस चान के किनारे से पर क्यों नहीं उड़ जाने की कोशिश करते। हो सकता है कि तुम्हारे पैरों में अभी इतनी ताकत बाकी हो कि तुम आकाश में उड़ सको। कोशिश करने में क्या हर्ज है?

बाज में एक नयी आशा जग उठी। वह दूने उत्साह से अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चटान के किनारे तक खींच लाया। खुले आकाश को देखकर उसकी आँखें चमक उठीं। उसने एक गहरी, लंबी साँस ली और अपने पंख फैलाकर हवा में कूद पड़ा।

किन्तु उसके टूटे पंखों में इतनी शक्ति नहीं थी कि उसके शरीर का बोझ सँभाल सवें। पत्थर–सा उसका शरीर लुढ़कता हुआ नदी में जा गिरा। एक लहर ने उठकर उसके पंखों पर जमे खून को धो दिया, उसके थके माँदे शरीर को सफेद पन से ढक दिया, फिर अपनी गोद में समेटकर उसे अपने साथ सागर की ओर ले चली।

लहरें चटानों पर सिर घुनने लगीं मानो बाज की मृत्यु पर आँसू बहा रही हों। घीरे–घीरे समुद्र के असीम विस्तार में बाज आँखों से ओझल हो गया। चान की खोखल में बैठा हुआ साँप बड़ी देर तक बाज की मृत्यु और आकाश के लिए उसके प्रेम के विषय में सोचता रहा।

आकाश की असीम शून्यता में क्या ऐसा आकर्षण छिपा है जिसके लिए बाज ने अपने प्राण गँवा दिए? वह खुद तो मर गया लेकिन मेरे दिल का चैन अपने साथ ले गया। न जाने आकाश में क्या खजाना रखा है?एक बार तो मैं भी वहाँ जाकर उसके रहस्य का पता लगाउँगा चाहे कुछ देर के लिए ही हो। कम से कम उस आकाश का स्वाद तो चख लूँगा।

यह कहकर साँप ने अपने शरीर को सिकोड़ा और आगे रेंगकर अपने को आकाश की शून्यता में छोड़ दिया। धूप में क्षण भर के लिए साँप का शरीर बिजली की लकीर–सा चमक गया।

किंतु जिसने जीवन भर रेंगना सीखा था, वह भला क्या उड़ पाता?नीचे छोटी–छोटी चटानों पर धप्प से साँप जा गिरा। ईश्वर की कृपा से बेचारा बच गया, नहीं तो मरने में क्या कसर बाकी रही थी। साँप हँसते हुए कहने लगा– सो उड़ने का यही आनंद है भर पाया मैं तो! पक्षी भी कितने मूर्ख हैं। मारती के सुख से अनजान रहकर आकाश की उँचाइयों को नापना चाहते थे। किंतु अब मैंने जान लिया कि आकाश में कुछ नहीं रखा। केवल ढेर–सी रोशनी के सिवा वहाँ कुछ भी नहीं, शरीर को सँभालने के लिए कोई स्थान नहीं, कोई सहारा नहीं। फिर वे पक्षी किस बूते पर इतनी डींगें हाँकते हैं, किसलिए धरती के प्राणियों को इतना छोटा समझते हैं। अब मैं कभी धोखा नहीं खाउँगा, मैंने आकाश देख लिया और खूब देख लिया। बाज तो बड़ी–बड़ी बातें बनाता था, आकाश के गुण गाते थकता नहीं था। उसी की बातों में आकर मैं आकाश में कूदा था। ईश्वर भला करे, मरते–मरते बच गया। अब तो मेरी यह बात और भी पक्की हो गई है कि अपनी खोखल से बड़ा सुख और कहीं नहीं है। धरती पर रेंग लेता हूँ, मेरे लिए यह बहुत कुछ है। मुझे आकाश की स्वच्छंदता से क्या लेना–देना?न वहाँ छत है, न दीवारें हैं, न रेंगने के लिए ज़मीन है। मेरा तो सिर चकराने लगता है। दिल काँप–काँप जाता है। अपने प्राणों को खतरे में डालना कहाँ की चतुराई है?

साँप सोचने लगा कि बाज अभागा था जिसने आकाश की आज़ादी को प्राप्त करने में अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी।

किन्तु कुछ देर बाद साँप के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसने सुना, चटानों के नीचे से एक धधुर, रहस्यमय गीत की आवाश उठ रही है। पहले उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। कितु कुछ देर बाद गीत के स्वर अधिक साफ़ सुनाई देने लगे। वह अपनी गुफ़ा से बाहर आया और चट्टान से नीचे झटकने लगा।

सूरज की सुनहरी किरणों में समुद्र का नीला जल झिलमिला रहा था। चटानों को भगोती हुई समुद्र की लहरों में गीत के स्वर फूट रहे थे। लहरों का यह गीत दूर–दूर तक गूँज रहा था।

साँप ने सुना, लहरें मधुर स्वर में गा रही हैं।

हमारा यह गीत उन साहसी लोगों के लिए है जो अपने प्राणों को हथेली पर रखे हुए घूमते हैं।

चतुर वही है जो प्राणों की बाशी लगाकर ज़िदगी के हर खतरे का बहादुरी से सामना करे।

ओ निडर बाज! शत्रुओं से लड़ते हुए तुमने अपना कीमती रक्त बहाया है। पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक–एक बूँद ज़िदगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी।

तुमने अपना जीवन बलिदान कर दिया किंतु फिर भी तुम अमर हो। जब कभी साहस और वीरता के गीत गाए जाएँगे, तुम्हारा नाम बड़े गर्व और श्रण से लिया जाएगा।

हमारा गीत ज़िंदगी के उन दीवानों के लिए है जो मर कर भी मृत्यु से नहीं डरते।

–निर्मल वर्मा

शीर्षक और नायक

प्रश्न-अभ्यास

लेखक ने इस कहानी का शीर्षक कहानी के दो पात्रों के आधार पर रखा है। लेखक ने बाज और साँप को ही क्यों चुना?आपस में चर्चा कीजिए।

कहानी से

1. घायल होने के बाद भी बाज ने यह क्यों कहा, मुझे कोई शिकायत नहीं है। विचार प्रकट कीजिए।
2. बाज ज़िंदगी भर आकाश में ही उड़ता रहा फिर घायल होने के बाद भी वह

उड़ना क्यों चाहता था?

3. साँप उड़ने की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था। फिर उसने उड़ने की कोशिश क्यों की?
4. बाज के लिए लहरों ने गीत क्यों गाया था?
5. घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा?

कहानी से आगे

1. कहानी में से वे पंक्तिया! चुनकर लिखिए जिनसे स्वतंत्राता की प्रेरणा मिलती हो।
2. लहरों का गीत सुनने के बाद साँप ने क्या सोचा होगा?क्या उसने फिर से उड़ने की कोशिश की होगी? अपनी कल्पना से आगे की कहानी पूरी कीजिए।
3. क्या पक्षियों को उड़ते समय सचमुच आनंद का अनुभव होता होगा या स्वाभाविक कार्य में आनंद का अनुभव होता ही नहीं?विचार प्रकट कीजिए।
4. मानव ने भी हमेशा पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा की है। आज मनुष्य उड़ने की इच्छा किन सामानों से पूरी करता है।

अनुमान और कल्पना

यदि इस कहानी के पात्रा बाज और साँप न होकर कोई और होते तब कहानी कैसी होती?अपनी कल्पना से लिखिए।

भाषा की बात

1. कहानी में से अपनी पसंद के पाँच मुहावरे चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. 'आरामदेह' शब्द में 'देह' प्रत्यय है। यहा! 'देह' 'देनेवाला' के अर्थ में प्रयुक्त है। देनेवाला के अर्थ में 'द', 'प्रद', 'दाता', 'दाई' आदि का प्रयोग भी होता है, जैसे – सुखद, सुखदाता, सुखदाई, सुखप्रद। उपर्युक्त समानार्थी प्रत्ययों को लेकर दो–दो शब्द बनाइए।

शब्दार्थ

शिखर	–	पहाड़ की चोटी
सरिता	–	नदी
सिटपिटाना	–	भय या घबड़ाहट से सहम जाना
असीम	–	जिसकी कोई सीमा न हो, अपार
खोखल	–	खोखली जगह, बड़ा छेद

17

टोपी

एक थी गवरइया ;गौरैयाद्ध और एक था गवरा ;नर गौरैयाद्ध। दोनों एक दूजे के परम संगी। जहाँ जाते, जब भी जाते, साथ ही जाते। साथ हँसते, साथ ही रोते, एक साथ खाते–पीते, एक साथ सोते। भिनसार होते ही खोंते से निकल पड़ते दाना चुगने और झुटपुटा होते ही खोंते में आ घुसते। थकान मिटाते और सारे दिन के देखे–सुने में हिस्सेदारी बटाते। एक शाम गवरइया बोली, आदमी को देखते हो? कैसे रंग–बिरंगे कपड़े पहनते हैं! कितना फबता है उन पर कपड़ाँ खाक फबता है!

गवरा तपाक से बोला, कपड़ा पहन लेने के बाद तो आदमी और बदसूरत लगने लगता है। लगता है आज लटजीरा चुग गए हो? गवरइया बोल पड़ी। कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती खूबसूरती ढँक जो जाती है।

गवरा बोला, अब तू ही सोच! अभी तो तेरी सुघड़ काया का एक–एक कटाव मेरे सामने है, रोंवें–रोंवें की रंगत मेरी आँखों में चमक रही है। अब अगर तू मानुस की तरह खुद को सरापा ढँक ले तो तेरी सारी खूबसूरती ओझल हो जाएगी कि नहीं?

कपड़े केवल अच्छा लगने के लिए नहीं, गवरइया बोली, मौसम की मार से बचने के लिए भी पहनता है आदमी। तू समझती नहीं। गवरा हँसकर बोला, कपड़े पहन–पहनकर जाड़ा–गरमी–बरसात सहने की उनकी सकत भी जाती रही है। ...और इस कपड़े में बड़ा लफड़ा भी है। कपड़ा पहनते ही पहननेवाले की औकात पता चल जाती है ... आदमी–आदमी की हैसियत में भेद पैदा हो जाता है।

फिर भी आदमी कपड़ा पहनने से बाज नहीं आता। गवरइया बोली। नित नए–नए लिबास सिलवाता रहता है। यह निरा पांगलपन है। गवरा बोला, आदमी तो लिबास से पफकत लाज ही नहीं ढँकता, हाथ–पैर जो चलने–फिरने, काम करने के वास्ते हैं, उन्हें भी दस्ताने

और मोजे से ढँक लेता है। सिर पर लटें हैं, उन्हें भी टोपी से ढँक लेता है। अपन तो नंगे ही भले।

उनके सिर पर टोपी कितनी अच्छी लगती है। गवरइया बोली, मेरा भी मन टोपी पहनने का करता है। टोपी तू पाएगी कहाँ से ? गवरा बोला, टोपी तो आदमियों का राजा पहनता है। जानती है, एक टोपी के लिए कितनों का टाट उलट जाता है। जरा–सी चूक हुई नहीं कि टोपी उछलते देर नहीं लगती। अपनी टोपी सलामत रहे, इसी फिकर में कितनों को टोपी पहनानी पड़ती है। ...मेरी मान तो तू इस चक्कर में पड़ ही मत।

गवरा था तनिक समझदार, इसलिए शक्की। जबकि गवरइया थी जिपी और धुन की पक्की। ठान लिया सो ठान लिया, उसको ही जीवन का लक्ष्य मान लिया। कहा गया है जहाँ चाह, वहीं राह। मामूल के मुताबिक अगले दिन दोनों घूरे पर चुगने निकले।

चुगते–चुगते उसे रुई का एक फाहा मिला। मिल गया... मिल गया... मिल गया... गवरइया मारे खुशी के घूरे पर लोटने लगी। अरे... क्या मिल गया, रैं गवरे ने चिहाकर पूछा।

मिल गया... मिल गया... टोपी का जुगाड़ मिल गया...गवरइया ने गवरे के सामने रुई का पफाहा मार दिया। तेरे जैसा ही एक बावरा और था। गवरा बोला, रास्ता चलते–चलते उसे अचानक एक दिन पड़ा हुआ चाबुक मिल गया। चाबुक था बड़ा उम्दा और लचकदार। किसी घुड़सवार के हाथ से छूटकर गिर गया होगा। चाबुक हाथ लगते ही वह बावरा चीखने लगा चाबुक तो मिल गया, बाकी बचा तीन–घोड़ा–लगाम–जीन'। अब ये तीनों तो रास्ते में पड़े मिलने से रहे। सब काम–धाम छोड़ वह बावरा ताउम्र यह रटता रहा 'बाकी बचा तीन–घोड़ा–लगाम–जीन'। गवरा उसे समझाते हुए बोला, इस रुई के पफाहे से लेकर टोपी तक का सफर... तुझे कुछ अता–पता है?

बस देखते जाओ... अब कैसे बनती है टोपी। गवरइया रुई का फाहा लिए एक धुनिया के पास चली गई और बड़े मनुहार से बोली, धुनिया भइया–धुनिया भइया! इस रुई के फाहे को धुन दो। धुनिया बेचारा बूढ़ा था। जाड़े का मौसम था। उसके तन पर वर्षो पुरानी तार–तार हो चुकी एक मिर्जई पड़ी हुई थी। वह काँपते हुए बोला, तू जाती है कि नहीं! देखती नहीं, अभी मुझे राजा जी के लिए रजाई बनानी है।

एक तो यहाँ का राजा ऐसा है जो चाम का दाम चलाता है। उपर से तू आ गई फोकट की रुई धुनवाने।
उज्र न करो भइएँ गवरइया
बोली, मैं तुम्हें पूरी उजरत दूँगी।
इसे धुन दो, भइया! आधा तू ले ले, आधा मैं ले लूँगी।
धुनिए को अपनी ज़िदगी में आज तक इतनी खरी मजूरी कभी न मिली थी। सोलह आने में आठ आने मजूरी तो इसके लिए सपना थी।
वह झट तैयार हो गया।
'घर्र–चों, घर्र–चों' उसकी ताँती बज उठी। उसने बड़े मन से रुई मुनी, फ और आधा गवरइया ने।

इससे उत्साहित गवरा–गवरइया एक कोरी के यहाँ गए और कहने लगे, कोरी भइया–कोरी भइया, इस धुनी रुई से सूत कात दो। कोरी की कमर झुकी हुई थी। उसने बदन पर धज्जी–धज्जी हो चुका एक मुस्सा डाल रखा था। वह बड़ी अनिच्छा से बोला, तुम लोग यहाँ से भागते हा कि नहीं। देखते नहीं, अभी मुझे राजा जी के अचकन के लिए सूत कातने हैं। मुझे फुर्सत नहीं है मुल्त में मल्लार गाने की।
भईया, इस मुलुक में सब काम क्या राजा जी के लिए ही होता है?
गवरइया अचरज से बोली।
तू किस मुलुक से आई है?
कोरी ने उसे भर आँख देखा, फ्जानती नहीं यहाँ का चलन... खट मरे बरमा, बैठा खाय तुरंग। यहाँ सब काम राजा जी के नाम पर और राजा जी के लिए होता है। राजा जी के लगुए–भगुए भी तो बहुत हैं... इसी में उनका भी काम होता है।
मुकरो मत, भइया! हम तुम्हें माकूल मुआवजा देंगे। गवरइया बोल पड़ी, इसे कात दो... आधा तुम ले लो, आधा मैं ले लूँगी।
कोरी भी तैयार हो गया। इतनी वाजिब मजूरी पर काम न करना मूर्खता होती।
'तन्न... तन्न' करके उसकी तकली चरखी ताता–थैया करने लगी। काफी महीन और लच्छेदार सूत कात दिए उसने।
कदम–कदम पर मिलते कामगारों के सहयोग ने गवरइया को आगे बढ़ने पर उकसा

दिया। इसके बाद वे दोनों एक बुनकर के पास गए और इसरार करने लगे, बुनकर भइया, बुनकर भइया, इस कते सूत से कपड़ा बुन दो। बुनकर इन्हें अगबग होकर देखने लगा, फ्हटते हो कि नहीं यहाँ से! देखते नहीं, अभी मुझे राजा जी के लिए बागा बुनना है। अभी थोड़ी देर बाद ही राजा जी के कारिंदे हाजिर हो जाए!गे। साव करे भाव तो चबाव करे चाकर।इतना कहकर बुनकर अपने काम में मशगूल हो गया।

इसे बुन दे भइयाँ गवरइया ने साहस सँजोकर कहा, फ्हम सेंत–मेंत का काम नहीं करवाते। इसे बुन दे और आधा तू ले ले, आधा हम ले लेंगे। बुनकर ने देखा कि सौदा बुरा नहीं है। वह तैयार हो गया। सूत अपनी ओर खींचकर ताना–बाना पसार दिया। उसका करघा चलने लगा, ढरकी ढुलकने लगी।

थोड़ी ही देर में उसने काफ़ी गफश और दबीज कपड़ा बुन दिया। आधा उसने ले लिया और आधा इन्होंने। गवरइया ने तीन चौथाई मंज़िल मार ली थी। कपड़ा लिए–दिए वह एक दर्जी के पास जा पहुँची, दर्जी भइया–दर्जी भइया, इसकी टोपी सिल दो।
खिसकती हो कि नहीं यहाँ से। दर्जी रोष से बोला, देखते नहीं, राजा जी की सातवीं रानी से नौ बेटियों के बाद दसवाँ बेटा पैदा हुआ है। अब उस दस रतन के लिए मुझे ढेरों झब्बे सिलने हैं। दर्जी ने माथे का पसीना पोंछते हुए ठंडी आह भरी, कुछ देना, न लेना.....

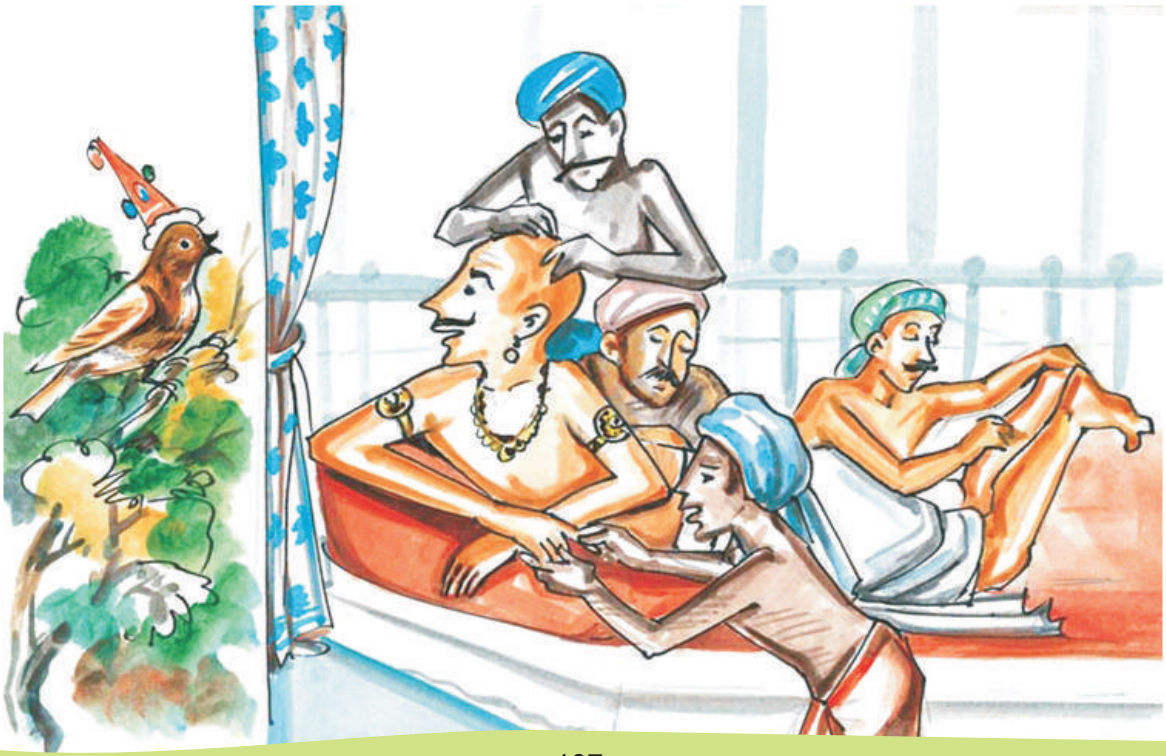

भर माथे पसीना। हम तो भइए, बेगार में कुछ करवाते नहीं।गवरइया बोली, इस बुने कपड़े की टोपी सिल दे। बल्कि दो टोपियाँ सिल दे। एक तू ले ले, एक हम ले लेंगे। मुँहमाँगी मजूरी पर कौन मूजी तैयार न होता। 'कच्च–कच्च' उसकी कैंची चल उठी और चूहे की तरह 'सर्र–सर्र' उसकी सूई कपड़े के भीतर–बाहर होने लगी।

बड़े मनोयोग से उसने दो टोपियाँ सिल दीं। खुश होकर दर्जी ने अपनी ओर से एक टोपी पर पाँच पुँफदने भी जड़ दिए। पुँफदनेवाली टोपी पहनकर तो गवरइया जैसे आपे में न रही। डेढ़ टाँगों पर ही लगी नाचने, पुफदक–पुफदककर लगी गवरा को दिखाने, देख मेरी टोपी सबसे निराली...पाँच पुँफदनेवाली।

वाकई तू तो रानी लग रही है।गवरे को भी आखिरकार कहना पड़ा।

फ्रानी, नहीं, राजा कहो, मेरे राजा! गवरइया उ!फचा उड़ने लगी, फ्अब कौन राजा मेरा मुकाबला करेगा।

टोपी पहनते ही उसके मन में एक नए हुलस ने शोर मारा कि क्यों न इस मुलुक के राजा का भी एक बार जायजा लिया जाए जिसके लिए इने सारे काम होते हैं। उड़ते–उड़ते वह राजा वेफ महल के वंफगूरे पर जा बैठी।

उसी वक्त राजा अपने चौबारे पर टहलुओं से खुली माूप में पुफलेल की मालिश करवा रहा था। राजा उस वक्त अमानंगा बदन और नंगे सिर था। एक टहलुआ सिर पर चंपी कर रहा था, तो दूसरा हाथ–पाँव की उँगलियाँ पफोड़ रहा था, तो तीसरा पीठ पर मुक्की मार रहा था तो चौथा च्पडली पर गुपी काढ़ रहा था।

गवरइया वंफगूरे पर से ही चिल्लाई, फ्मेरे सिर पर टोपी, राजा वेफ सिर पर टोपी नहीं... राजा के सिर पर टोपी नहीं।मालिश करवाते राजा की नशर गवरइया से टकरा गई। गवरइया के सिर पर पु!फदनेदार टोपी देखकर उसकी अकल चकरा गई। वह तो लगातार रटे जा रही थी, फ्मेरे सिर पर टोपी, राजा वेफ सिर पर टोपी नहीं। फ्अरे कोई मेरी टोपी लाओ... जरा जल्दी। राजा दोनों हाथों से अपना सिर ढँकते हुए चिल्लाया।

टोपी आ गई। राजा ने झट पहन भी ली, देख री फदगुपी। मेरी टोपी में पाँच पुँफदने, गवरइया ने अब दूसरा ही राग अलापना शुरू कर दिया। फ्राजा की टोपी में एक भी नहीं... मेरी टोपी में पाँच पुफदने, राजा की टोपी में पुँफदने नहीं।

राजा को बेहद हेठी महसूस हुई। इस मुलुक के महाबली राजा के सामने एक चिड़िया की यह मजाल! वह बुरी तरह बिगड़ गया, फ्इस पफदगुपी की गर्दन मसल दो... पखने नोच लो... सिपाहियों, देर न करो। फ्खमा करें महाराज! मंत्री ने हाथ जोड़ दिए, फ्मच्छर मारकर हाथ क्यों गंदा करना! अपने आप चली जाएगी। तब राजा सिपाहियों से बोला, यह ऐसे नहीं मानेगी। इसकी टोपी छीन ले आओ... उसे मैं पैरों से ठोकर मारूँ गा। एक सिपाही ने गुलेल मारकर गवरइया की टोपी नीचे गिरा दी, तो दूसरे सिपाही ने झट वह टोपी लपक ली और राजा के सामने पेश कर दिया। राजा टोपी को पैरों से मसलने ही जा

रहा था कि उसकी खूबसूरती देखकर दंग रह गया। कारीगरी के इस नायाब नमूने को देखकर वह जड़ हो गया मेरे राज में मेरे सिवा इतनी खूबसूरत टोपी दूसरे के पास कैसे पहुँची। सोचते हुए राजा उसे उलट–पुलटकर देखने लगा।
इतनी नगीना टोपी इस मुलुक में बनाई किसने?राजा के मन में खयाल आया। अब तो उस हुनरमंद कारीगर की खोज होने लगी। राजा चाहे और पता न चले!
गिरते–पड़ते दर्जी हाज़िर हुआ, दुहाई अन्नदाता। इतनी बढ़िया टोपी तुमने कभी हमारे लिए क्यों नहीं बनाई? मेघों की गड़गड़ाहट की मानिंद राजा की आवाज़ निकली।
दुहाई अन्नदाता!
हमें दुहाई नहीं... वजह बताओ।
कपड़ा बहुत उम्दा था सरकार! एकदम गपफश और दबीज।
ऐसा उम्दा कपड़ा किसने बुना?नाग की मानिंद राजा फूँक मारने लगा।
गिरते–पड़ते बुनकर हाजिर हुआ, माफी बख्शें, सरकार।
माफ़ी नहीं... वजह बताओ।
सूत बड़ा उम्दा था सरकार। एकदम महीन और लच्छेदार।
इतना महीन सूत किसने काता? शेर की मानिंद राजा ने दहाड़ मारी।

गिरते–पड़ते कोरी हाजिर हुआ, जान बख्शें, महाराज!
जान नहीं... वजह बताओ।
रुई बड़ी बेहतरीन थी, सरकार! एकदम बादलों की तरह धुनी हुई। इतनी बेहतरीन रुई किसने धुनी? बिजली की तरह राजा की आवाज कड़की।
हाँफते–छाती पीटते मुनिया हाजिर हुआ, क्षमा अन्नदाता!
क्षमा नहीं... वजह बताओ। राजा गुस्से से काँप रहा था, तुम चारों ने मिलकर इस गवरइया का काम किया... हमारे लिए आज तक ऐसा काम क्यों नहीं किया?आपके लिए भी किया है, सरकार।मुनिए ने जमीन पर लेटकर कहा, आगे भी आपके लिए करेंगे, सरकार? हमारे लिए अब तक जो काम हुआ है, उसमें इतनी नपफासत क्यों नहीं थी? अभय दान दें, तो बोलू!, मुनिया बोला।
चलो दिया, राजा बोले, अब बताओ...। महाराज! इस गवरइया ने जो भी काम करवाया उसमें आधा हिस्सा दे देती थी। जिसके पास बहुत कुछ है, वह कुछ भी नहीं देता। इसके पास कुछ भी नहीं था फिर भी यह आधा दे देती थी। इसीलिए इसके काम में अपने–आप नपफासत आती गई, सरकार। मुनिया दंडवत पर दंडवत किए जा रहा था।

देख ले–देख ले, राजा! ...आँख में अँगुली डालकर देख ले। इसके लिए पूरे मोल चुकाए हैं। बेगार की नहीं है यह। गवरइया फिर चिल्लाने लगी, यह राजा तो वंफगाल

है। निरा वंफगाल। इसका मान घट गया लगता है। इसे टोपी तक नहीं जुरती... तभी तो इसने मेरी टोपी छीन ली। राजा तो वाकई अकबका गया था। एक तो तमाम कारीगरों ने उसकी मदद की थी। दूसरे, इस टोपी के सामने अपनी टोपी की कमसूरती। तीसरे, खजाने की खुलती पोल। इस पक्षी को कैसे पता चला कि मान घट गया है? तमाम बेगार करवाने, बहुत सख्ती से लगान वसूलने के बावजूद राजा का खजाना खाली ही रहता था। इतना ऐशोआराम, इतनी लशकरी, इतने लवाजिमे का बोझ खजाना

सँभाले भी तो कैसे!
तमाम लोग निकल आए थे... यह अनोखा तमाशा देखने।
मंत्री ने हौले से कहा, यह मुँहफट तो महाराज को बेपरदा ही करके दम लेगी।
राजा तो खुद घबरा रहा था, झट से बोल पड़ा, इसकी टोपी वापस कर दो।
सिपाहियों ने कहना माना। टोपी वापस वंफगूरे की ओर हवा में उछाल दी गई।
गवरइया ने फिर से टोपी पहन ली और उड़–उड़कर कहने लगी, यह राजा तो डरपोक है। निरा डरपोक! मुझसे डर गया। तभी तो इसने मेरी टोपी लौटा दी।
कौन इस मुँहफट के मुँह लगे?क्यों मंत्री जी! कहकर राजा ने अपनी टोपी कसकर पकड़ ली।

प्रश्न–अभ्यास

कहानी से

1. गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला?
2. गवरइया और गवरे की बहस के तर्को को एकत्र करें और उन्हें संवाद के रूप में लिखें।
3. टोपी बनवाने के लिए गवरइया किस किस के पास गई? टोपी बनने तक के एक–एक कार्य को लिखें।
4. गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच पुँफदने क्यों जड़ दिए?

कहानी से आगे

1. किसी कारीगर से बातचीत कीजिए और परिश्रम का उचित मूल्य नहीं मिलने पर उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी? ज्ञात कीजिए और लिखिए।
2. गवरइया की इच्छा पूर्ति का क्रम घूरे पर रुई के मिल जाने से प्रारंभ होता है। उसके बाद वह क्रमशः एक–एक कर कई कारीगरों वेफ पास जाती है और उसकी टोपी तैयार होती है। आप भी अपनी कोई इच्छा चुन लीजिए। उसकी पूर्ति के लिए योजना और कार्य–विवरण तैयार कीजिए।
3. गवरइया के स्वभाव से यह प्रमाणित होता है कि कार्य की सपफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। सपफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है, तर्क सहित लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. टोपी पहनकर गवरइया राजा को दिखाने क्यों पहुँची जबकि उसकी बहस गवरा से हुई और वह गवरा के मुँह से अपनी बड़ाई सुन चुकी थी। लेकिन राजा से उसकी कोई बहस हुई ही नहीं थी। फिर भी वह राजा को चुनौती देने पहुँची। कारण का अनुमान लगाइए।
2. यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने–अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया वेफ साथ उन कारीगरों का व्यवहार कैसा होता?
3. चारों कारीगर राजा के लिए काम कर रहे थे। एक रजाई बना रहा था। दूसरा अचकन के लिए सूत कात रहा था। तीसरा बागा बुन रहा था। चौथा राजा की सातवीं रानी की दसवीं संतान के लिए झब्बे सिल रहा था। उन चारों ने राजा का काम रोककर गवरइया का काम क्यों किया?

भाषा की बात

1. गाँव की बोली में कई शब्दों का उच्चारण अलग होता है। उनकी वर्तनी भी बदल जाती है। जैसे गवरइया गौरैया का ग्रामीण उच्चारण है। उच्चारण के अनुसार इस शब्द की वर्तनी लिखी गई है। पुँफदना, पुफलगेंदा का बदला हुआ रूप है। कहानी में अनेक शब्द हैं जो ग्रामीण उच्चारण में लिखे गए हैं, जैसे –मुलुक–मुल्क, खमा–क्षमा, मजूरी–मजदूरी, मल्लार–मल्हार इत्यादि। आप

   क्षेत्रीय या गा!व की बोली में उपयोग होनेवाले कुछ ऐसे शब्दों को खोजिए

और उनका मूल रूप लिखिए, जैसे –टेम–टाइम, टेसन / टिसन–स्टेशन।

2. मुहावरों के प्रयोग से भाषा आकर्षक बनती है। मुहावरे वाक्य के अंग होकर प्रयुक्त होते हैं। इनका अक्षरशः अर्थ नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। पाठ में अनेक मुहावरे आए हैं। टोपी को लेकर तीन मुहावरे हैं जैसे –कितनों को टोपी पहनानी पड़ती है। शेष मुहावरों को खोजिए और उनका अर्थ ज्ञात करने का प्रयास कीजिए।

शब्दार्थ

भिनसार	–	प्रातःकाल, सवेरा
खोंते	–	घोंसले
झुटपुटा	–	सबेरे या शाम का समय जब प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीश साफ़ दिखाई न दे, वह समय जब कुछ–कुछ अँधेरा और कुछ–कुछ उजाला हो
लटजीरा	–	चिचड़ा, एक पौध
सरापा	–	सिर से पाँव तक पहना जानेवाला वस्त्र
सकत	–	शक्ति, सामर्थ्य
लपफड़ा	–	उलझन, झंझट
पफकत	–	केवल
अपन	–	अपना
फिकर	–	चिंता, फिकर
मत	–	नहीं
मामूल	–	वह बात जो रोज की जाए, हमेशा की तरह
घूरा	–	वूफड़े–करकट का ढेर
चिहाकर	–	चौंककर, चकित होकर
जुगाड़	–	उपाय
मनुहार	–	मनाना
चाम	–	त्वचा, चमड़ा

फोकट	–	मूल्यरहित, मुल्त
उजरत	–	मजदूरी, मेहनत का बदला, पारिश्रमिक
मल्लार	–	मल्हार, संगीत का एक राग
मुलुक	–	मुल्क, देश
लगुए–भगुए	–	पीछे चलने वाले, मेल–जोल के व्यक्ति
मशगूल	–	व्यस्त
सेंत–मेंत	–	वह काम जिसके का काम लिए कुछ देना न पड़ा हो, बिना लाभ
ढरकी	–	कपड़ा बुनते हुए जुलाहे जिससे बाने का सूत फेंकते हैं
गफश	–	गल्स, घना बुना हुआ
दबीज	–	मोटा, मजबूत
बेगार	–	बिना मजदूरी का काम
मूजी	–	दुष्ट
फुँदने	–	सूत, उफन आदि का फूल या फूलगेंदा
हुलस	–	उल्लास, खुशी
इने–सारे	–	इतने सारे
टहलुआ	–	नौकर
पुफलेल	–	खुशबूदार तेल
पुँफदनेदार	–	पुफलगेंदेवाला
पफदगुपी	–	एक छोटी चिड़िया, गौरैया
पखने	–	पंख
खमा	–	क्षमा
नायाब	–	बहुमूल्य, बेशकीमती
हुनरमंद	–	वुफशल, गुणी कारीगर
मानिंद	–	जैसा, अनुरूप, सरीखा
नफासत	–	सज्जा, सजा–सँवरा

जुरती	–	जुटना, एकत्र होना, प्राप्त होना
पाखी	–	पक्षी, चिड़िया
लशकरी	–	पलटन, सेना
लवाजिमा	–	यात्रा आदि में साथ रहने वाला सामान
नगीना	–	सुंदर
अकबकाना	–	भौंचक्का होना, घबराना

18

सूरदास के पद

(1)

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिनी सी भुइँ लोटी।
काँचौ दूध पियावत पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।
सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

(2)

तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ।
दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़ि-ढँढ़ोरि आपही आयौ।
खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं, दूध-दही सब सखनि खवायौ।
ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ।
दिन प्रति हानि होति गोरस की, यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ।
सूर स्याम कौं हटकि न राखै तैं ही पूत अनोखौ जायौ।

प्रश्न-अभ्यास

पदों से

1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?
2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?
3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन-से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं?
4. 'तैं ही पूत अनोखौ जायौ'– पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-से भाव मुखरित हो रहे हैं?
5. मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा-सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?
6. दोनों पदों में से आपको कौन-सा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?

अनुमान और कल्पना

1. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?
2. ऐसा हुआ हो कभी कि माँ के मना करने पर भी घर में उपलब्ध किसी स्वादिष्ट वस्तु को आपने चुपके-चुपके थोड़ा-बहुत खा लिया हो और चोरी पकड़े जाने पर कोई बहाना भी बनाया हो। अपनी आपबीती की तुलना श्रीकृष्ण की बाल लीला से कीजिए।
3. किसी ऐसी घटना के विषय में लिखिए जब किसी ने आपकी शिकायत की हो और फिर आपके किसी अभिभावक (माता-पिता, बड़ा भाई-बहिन इत्यादि) ने आपसे उत्तर माँगा हो।

भाषा की बात

1. श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा-चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।
2. श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।
3. कुछ शब्द परस्पर मिलते-जुलते अर्थवाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम, जैसे—

पर्यायवाची— चंद्रमा—शशि, इंदु, राका
मधुकर—भ्रमर, भौंरा, मधुप
सूर्य—रवि, भानु, दिनकर

विपरीतार्थक— दिन—रात
श्वेत—श्याम
शीत—उष्ण

पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

शब्दार्थ

अजहूँ	—	आज भी	सूरज	—	सूरदास
बल	—	बलराम	हरि-हलधर	—	कृष्ण-बलराम
बेनी	—	चोटी	जोटी	—	जोड़ी
ह्वै	—	होगी	पैठि	—	घुसकर
काढ़त	—	बाल बनाना	सींके	—	छींका जिसमें दूध-दही आदि रखा जाता है
गुहत	—	गूँथना			
भुइँ	—	पृथ्वी, भूमि	गोरस	—	गाय के दूध से बने पदार्थ दही, मक्खन, घी आदि
लोटी	—	लोटने लगी			
पचि-पचि	—	बार-बार	ढोटा	—	लड़का

जम्मू–कश्मीर में हिंदी

भारत के उत्तर में स्थित जम्मू–कश्मीर मूलतः अहिंदीतर प्रदेश है। अहिंदीतर प्रदेश से हमारा अभिप्राय ऐसे क्षेत्र से है, जहाँ हिंदी मातृभाषा के रूप में न बोलकर अन्य भाषा के रूप में प्रयोग में लाई जाती है। जम्मू–कश्मीर राज्य के तीन मुख्य क्षेत्र हैं–जम्मू, कश्मीर तथा लदाख। डोगरी जम्मू क्षेत्र की प्रमुख भाषा है। कश्मीर घाटी में कश्मीरी तथा लदाख में लदाखी प्रमुख रूप से व्यवहार में लाई जाती है। इन भाषाओं के अतिरिक्त राज्य में कई बोलियां भी बोली जाती है।

जम्मू–कश्मीर में हिंदी बोलने वालों की संख्या पर्याप्त है। यहां शिक्षित जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग हिंदी के व्यावहारिक तथा साहित्यिक रूपों से परिचित है। प्रायः सभी लोग हिंदी समझ–बोल सकते हैं।

जम्मू–कश्मीर राज्य और हिंदी क्षेत्र के बीच प्राचीन काल से ही सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंध रहे है। कश्मीर अपने पर्यटन महत्व के अतिरिक्त विश्व–प्रसिद्ध संस्कृत भाषा का शिक्षा केंद्र रहा है। प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के अतिरिक्त बौद्धिक एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए भी लोगों का प्रवाह यहाँ आता रहा है। इस्लाम के आगमन से पूर्व बोली जाने वाली कश्मीरी में वैदिक तथा संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव दोनों प्रकार के शब्द पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। आजकल भी ये दोनों प्रकार के शब्द कश्मीरी भाषा में पाए जाते हैं। यहाँ यह कहना असंगत न होगा कि हिंदी में भी संस्कृत के ऐसे शब्दों की बहुत बड़ी संख्या पाई जाती है।

जम्मू–कश्मीर देश–विदेश के तीर्थ–यात्रियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। इनमें से मुख्य आकर्षण अमरनाथ जी की पवित्र गुफ़ा तथा वैष्णों देवी की यात्राएँ हैं। जो यात्री यहाँ आते हैं उनमें हिंदी भाषी क्षेत्रों के यात्री भी होते हैं। आदान–प्रदान की प्रक्रिया में यहां धीरे–धीरे हिंदी जड़े पकड़ती गई। कश्मीर में ज़ैन–उल–आबदीन (बडशाह) के समय में हिंदी भाषा का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा होगा। उनका शासन–काल सन् 1420–1470 ई. था। बडशाह के पूर्वज सिकंदर तथा अलीशाह के शासनकाल में जो कश्मीरी पंडित कश्मीर छोड़कर पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में बस गए थे, उनमें से बहुत से लोग बडशाह के समय में पुनः कश्मीर लौटे। तीस–बत्तीस वर्षों के हिंदी प्रदेश के प्रवास में वे ब्रजभाषा और हिंदी की अन्य बोलियों से अवश्य प्रभावित हुए होंगे।

जम्मू–कश्मीर में हिंदी भाषा का प्रचार जहां एक ओर साधुओं, पर्यटकों आदि के द्वारा हुआ, वहीं दूसरी ओर भक्त–कवियों जैसे सूर, तुलसी, मीरा, कबीर आदि के दोहों

तथा पदों ने इसमें योगदान दिया। इन कवियों के कई दोहे व पद सुगम तथा गेय होने के कारण धीरे–धीरे लोकप्रिय हुए तथा हिंदी का संस्कार जड़ पकड़ता गया। आजकल भी ये दोहे तथा पद साधु–संतों तथा सज्जनों की ज़बानी सुने–सुनाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त व्यावसायिक रुचि में पंजाब, उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों के हज़ारों लोगों को जम्मू–कश्मीर में बसने के लिए प्रेरित किया। इसी प्रकार राज्य के हज़ारों लोग रोज़ी–रोटी के लिए शीतकाल में राज्य से बाहर काम की खोज में जाते रहे हैं। इन लोगों की वहाँ के लोगों के साथ बोलचाल तथा सहयोग की भाषा हिंदी रही है। इससे स्पष्ट होता है कि जम्मू–कश्मीर के लोगों ने शताब्दियों पूर्व ही हिंदी के संस्कार को समझा और पहचाना था।

संसार की भाषाओं को हम कई परिवारों में बाँटते हैं, जैसे भारोपीय परिवार, कन्नड परिवार, चीनी परिवार आदि। जम्मू–कश्मीर में बोली जाने वाली भाषाओं तथा बोलियों का संबंध मुख्य रूप से भारोपीय परिवार की एक शाखा से है। यह शाखा ''भारतीय आर्य शाखा'' नाम से जानी जाती है।

(लदाख में बोली जाने वाली मुख्य भाषा लदाखी का संबंध भाषाओं के एक अन्य परिवार से है। इसे चीनी परिवार कहते हैं। इसकी एक शाखा तिब्बती–बर्मी है। लदाखी इसी शाखा के अंतर्गत आती है।)

परिवारगत समीपता के कारण हिंदी तथा जम्मू–कश्मीर में बोली जाने वाली भाषाओं में कहीं–कहीं एक–जैसी ध्वनियां तथा शब्द देखने को मिलते हैं। कहने का भाव यह है कि जम्मू–कश्मीर के लिए हिंदी कोई पराई भाषा नहीं है।

हिंदी जम्मू–कश्मीर राज्य में कई शताब्दियों से है, यद्यपि सही तिथि बताना कठिन है। मध्यकालीन भक्ति–आंदोलन ने संपूर्ण भारत को प्रभावित किया था। उसका प्रभाव जम्मू–कश्मीर पर पड़ना स्वाभाविक था। इस प्रभाव के फलस्वरूप जम्मू–कश्मीर के कई कवियों ने भक्तिपरक कविताएँ मातृभाषा के अतिरिक्त हिंदी में भी रचीं इस प्रसंग में कश्मीर की संत कवयित्री स्पभवानी का नाम लिया जा सकता है। कश्मीर के एक और भक्तकवि परमानंद ने अपनी कई कश्मीरी रचनाओं में हिन्दी के कुछ अंश जोड़ दिए। उनकी भाषा में ब्रज, खड़ीबोली, पंजाबी तथा कश्मीरी का विचित्र मिश्रण है। यह 'भाखा' नाम से जानी जाती है। अठारहवीं शती में लक्ष्मण जू 'बुलबुल' ने कुछ कविताएँ लिखीं, जिनमें हिंदी तथा कश्मीरी दोनों भाषाओं का योग है। इधर जम्मू के (दत्तू) नामक कवि ने ब्रजभाषा में कविता की। इनका नाम देवीदत्त भड़वाल था, किंतु ये दत्त (दत्तू) नाम से ही चर्चित हुए। इनका समय अठारहवीं शताब्दी था। ये जम्मू के प्रथम हिंदी कवि माने जाते हैं। 'वीरविलास' तथा 'ब्रजराज पंचाशिका' इनके द्वारा रचित प्रबंध ग्रंथ हैं। वीरविलास नामक ग्रंथ का आधार संस्कृत भाषा में लिखित 'महाभारत' काव्य है। 'महाभारत' में एक पर्व विशेष का वर्णन हुआ है, जिसे उत्तर भारत के लोग बड़ी श्रद्धा से गाते हैं। उनके

काव्य की कोई विशेष परंपरा देखने को नहीं मिलती है। विद्वानों का विचार है कि उनके एक वंशज कृष्णलाल नामक किसी व्यक्ति ने 'महाभारत' के कई पदों का अनुवाद हिंदी में किया। कश्मीर के भक्ति–काव्य की तरह जम्मू में भक्ति–काव्य की कोई ठोस परंपरा दिखाई नहीं देती है।

उन्नीसवीं शताब्दी में कश्मीर के लालजी जाडू ने हिंदी से परिपूर्ण महाकाव्य लिखा, जो पर्याप्त साहित्यिक योग्यक योग्यता का प्रमाण देता है। इसमें कई प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है, जैसे दोहा, चौपाई, सोरठा आदि। कालांतर में कृष्ण जू राज़दान ठाकुर जू मनवटी, हलधर जू ककरू, पंडित नीलकंठ शर्मा जैसे कवियों ने कश्मीरी कविताओं के साथ–साथ बहुत–सी हिंदी कविताएँ भी रचीं, जो भक्ति, धर्म और नीति की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। ये कवि आर्थिक लाभ अथवा किसी अन्य लोभ के कारण हिंदी में नहीं लिखते थे। अपितु भक्ति के सहज उद्ग्रारों को वाणी देने के लिए वे हिंदी में रचना करते थे।

महाराजा रणवीर सिंह (सन् 1857–1865 ई.) के समय में हिंदी को सरकारी संरक्षण मिला। 'रणवीर समाचार' पाक्षिक हिंदी समाचार–पत्र निकालने को श्रेय उन्हीं को है। रणवीर सिंह के दरबारी लेखक नीलकंठ ने 'रणवीर प्रकाश' नामक हिंदी पद्य में ग्रंथ लिखा। यह सात सौ पृष्ठों पर आधारित था। इसी काल में 'रणवीर रत्नमाला' एक और ग्रंथ हिंदी में लिखा गया, जिसमें हीरे–जवाहरातों, मोतियों आदि के विषय में वर्णन है। रणवीर सिंह के निधन पर हिंदी में शोकगीत (मरसिया) रचा गया। इसी काल में जम्मू में संस्कृत पाठशाला की स्थापना भी की गई। जहाँ संस्कृत के साथ–साथ हिंदी पढ़ाने की भी व्यवस्था की गई।

महाराजा रणवीर सिंह के उत्तराधिकारी महाराजा प्रताप सिंह ने उर्दू को सरकारी भाषा और फ़ारसी को न्यायालय की भाषा बना दिया। फिर भी हिंदी शिक्षासंस्थानों के पाठ्यक्रम की सूची में एक विषय के रूप में स्वीकार की जाती रही। इससे हिंदी ने राज्य में जड़े जमानी आरंभ कर दीं।

बीसवीं शताब्दी के तीसरे–चौथे दशक तक कश्मीर में भक्तिपूर्ण हिंदी कविता का यह प्रवाह चलता रहा। प्रसिद्ध कश्मीरी रहस्यवादी संत कवि पंडित जिंदा कौल 'मास्टर जी' ने सन् 1941 में 'पत्रपुष्प' नामक पुस्तक में पाँच हिंदी कविताएँ प्रकाशित कराईं। ये रचनाएँ मानव–मूल्यों में कवि के गहरे विश्वास को प्रकट करती हैं। इधर जम्मू में हिंदी लेखन का विधिवत आरंभ बीसवीं शती के दूसरे–तीसरे दशक में हुआ। इस काल में हरदत्त शर्मा नामक एक कवि ने 'भगवद्पदी' ग्रंथ लिखा जिसमें भक्तिरस के गीत हैं। कालांतर में 'डोगरी भजनमाला' नामक एक और पुस्तक प्रकाश में आई, जिसमें डोगरी तथा पंजाबी के अतिरिक्त हिंदी के भजन तथा गीत सम्मिलित किए गए।

महाराजा हरि सिंह के समय में तत्कालीन शिक्षा निदेशक श्री के.जी. सैयदैन ने सरल उर्दू को फ़ारसी और देवनागरी लिपियों में शिक्षा देने के माध्यम के रूप में घोषित

कर दिया। इससे हिंदी को जम्मू–कश्मीर में फैलने में सहायता मिली।

जम्मू–कश्मीर में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिएक ई स्वतंत्र संगठनों ने भी काम किया है। स्वतंत्रता से पहले कश्मीर में आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा, महावीर दल, श्रीराम त्रिक आश्रम, श्री अलकेश्वरी सभा ट्रस्ट, हिंदी परिषद, हिंदी संस्कृत साहित्य मंडल, हिंदी साहित्य सम्मेलन जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संगठनों ने हिंदी की विभिन्न परीक्षाओं के लिए छात्रों व छात्राओं को तैयार कराया, हिंदी माध्यम के कई शिक्षा संस्थान खोले ओर हिंदी की कई पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। इसी समय मास्टर दयाराम नामक एक हिंदी प्रेमी ने जम्मू में एक विद्यापीठ खोला जहां हिंदी के छात्रों को विभिन्न परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाता था। पीठ ने जम्मू में हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी प्रकार 'हिंदी साहित्य मण्डल' नामक एक संस्थान ने जम्मू में हिंदी लेखन तथा इसके प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

''साप्ताहिक महावीर'' और ''चंद्रोदय'' जैसे हिंदी की प्रारंभिक पत्रिकाओं ने कश्मीर में हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया तथा इनके द्वारा कई साहित्यकारों को उभरने का समय मिला। कालांतर में 'कश्यप' नामक पत्रिका ने कश्मीर में हिंदी के विकास में बड़ा योगदान दिया तथा हिंदी के कई साहित्यकारों को प्रकाश में लाया। इसी प्रकार भारती, उद्भावना तथा घोषवती जैसी पत्रिकाओं ने जम्मू में हिंदी के विकास तथा विस्तार में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई, आजकल युवा हिंदी लेखक संघ (युहिले) हिंदी के विकास में अपना विशेष योगदान दे रहा है।

स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद राज्य में प्रचार–प्रसार तथा विकास द्रुतगति से होने लगा। भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी हमारी राजकीय भाषा है तथा इसे सरकारी संरक्षण प्राप्त है। अपनी लोकप्रियता के कारण यह हमारी राष्ट्रभाषा बन गई है। यह सही है कि जम्मू–कश्मीर की सरकारी भाषा उर्दू है फिर भी स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। राज्य के विद्यालयों में हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है। महाविद्यालयों में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। कई महाविद्यालयों में पत्रिकाएँ निकाली जाती हैं। इसके हिंदी अनुभागों में छात्रों को अपनी रचनाएं प्रकाशित कराने का अवसर मिलता है। इन पत्रिकाओं में 'प्रताप' तथा 'तवी' जैसे पत्रिकाएँ उल्लेखनीय है। जम्मू–कश्मीर के विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों में प्रति वर्ष सैंकड़ों छात्र प्रवेश लेते हैं। हिंदी में एम. ए. पढ़ाने के अतिरिक्त यहां एम. फिल. तथा पी. एच. डी. करने की भी व्यवस्था है। इन विश्वविद्यालयों में अभी तक सैंकड़ों शोधप्रबंध लिखे जा चुके हैं। जम्मू–कश्मीर में स्थापित केंद्रीय कार्यालयों ने भी यहां हिंदी को लोकप्रिय बनाने में सहायता दी है। इन कार्यालयों में आंशिक रूप से सरकारी काम–काज हिंदी में होता है। राज्य में जो सैनिक भाई देश के विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं, वे आमतौर पर हिंदी में बातचीत करते हैं। इससे राज्य में हिंदी का वातावरण बन रहा है। अब लदाख में भी हिंदी का

प्रचार–प्रसार बढ़ रहा है। कई एक लेखक हिंदी साहित्य सृजन में अपना योगदान दे रहे हैं। थुपसन च्वांग की हिंदी कहानियां इस बात का प्रमाण है। देश के अन्य क्षेत्रों की तरह यहाँ भी छात्र–छात्राएँ हिंदी में पर्याप्त रुचि ले रहे हैं।

पिछले कुछ वर्षों से जम्मू–कश्मीर में साहितयकारों का एक बड़ा वर्ग उभरकर सामने आया, जिसने हिंदी में अपनी रचनाएँ लिखीं। इस लेखन के फलस्वरूप राज्य में हिंदी कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, नाटक जैसी विधाएँ उभर कर सामने आई हैं। ये साहित्यकार आधुनिक संवेदना से प्रभावित हैं तथा इनका लेखन–कार्य जारी है।

यहाँ यह कहना असंगत न होगा कि सिनेमा, दूरदर्शन, रेड़ियों आदि के द्वारा राज्य में हिंदी का प्रचार–प्रसार तेज़ गति से हुआ। हिंदी चलचित्र लोग चाव से देखते हैं। 'शीराज़ा', 'योजना', वितस्ता', 'नीलजा', 'हिमानी' जैसी पत्रिकाएँ यहाँ हिंदी लेखन को प्रकाशित कराने में आजकल सक्रिय हैं। 'कश्मीर टाइम्स', 'जम्मू समाचार', 'इवनिंग न्यूज़' आदि हिंदी में समाचार पत्र छपते हैं।

कुल मिलाकर जम्मू–कश्मीर में हिंदी का भविष्य उज्जवल है।

–विभागीय

प्रश्न–अभ्यास

बोध और विचार

1. जम्मू–कश्मीर में बोली जाने वाली भाषाओं के नाम लिखें।
2. प्राचीन काल में जम्मू–कश्मीर में हिंदी का प्रचार किनके द्वारा हुआ?
3. हिंदी भाषा का संबंध संसार के कौन–से भाषा–परिवार से है?
4. कश्मीर के भक्त–कवि हिंदी में क्यों कविता करना चाहते थे?
5. जम्मू के प्रथम हिंदी कवि का पूरा नाम क्या था?वे किस नाम से प्रसिद्ध हुए?
6. 'वीरविलास' नामक ग्रंथ के कवि का नाम लिखें।
7. हिंदी को जम्मू–कश्मीर में कब सरकारी संरक्षण मिला?
8. जम्मू–कश्मीर की सरकारी भाषा का नाम लिखें।
9. हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा क्यों बन गई?
10. आजकल जम्मू–कश्मीर में हिंदी का प्रचार तथा प्रसार किन माध्यमों से हो रहा है।

भाषा–अध्ययन

'सामाजिक' शब्द का अर्थ है समाज से संबंधित। यह विशेषण है। प्रस्तुत पाठ में से कई और शब्द प्रयुक्त हुए हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखें तथा उनके वाक्य बनाएँ।

योग्यता विस्तार

जम्मू व कश्मीर में बोली जाने वाली विभिन्न उपभाषाओं (बोलियों) के नाम ज्ञात कर उनकी सूची बनाएँ।

20

सुदामा चरित

सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहिं सामा।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसों बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा।।

ऐसे बेहाल बिवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए।।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।।

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेतु।।

आगे चना गुरुमातु दए ते, लए तुम चाबि हमें नहिं दीने।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सों, "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।।
पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने।
पाछिलि बानि अजौ न तजो तुम, तैसई भाभी के तंदुल कीन्हे।।"

वह पुलकनि, वह उठि मिलनि, वह आदर की बात।
वह पठवनि गोपाल की, कछू न जानी जात।।
घर-घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज।
कहा भयो जो अब भयो, हरि को राज-समाज।
हौं आवत नाहीं हुतौ, वाही पठयो ठेलि।।
अब कहिहौं समुझाय कै, बहु धन धरौ सकेलि।।

वैसोई राज-समाज बने, गज, बाजि घने मन संभ्रम छायो।
कैधों पर्‌यो कहुँ मारग भूलि, कि फैरि कै मैं अब द्वारका आयो।।
भौन बिलोकिबे को मन लोचत, सोचत ही सब गाँव मझायो।
पूँछत पाँडे फिरे सब सों, पर झोपरी को कहुँ खोज न पायो।

कै वह टूटी-सी छानी हती, कहँ कंचन के अब धाम सुहावत।
कै पग में पनही न हती, कहँ लै गजराजहु ठाढ़े महावत।।
भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत।।
कै जुरतो नहिं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तें दाख न भावत।।

-नरोत्तमदास

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।
2. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

(क) उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?

(ख) इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

(ग) इस उपालंभ (शिकायत) के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

4. द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।
5. अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
6. निर्धनता के बाद मिलनेवाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

कविता से आगे

1. द्रुपद और द्रोणाचार्य भी सहपाठी थे, इनकी मित्रता और शत्रुता की कथा महाभारत से खोजकर सुदामा के कथानक से तुलना कीजिए।
2. उच्च पद पर पहुँचकर या अधिक समृद्ध होकर व्यक्ति अपने निर्धन माता-पिता-भाई-बंधुओं से नजर फेरने लग जाता है, ऐसे लोगों के लिए सुदामा चरित कैसी चुनौती खड़ी करता है? लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. अनुमान कीजिए यदि आपका कोई अभिन्न मित्र आपसे बहुत वर्षों बाद मिलने आए तो आप को कैसा अनुभव होगा?
2. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
   विपति कसौटी जे कसे तेई साँचे मीत।।
   इस दोहे में रहीम ने सच्चे मित्र की पहचान बताई है। इस दोहे से सुदामा चरित की समानता किस प्रकार दिखती है? लिखिए।

भाषा की बात

- "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सो पग धोए"
  ऊपर लिखी गई पंक्ति को ध्यान से पढ़िए। इसमें बात को बहुत अधिक

बढ़ा-चढ़ाकर चित्रित किया गया है। जब किसी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है तो वहाँ पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है। आप भी कविता में से एक अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण छाँटिए।

कुछ करने को

1. इस कविता को एकांकी में बदलिए और उसका अभिनय कीजिए।
2. कविता के उचित सस्वर वाचन का अभ्यास कीजिए।
3. 'मित्रता' संबंधी दोहों का संकलन कीजिए।

शब्दार्थ

पगा – पगड़ी
झँगा – ढीला कुरता
आहि – है
लटी – लटकना
दुपटी – अंगोछा, गमछा
उपानह – जूता
द्विज – ब्राह्मण
चकिसों – चकित, विस्मित
वसुधा – पृथ्वी
बिवाइन – पाँव की एड़ी का फटना
अभिरामा – सुंदर
जोए – ढूँढ़ना
परात – थाली की तरह का पीतल आदि धातु से बना एक बड़ा और गहरा बरतन
पाछिली – पिछला
पुलकनि – खुशी, उमंग
पठवनि – भेजना, विदाई
बिलोकिबे – देखना
मझायो – बीच में
सुहावत – सुंदर/भला लगना
पनही – जूता
महावत – हाथीवान
जुरत – जुटना, प्राप्त होना

शब्दकोश

इस शब्दकोश से आपको इस पुस्तक के पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ दिया गया है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक पर्याय भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दों में से किस भेद का है, यह सूचना आपको इस संकेताक्षर से मिलेगी। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं–

अ.	–	अव्यय	अ.क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	क्रि.वि.	–	क्रिया विशेषण
पु.	–	पुंलिंग	फा.	–	फारसी
मु.	–	मुहावरा	वि.	–	विशेषण
सं.	–	संज्ञा	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया
सर्व.	–	सर्वनाम	स्त्री.	–	स्त्रीलिंग

इस शब्दकोश में अपेक्षित शब्द का अर्थ ढूँढ़ना शुरू करने से पहले यह उचित होगा कि शब्दकोश देखने की सही विधि आप जान लें। इसके लिए नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा–

1. जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके प्रारंभ का वर्ण देखा जाता है। उसके आधार पर ही शब्द ढूँढ़ा जाता है।
2. शब्दकोश में शब्दों को इस वर्ण-अनुक्रम में दिया जाता है–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् क से ह तक के सही वर्ण क्रम के अनुसार।

3. क्ष, त्र, ज्ञ को ह के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए। क्ष, क् और ष का संयुक्त रूप है। अतः क से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर क्ष से प्रारंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।
4. त्र, त् और र का संयुक्त रूप है। अतः त्र से शुरू होने वाले शब्द त से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़े जाने चाहिए। त्य से संबंधित शब्द जब समाप्त हो जाते हैं तब त्र से आरंभ होनेवाले शब्द देखे जा सकते हैं।
5. ज्ञ, ज् और ञ का संयुक्त रूप है। अतः ज्ञ से शुरू होने वाले शब्दों को ज से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। ज से संयुक्त होकर बनने वाला पहला वर्ण ज्ञ ही है। अतः जौहरी के बाद ही ज्ञ से बनने वाले शब्द देखे जा सकते हैं। ज्ञ के बाद ज्य से बनने वाले शब्द आते हैं।

शब्दार्थ

अंत्येष्टि	–	स्त्री.(सं.) मृतक कर्म, दाह कर्म
अकबकाना	–	वि. भौंचक्का होना, घबराना
अजीबो-गरीब	–	वि. अनोखा
अपन	–	सर्व. अपना
असीम	–	वि. जिसकी कोई सीमा न हो, अपार
अहमियत	–	वि.(अ.) महत्व
आँकना	–	क्रि. अनुमान लगाना
आपा	–	पु.(सं.) अहं
आलम	–	पु.(अ.) दुनिया, माहौल
आलीशान	–	(वि.) शानदार
आवाजाही	–	(स्त्री.) आना-जाना
आहि	–	अ.क्रि. है
इत्ते-सारे	–	वि. इतने सारे
ईज़ाद	–	क्रि. खोज, अन्वेषण

उजरत	–	वि.(अ.) मजदूरी, मेहनत का बदला, पारिश्रमिक
उजागर	–	वि. प्रकट करना
उपानह	–	पु. जूता
एसएमएस	–	अ. लघु संदेश सेवा
कर	–	पु.(सं.) हाथ
कसर	–	स्त्री.(अ.) घाटा पूरा करना, कमी
काढ़त	–	अ.क्रि. बाल बनाना
किरदार	–	पु. अभिनेता की भूमिका, चरित्र
कुमक	–	स्त्री.(फा.) फौजी टुकड़ी
कोर्ट मार्शल	–	पु. फौजी अदालत में सजा सुनाने की तरह
खपत	–	स्त्री. माल की बिक्री
खमा	–	स्त्री. क्षमा
खयाल	–	पु.(फा.) विचार
खिताब	–	पु.(अ.) उपाधि, सम्मान
खुराफाती	–	वि. शरारती
खोंते	–	पु. घोंसले
गंतव्य	–	वि.(सं.) स्थान जहाँ किसी को जाना हो
गफश	–	वि. गफ्स, घना बुना हुआ
गात	–	पु. शरीर
गारी	–	स्त्री. गाली, अपशब्द
गुडविल	–	अ. सुनाम, अच्छी छवि
गुहत	–	स.क्रि. गूँथना
गोता	–	पु.(अ.) पानी में डूबना
गोरस	–	पु. दूध, दही मक्खन, घी आदि
घमासान	–	पु. घोर, भयानक
घिसीपिटी	–	वि. जो बहुत दिनों से चला आ रहा हो, पुरानी
घूरा	–	पु. कूड़े-करकट का ढेर

चकिसों – वि. चकित, विस्मित

चाम – पु. त्वचा, चमड़ा

चाव – पु. चाह, तीव्र इच्छा

चारपाई – स्त्री. खाट, छोटा पलंग

चिहाकर – स.क्रि. चौंककर, चकित होकर

जायजा – पु.(अ.) जाँच-परख

जुगाड़ – पु. उपाय

जुरत (जुरअत) – स्त्री. बहादुरी, साहस

जुरती – अ.क्रि. जुटना, एकत्र होना, प्राप्त होना

जोए – पु. ढूँढ़ना, देखना, खोजना

जोटी – स्त्री. जोड़ी

झँगा – पु. ढीला कुरता

झुटपुटा – पु. सबेरे या शाम का समय जब प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीज़ साफ़ दिखाई न दे, वह समय जब कुछ-कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो

टहलुआ – पु. नौकर

डलिया – स्त्री. बाँस का बना एक छोटा पात्र

डामलफाँसी – पु. आजीवन कारावास का दंड, देश निकाला

डिस्क फॉर्म – रिकॉर्डिंग का एक रूप

ढरकी – स्त्री. कपड़ा बुनते हुए जुलाहे जिससे बाने का सूत फेंकते हैं, भरनी

ढँढोरि – स.क्रि. ढूँढ़ना

ढाँणी – (नारी जाति संज्ञा) अस्थाई निवास, कच्चे मकानों की बस्ती जो गाँव से कुछ दूर बनी हो

ढाँढ़स – पु. दिलासा, धीरज

ढोटा – पु. लड़का

तंद्रालस	–	स्त्री.(सं.), वि.(सं.) नींद से अलसाया हुआ
तनख्वाह	–	स्त्री.(फा.) वेतन, पगार
तरकारी	–	स्त्री. सब्जी
तह	–	स्त्री.(फा.) गहराई
ताउम्र	–	प्र.(सं.)स्त्री.(अ.) उम्र भर
दड़बे	–	पु. मुर्गियों के रहने की जगह
दबीज	–	वि. (फा.)मोटा, मजबूत
दबैल	–	वि. दब्बू
दस्तावेज़	–	स्त्री.(फा.) प्रमाण संबंधी कागजात, प्रमाण पत्र
दहुँ	–	पु. दस
दालान	–	पु. बरामदा
दुपटी	–	स्त्री. अंगोछा, गमछा
दुहेली	–	स्त्री. दुख, दुख में पड़ा हुआ, कष्ट साध्य
दिसि	–	स्त्री. दिशा
द्विज	–	पु.(सं.) ब्राह्मण
धर्मभीरु	–	पु.(वि.) जिसे धर्म छूटने का भय हो, अधर्म से डरने वाला
धींगा-मुश्ती	–	वि.(स्त्री.) धक्का-मुक्की, लड़ना-भिड़ना, शरारत
धुआँधार	–	पु.(वि.) ताबड़तोड़
नगीना	–	सं.(पु.) सुंदर
नफासत	–	स्त्री. सज्जा, सजा-सँवरा
न्योता	–	पु. निमंत्रण
नाजुक	–	वि.(फा.) कोमल
नायाब	–	वि. बहुमूल्य, बेशकीमती
निद्रित	–	वि.(सं.) सोया हुआ
निमित्त	–	पु.(सं.) कारण
पखने	–	पु. पंख

पगड़ी	–	स्त्री. सिर पर लपेटी जाने वाली कपड़े की लंबी पट्टी
पगा	–	पु. पगड़ी
पचि-पचि	–	पु. बार-बार
पटकथा	–	पु. फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी
पठवनि	–	स.क्रि. भेजना, विदाई
पनही	–	स्त्री. जूता
परात	–	स्त्री. थाली की शक्ल का पीतल आदि का एक बड़ा और गहरा बरतन
पर्दाफ़ाश	–	पु. भेद खोलना, दोष प्रकट करना
पाँख	–	पु. पंख, पर
पाखी	–	पु. पक्षी, चिड़िया
पाछिली	–	वि. पिछला
पात	–	पु. पत्ता
पार्श्वगायक	–	वि.(सं.), पु.(सं.) पर्दे के पीछे से गाने वाला
पैतृक	–	वि.(सं.) पूर्वजों का, पिता से प्राप्त
प्रत्यूष	–	पु.(सं.) प्रातःकाल, भोर
प्रयाण	–	पु.(सं.) प्रस्थान, मरना
प्रशस्ति पत्र	–	स्त्री.(सं.), पु. प्रशंसा पत्र
फकत	–	वि.(अ.) केवल
फदगुद्दी	–	स्त्री. एक छोटी चिड़िया, गौरैया
फबना	–	अ.क्रि. सजना, शोभा देना
फब्ती	–	स्त्री. चोट करने वाली या चुभती बात
फरमान	–	पु.(फा.) राजाज्ञा
फिकर	–	स्त्री. चिंता, फिक्र
फुँदने	–	पु. सूत, ऊन आदि का फूल या गुच्छा
फुँदनेदार	–	पु. गुच्छेदार

फुलेल	–	पु. खुशबूदार तेल
फैंटेसी	–	वि. काल्पनिक
फोकट	–	वि. मूल्यरहित, मुफ्त
बटालियन	–	स्त्री.(सं.) पलटन
बल	–	पु.(सं.) बलराम
बाँचना	–	स.क्रि. पढ़ना, सस्वर पढ़ना
बियाबान	–	पु. जंगल, उजाड़खंड
बिलोकिबे	–	स.क्रि. देखना, अवलोकन करना
बिवाइन	–	स्त्री. पाँव की चमड़ी का फटना
बेगार	–	स्त्री.(फा.) बिना मजदूरी का काम
बेनी	–	स्त्री.(सं.) चोटी
बैरी	–	पु. दुश्मन
भगोने-डोंगे	–	पु. भोजन पकाने के बर्तन
भिनसार	–	पु. प्रातःकाल, सवेरा
भुई	–	स्त्री.(सं.) पृथ्वी, भूमि
मचिया	–	स्त्री. सुतली
मत	–	पु. नहीं
मनुहार	–	पु. मनाना
मरहम-पट्टी	–	पु.(अ.)स्त्री. जख्म का इलाज, घाव पर दवा लगाकर पट्टी बाँधना
मल्लार	–	पु.(अ.) मल्हार, संगीत का एक राग
मशगूल	–	वि.(अ.) व्यस्त
महावत	–	पु. हाथीवान
मातम	–	पु.(अ.) शोक मनाना
मानिंद	–	वि.(फा.) जैसा, अनुरूप, सरीखा
मामूल	–	वि.(अ.) वह बात जो रोज की जाए, हमेशा की तरह

मुँगरी	–	सं. गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोकने-पीटने के काम आती है
मुँडेर	–	पु.(सं.) छत के आस-पास बनाई जाने वाली दीवार
मुखातिब	–	वि.(अ.) देखकर बात करना
मुलुक	–	पु. मुल्क, देश
मुस्तैद	–	वि. तत्पर, तैयार रहना
मूजी	–	वि.(सं.) दुष्ट
म्यान	–	पु.(फा.) तलवार रखने का कोष
मोरी	–	स्त्री. नाली, गंदे पानी की नाली
यकीन	–	पु.(अ.) विश्वास
लगुए-भगुए	–	वि. पीछे चलने वाले, मेल-जोल के व्यक्ति
लटजीरा	–	पु. चिचड़ा, एक पौधा
लटी	–	स्त्री. लटकी हुई, लटकना
लथपथ	–	वि. सना हुआ, तर
लफड़ा	–	पु. उलझन, झंझट
लवाजिमा	–	पु.(अ.) यात्रा आदि में साथ रहने वाला सामान
लशकरी	–	पु.(फा.) पलटन, सेना
लस्टम-पश्टम	–	अ. अंट-शंट, अव्यवस्थित रूप
लोटी	–	क्रि. लोटने लगेगी
वर्णनातीत	–	वि. जिसका वर्णन न किया जा सके
वसुधा	–	स्त्री. पृथ्वी
वाकई	–	क्रि.वि. बिलकुल, सचमुच
विनिमय	–	पु.(सं.) अदल-बदल, वस्तुओं की अदल-बदल
वियोग	–	पु.(सं.) अभाव
शिखर	-	पु. पहाड़ की चोटी
संवाद	–	पु.(सं.) फिल्म में की जाने वाली बातचीत
सकत	–	स्त्री. शक्ति, सामर्थ्य

सरापा	–	अ.(फा.) सिर से पाँव तक पहना जाने वाला वस्त्र
सलाख	–	स्त्री. सलाई, धातु की छड़
सवाक् फिल्म	–	पु.(सं.) मूक फिल्म के बाद बनी बोलती फिल्म
साँसत	–	कठिनाई में पड़ना, बहुत बड़ा कष्ट
सांगोपांग	–	वि.(सं.) पूरी तरह, ऊपर से नीचे तक
सिटपिटाना	–	अ.क्रि. भय या घबड़ाहट से सहम जाना
सिलसिला	–	वि. संबंध, कड़ी
सिवा	–	अ.(अ.) सिवाय, अलावा, अतिरिक्त
सींके	–	पु. छींका जिसमें दूध-दही आदि रखा जाता है
सुमिरन	–	क्रि. ईश्वर के नाम का जप (भक्ति का एक प्रकार), स्मरण
सुहावत	–	वि. सुंदर/भला लगना
सूरज	–	पु. सूरदास
सेंत-मेंत का काम	–	स्त्री.(अ.) वह काम जिसके लिए कुछ देना न पड़ा हो, बिना लाभ का काम
सौरभ	–	पु. सुगंध, सुबास
स्वच्छंद	–	पु. अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला
हटकि	–	स्त्री. मनाही
हरकारा	–	पु. दूत, डाकिया, संदेश पहुँचाने वाला
हरि-हलधर	–	पु.(सं.) कृष्ण-बलराम
हस्ती	–	वि.(सं.) अस्तित्व
हवाला	–	पु.(सं.) उल्लेख करना, उद्धरण
हुलस	–	अ.क्रि. उल्लास
हुनरमंद	–	पु.(फा.) वि.कुशल, गुणी कारीगर
हैसियत	–	स्त्री.(सं.) दरजा
हौले से	–	अ. धीरे से

मूल्यः ₹ः

जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड आफ स्कूल ऐजूकेशन